मैक्सिम गोर्की

यह दुनिया !

यह दुनिया !

[मैक्सिम गोर्की की आत्मकथा के दूसरे भाग
(In The World) का हिन्दी अनुवाद]

अनुवादक

श्री ओंकार शरद

मूल्य २॥)

प्रकाशक—
जन साहित्य
३७, शिवचरणलाल रोड, प्रयाग।

मुद्रक—
रामशरण अग्रवाल
प्रगति प्रेस, प्रयाग।

यह दुनिया !

यह रूसी गोर्की की आत्मकथा का दूसरा भाग ! पहला भाग "मेरा बचपन" के नाम से छपा और उसे जिस प्रकार पाठकों का प्यार मिला उसी के फलस्वरूप ही मुझे इस दूसरे भाग को प्रस्तुत करने की हिम्मत हुई !

इस पुस्तक से हिन्दी के पाठकों को उन तत्वों का परिचय मिलेगा जिन तत्वों ने एक व्यक्ति को विश्व का महान लेखक बनाकर युग-युगों के लिये अमर कर दिया। गोर्की के पाठकों को यह पुस्तक अवश्य ही भायेगी तथा इसे भी "मेरा बचपन" की तरह अपना कर "जीवन की पाठशालाएँ" (तीसरा भाग) को प्रस्तुत करने में मेरा उत्साह बढ़ायेंगे। यही आशा है।

—शरद

एक

दुनिया में निकलकर मैं सर्वप्रथम बड़ी सड़क पर एक जूते की दूकान में नौकर हो गया। मेरा मालिक नाटे कद का था। भूरे, रूखे चेहरेवाला, दांतों का रंग कुछ हरा और सदा गीली रहने वाली आंखें। मैंने समझा कि वह अंधा है। सो परीक्षा के लिए मैंने मुँह चिढ़ाया जिसपर उसने तनिक प्यार मिश्रित क्रोध से डांटा। वह मुझे बड़ी देर तक उन्हीं आंखों से देखता रहा जिन्हें मैं अंधी समझता था। उसने बाद में कहा,

'इस तरह मुँह न बनाया कर! तू जानता है कि तू अव्वल दर्जे की दूकान पर है और तुझे दरवाजे पर मूर्ति की तरह ही खड़ा रहना चाहिए।'

सच तो यह है कि मैं मूर्ति के माने ही नहीं समझता था।

'इसके पहले तू क्या करता था?' मालिक ने पूछा, उसकी नजर मेरे हाथों पर जमी थी। मेरे हाथों पर कीड़ों के काटने के बहुत से दाग थे। जब मैंने बता दिया तो उसने अपना गोल सिर जोरों से हिलाया और तनिक भयभीत स्वर में कहा, 'कूड़े बटोरता था!' अरे यह तो भीख मांगने व चोरी करने से भी बुरा काम है।'

तनिक शान के स्वर में मैंने बताया कि मैंने चोरी भी की है।

इस बात पर सहम कर उसने टेबुल के किनारों को पकड़ लिया और यों देखा जैसे कोई बिल्ली ताक रही हो फिर बहुत कठिनाई से सांस लेकर पूछा, 'क्या, चोरी की है ? कैसे ?'

जब मैंने बताया तो उसने कहा, 'ठीक है लेकिन अगर तूने यहाँ जूते या रुपये चुराये तो मैं तुझे जिन्दगी भर के लिए जेल में बन्द करा दूंगा।' यह उसने इस प्रकार कहा कि मेरे मन में उसके प्रति जो भी ममता थी वह भी नष्ट हो गई।

उस मालिक के अलावा वहाँ के नौकरों में मेरे मामा का बेटा शाश्का भी था और एक बहुत चतुर लाल चेहरे वाला किरानी। शाश्का लम्बी पतलून, भूरा फ्राकनुमा कोट और टाई पहनता था। जब नाना मुझे इस दूकान पर लाया था तब शाश्का से कहा था कि वह मेरी मदद करे। और शाश्का ने घमण्ड से कहा था, 'हाँ जो मैं कहूंगा वही इसे करना पड़ेगा।'

नाना ने इस प्रकार मेरे कंधे पर हाथ रखा जैसे मुझे दबा रहा हो, 'देख वह जो कहे, करना, वह तुझसे बड़ा है और अनुभवी भी।'

शाश्का बात बात में कहता 'याद है दादा ने क्या कहा था ?' और इस प्रकार वह अपने बड़े होने का अनुचित लाभ उठाता।

'यों मत देख ! ए काशीरिन !' मालिक ने शाश्का को डांटा।

'मैं ठीक देख रहा हूं मालिक।'

'तो क्या चाहता है कि तुझे देख कर एक भी ग्राहक दूकान में न आवे ?'

किरानी यह सब देख कर हंस पड़ता परन्तु मुझे कुछ अच्छा न लगता और लगता जैसे मैं विदेशियों के बीच हूँ।

जब दूकान में कोई महिला आती तो फौरन ही मालिक के हाथ जेबों से निकलकर मूछों को उमेठने लगते परन्तु उसकी आंखों का भाव न बदलता। किरानी उठ खड़ा होता। शाश्का अपनी आँखें छिपाने लगता और दरवाजे पर खड़ा मैं सब देखता।

किरानी बड़ी सावधानी तथा हल्के हाथों औरतों को जूते पहनाता।

एक बार एक स्त्री ने अपना पाँव झटक दिया और कहा, 'तकलीफ होती है।'

'यह आप के पांव का चमड़ा बहुत मुलायम है।' किरानी ने कहा।

इस पर मुझे हंसी आ गई और मैंने सड़क की ओर मुँह कर लिया। अक्सर मालिक भीतर कमरे में चला जाता और शाश्का को भी पुकार लेता और दूकान पर ग्राहक और किरानी ही बच जाते।

एक बार एक स्त्री को जूते पहनाते समय किरानी ने उसके पांव को अपने हाथ में उठाकर चूम लिया। यह दृश्य देख कर मैं बेतरह हंस पड़ा। फलस्वरूप मुझे सजा मिली। रात को घर जाते समय शाश्का मुझे रास्ते में डांट रहा था, 'ऐसा करेगा तो मार खायगा। निकाल दिया जायगा। आखिर ऐसा क्या था कि तुझे हंसी आ रही थी। बता? 'बाद में उसने समझाया, 'औरतें चाहें खरीददारी न करें परन्तु उन्हें फँसाए रहना चाहिए। उनके केवल दूकान पर आने से ही व्यापार बढ़ता है।'

सुबह मुझे रसोईं घर में काम करना पड़ता था। रसोइयां बड़ी बदजात औरत थी। मुझसे वह बर्तन साफ कराती, चौका

साफ कराती, और मालिक किरानी तथा शाश्का के जूते व कपड़े भी साफ कराती। फिर सबों को खिलाना तथा दूकान का भी काम!

मुझे यह सब बहुत बुरा लगता। मैं सदा का कुनावीन की बालू भरी सड़कों पर और खेतों में घूमने तथा नदी किनारे टहलने का आदी था इसी के कारण मुझे नानी से अलग होना पड़ा था। मेरा कोई साथी भी न था।

जिस दिन कोई बिक्री न होती तो मालिक शाश्का पर बिगड़ता और बहाना निकाल कर शाश्का मुझे डांटता। परन्तु मेरे मालिक की बीबी, काली आंखों व लम्बी नाक वाली महिला मालिक पर यों बिगड़ती जैसे नौकरों पर बिगड़ा जाता है।

एक दिन दूकान पर एक बहुत खूबसूरत युवती आई। वह मखमल के बालों वाला कोट पहने थी जिसे आते ही उसने शाश्का के सुपुर्द कर दिया। अपने नीले सिल्क के कपड़ों में ही बहुत ही सुन्दर लगती थीं। कानों में हीरे चमक रहे थे। मैंने समझा कि वह गवर्नर की पत्नी होगी। मालिक, किरानी और शाश्का तीनों उसके सामने यों झुक गए जैसे वह कोई देवी हो। सभी पागलों की तरह नाचते रहे और जब वह एक जोड़ बहुत कीमती जूते खरीद कर चली गई तो मेरा मालिक नाच उठा।

'अभिनेत्री है, नीच.....।' कह कर किरानी बहुत देर तक उसके प्रेमियों की चर्चा करता रहा।

एक दिन जब मैं आंगन में एक बक्स खोल रहा था जो हाल ही पिछले दरवाजे से आया था तभी गिरजे का चौकीदार आया। वह बहुत वृद्ध और जर्जर था। उसने मुझसे कहा, 'बच्चा, तुम मुझ पर दया करके अपनी दूकान से मेरे लिए एक जोड़ी रबड़ के जूते न चुरा दोगे?'

मैंने कोई उत्तर न दिया। वह बक्स पर आ बैठा और फिर बोला, क्या एक जोड़ी ला दोगे?'

'चोरी करना पाप है।' मैंने उत्तर दिया।

'ऐसा पाप नहीं। सभी चोरी करते हैं। फिर मेरे बुढ़ापे का कुछ तो ख्याल तुझे करना चाहिए।'

मुझे लगा कि उसके लिए चोरी करना बुरा नहीं सो मैंने वायदा किया कि खिड़की से जूते दे दूँगा।

'अच्छा!' उसने बिना किसी उत्साह के कहा, 'परन्तु तुम मुझे बेवकूफ तो नहीं बना रहे। अवश्य नहीं बना रहे।'

एक क्षणिक सन्नाटे के पश्चात् वह पांव से जमीन पर जमी बर्फ कुरेदता रहा फिर पाइप जलाकर बोला, 'लेकिन अगर मैं तुझे मूर्ख बनाऊँ तब? मै जूते तेरे मालिक के पास ले जाकर कहूं कि तूने आधे रूबल पर मुझे दिया है, जबकि कीमत दो रूबल है, तब!'

आश्चर्य से मैं उस बुड्ढे को देखता रहा, फिर उसने नीला धुआं छोड़ कर कहा, 'समझ लो तेरे मालिक ने मुझे तेरी परीक्षा लेने को भेजा है कि तू चोर है या नहीं!'

'मैं तुम्हें जूते न दूँगा।' क्रोध में मैंने कहा।

'लेकिन तूने वायदा जो किया है।'

उसने मुझे अपने पास खींच लिया और कहने लगा, 'अगर मैं कहता कि आकर गिरिजाघर लूट ले, तब! समझ ले तू अगर सारी दुनिया पर विश्वास करता है तब तू मूर्ख बन जायगा।' फिर मुझे एक ओर करके वह उठ खड़ा हुआ, मैं चोरी के जूते नहीं चाहता। मैं तुझे मूर्ख बना रहा था। लेकिन तू कोमल हृदय का है अतः ईस्टर में आना। मैं तुझे गिरजा के घंटा घर पर चढ़ा दूँगा। तू घंटा बजाना और शहर की छटा भी देखना।'

'मैं जानता हूँ कि शहर कैसा है।'

'परन्तु घंटाघर से वह और किस्म का दिखता है।'

बुड्ढा तो चला गया परन्तु परेशान होकर मैं यही सोचता रहा कि यह मुझे बेवकूफ ही बना रहा था या सचमुच मालिक ने इसे परीक्षा लेने भेजा था।'

तभी शाश्का ने पुकारा, 'अबे, तुझे क्या हो गया।'

मुझे क्रोध आ गया। हाथ की संसी उस पर फेंक दी। मैं जानता था कि वह और किरानी चोरी करते थे। अपने ओवरकोट की बाहों में चप्पलें, जूते भर कर ले जाते थे। एक बार मैंने शाश्का से पूछा था, तुम भी तो ले जाते हो।'

मैं अपने लिए कुछ नहीं करता। मैं तो किरानी की मदद करता हूँ।' कहकर वह चुप हो गया। परन्तु उस दिन से उसका मेरे प्रति व्यवहार और खराब होने लगा। शाश्का की रसोइया से भी नहीं पटती थी। रसोइया भी अजीब थी। वह कहती, 'मुझे लड़ाई बहुत अच्छी लगती है—मुर्गों की लड़ाई, कुत्तों की लड़ाई, या आदमी की लड़ाई सभी एक सी ही है।' जब कभी उसे पता लगता कि आंगन में मुर्गे या कबूतर लड़ रहे हैं तो फौरन ही वह अपना काम छोड़ कर खिड़की से झांकने लगती। और शाम को हमें व शाश्का से कहती, 'बच्चे बेकार क्यों बैठे हो? थोड़ा लड़ो तो मजा आवे!'

इस पर शाश्का बिगड़ उठता, 'ए नालायक, मुझे बच्चे कहती है! जानती नहीं मैं छोटा किरानी हूँ।'

'तू मूर्ख है। जब तक शादी न हो, बच्चा ही रहेगा।'

'चुप रह! नालायक।'

'खुदा ने धोखे से तुझे बना दिया।'

अक्सर शाश्का उसके तकिए में पिन खोंस देता था और वह भी खूब थी! रात में कई बार उठती। अक्सर लैम्प जला

कर आती और मुझे उठा कर कहती, 'मुझे बड़ी बेचैनी लग रही है। मुझसे बातें करो।'

शाश्का उसे 'डाइन' कहा करता परन्तु पीठ पीछे। मैं उसे चुनौती देता, 'उसके मुँह पर क्यों नहीं कहते ?'

अक्सर रात को ही वह जगा कर मुझे काम करने को उठा देती थी और उससे चिढ़कर शाश्का बड़बड़ाता, 'यह क्या बद-माशी है ? मैं मालिक से कहूंगा कि इसकी बदौलत कोई सो नहीं सकता।'

तब वह भी उसी तरह उत्तर देती, 'यह खुदा की गलती है। और,''''''यदि यह मेरा बेटा होता !'

शाश्का उस पर कुढ़ा रहता और मुझसे कहता, 'कुछ ऐसा करना ही पड़ेगा कि यह निकाल दी जाए। किसी दिन इससे बचाकर सभी बर्तनों में नमक भर दिया जाय तो खाने का स्वाद खराब होने पर यह अवश्य निकाल दी जाएगी। और नहीं तो मिट्टी का तेल डाल दिया जाय। तुम्हारी क्या राय है ?'

ठीक, परन्तु यह तुम्हीं करना।' मैं कहता।

'बुजदिल !' वह चिढ़ जाता।

बाद में वह बुढ़िया हमारी आंखों के सामने ही मरी। काम करती हुई वह बिना किसी आवाज के यों गिरी जैसे उसके कलेजे में कुछ चुभ गया हो। उसके मुँह से खून की धार बहने लगी थी। हम और शाश्का दोनों समझ गए कि यह मर रही है परन्तु हम इतने भयभीत थे कि कुछ न कर सके। फिर शाश्का तो बाहर निकला परन्तु मैं खिड़की से बाहर देखने लगा। जब मालिक आया तो बोला, 'यह अवश्य मर गई। पर कैसे मरी !' फिर उसने शाश्का को पुकार कर कहा, 'काशिरीन ! दौड़कर पुलिस को बुला ला।'

पुलिस वाले आए। अपनी सलामी ली और जाकर थोड़ी देर बाद गाड़ी ले आए। मृतक रसोइया को गाड़ी में भर कर ले गए तब मालकिन ने मुझसे कहा, 'फर्श को धो डाल।'

मालिक ने कहा, 'यह अच्छा हुआ कि रात को ही मरी।' रात का मरना क्यों अच्छा था मैं न समझ पाया।

सोते समय शाश्का ने कहा, 'रोशनी न बुझाना।'

'क्यों डर रहे हो ?'

शाश्का ने मुँह तक ओढ़ना खींच लिया और बड़ी देर तक शांत पड़ा रहा। रात इतनी खमोश थी मानो कुछ भांप रही हो।

तभी जब घंटा बजा तो उसने कहा, 'चलो हम दोनो एक साथ भट्ठी पर सोवें।

'वह बहुत गर्म है।'

'देखो न वह अचानक मरी है। अवश्य ही डाइन बनी होगी। मैं सो नहीं पाता।'

'मुझे भी नींद नहीं आवेगी।'

रात भर वह मुर्दों की, कब्र से निकल कर अपने रहने के घरों की तलाश में घूमने की कहानी कहता रहा, "मुर्दों को शहर का ही नाम याद रहता है, स्थान व गली भूल जाते हैं।'

रात को ही शाश्का ने कहा, 'देखूँ मेरे सन्दूक में क्या क्या है !'

उसने अपनी संदूक में क्या भर रखा है यह जानने की उत्सुकता मुझे सदा रही है। जब कभी मैंने देखने की कोशिश की तो उसने डाँटा है, क्या देखना चाहता है ?'

उसने आज मेरे सामने ही बक्स खोला और उसमें मैंने देखा कि दफ्ती के बहुत से डब्बे हैं। एक डिब्बा खोलकर उसने बिना शीशे वाली चश्मे की एक कमानी निकाली। उसे नाक पर

लगाया। और कहा, 'इससे क्या अगर शीशा नहीं है। यह एक विशेष तरह का है।'

'ज़रा मैं देखूँ ?'

'तुम्हें ठीक न होंगे।' उसने कहा और चारों ओर देखा कि कोई देख तो नहीं रहा। फिर एक पालिश की डिब्बी से उसने बहुत से बटन निकाले और कहा, 'इन्हें एक-एक करके सड़क पर चुना है।

इसी तरह की अनेक चीजें उसने एक के बाद एक निकालीं और बिना शीशे को चश्मे से बहुत शान से देखता रहा। फिर कहा, 'इसमें से तुम भेंट के रूप में क्या लोगे ?'

'मैं कुछ नहीं चाहता।'

इसके कई दिन बाद कोई छुट्टी थी। दूकान बंद थी। दोपहर के खाने के बाद शाश्का ने मुझसे कहा, 'आओ'

मैंने समझा मुझे कुछ वह दिखाएगा। मुझे वह बगीचे में ले गया। एक कोने में एक दीवाल के नीचे छिपकर हम लोग खड़े हुए। पेड़ की छाया भी थी। हमें कोई देख नहीं सकता था। अगल-बगल के दरवाजों पर उसने सतर्क निगाह डाली। फिर उसने थोड़ी सी पत्तियाँ हटाईं तो जमीन पर गड़ी दो ईंटें दिखाई पड़ीं। ईंटें हटाने पर टीन दिखाई पड़ा। उसे हटाया तो एक सुरंग सा गढ़ा दिखा। शाश्का ने मोमबत्ती जलाकर कहा

'डरना मत।'

परन्तु वह खुद काफी डर गया था। उसका हाथ हिल रहा था। उसने बाद में झांक कर फिर ईंटें लगा दीं। और चमककर बोला, 'तुम मुझसे जलते हो।'

शाश्का ने अपना कोट उतार दिया, बाहें सिकोड़ लीं और लड़ने को तैयार हो गया। मेरी लड़ने की इच्छा न थी। उसने

मुझे ढकेला। कहा, 'मार डालूँगा।' फिर मैं भी भिड़ गया। मैं मजबूत तो था ही। दूसरे ही क्षण वह जमीन चाट रहा था। उसने कहा, 'मैं मालिक से शिकायत करके तुझे निकलवा दूंगा।' कहकर वह चला गया। मैंने मन में निश्चय कर लिया कि शीघ्र ही मुझे वहाँ से अब भाग जाना है।

दूसरे दिन सुबह जब नई रसोइया मुझे जगाने आई तो चौंक कर बोली, 'या खुदा, यह तूने क्या किया अपने चेहरे को ?'

मेरा जी बैठने लगा। 'डाइन' ने तो कुछ नहीं किया ? लेकिन वह हँसने लगी तो उठकर मैंने शीशे में देखा - मेरे चेहरे पर पुताई हुई थी।

'यह शाश्का का ही काम है।' मैं समझ गया। फिर जब मैं अपना जूता साफ करने लगा तो जूते में खोंसी हुई एक पिन चुभ गई। यह भी क्या 'डाइन ने ही किया है ?

उस शाम को ही भाग जाने का मैंने निश्चय कर लिया। परन्तु शाम को खाना बनाते समय आग की लपक उठी। उसे शान्त करने में मैंने अपना हाथ खूब जला लिया। फिर अस्पताल जाना पड़ा।

मैंने नाना व नानी से सुना था कि अस्पताल में लोग भूख के मारे मर जाते हैं। सो मुझे लगा कि यही दशा मेरी भी होने को है। चश्मा पहने एक औरत आई। उसके हाथ में एक स्लेट थी। 'उसने पूछा'

'तेरा नाम ?'

'मेरा कोई नाम नहीं !'

'जरूर होगा।'

'नहीं।'

'बेवकूफ न बना वर्ना बेंत पड़ेगी।'

फिर चिढ़कर वह चली गई।

फिर रात आई और अपने-अपने कंबल के नीचे सभी दबक गए। प्रति क्षण सन्नाटा गहरा होता जा रहा था। मुझे डर लग रहा था। मेरे मन में हुआ कि मैं नानी को लिखूँ और आकर वह मुझे मरने के पहले लिवा ले जाए परन्तु लिखता कैसे? हाथ जो बेकार थे।

रात का सन्नाटा मेरे अन्तर के सन्नाटे की तरह ही घना था। मैं उठा और दरवाजे पर आया। वहाँ बड़ा हाल था। मैं बढ़ा तभी किसी ने पुकारा, 'कौन घूम रहा है इधर आ।'

परन्तु आवाज कर्कश न थी। मधुर थी।

'तू वही है जिसका हाथ जला है? तू रात को क्यों उठा। किसने यह आज्ञा दी?'

उसने तमाखू का धुआं छोड़ कर तनिक प्यार से मेरा गला पकड़ा और पूछा, 'क्या डर गए।'

'हाँ।'

यहाँ आने पर पहले डर लगता ही है। तुम्हारे माँ-बाप कहाँ है? नहीं हैं? कोई बात नहीं। उनके बिना ही तुम रहोगे। बस किसी से डरना मत।'

अरसे के बाद किसी दयालु के शब्द सुनने को मिले। राहत मिली इससे। जब मैं अपनी खाट के पास आया तो उसे भी बैठने को मैंने कहा,

'तुम कौन हो?'

'मैं एक सिपाही हूँ। कज्जाक! मैं हंगेरियन और पोलों के खिलाफ लड़ा हूँ।'

मैंने आँखें बंद करलीं, फिर जब खोला तो देखा कि उसके स्थान पर काले कपड़े पहने नानी बैठी है और झुककर उसने पूछा, 'तुम्हें क्या हुआ, बेटे !'

मैंने सोचा कि सपना देख रहा हूँ सो चुप रहा। फिर डाक्टर आया, उसने पट्टी बाँधी और थोड़ी देर के बाद नानी के साथ गाड़ी पर बैठा मैं शहर के बीच से जा रहा था।

सूरज चमक रहा था। बादल सफेद चिड़ियों की तरह उड़ रहे थे। हमने वोल्गा का पुल पार किया। मैंने देखा कि बसन्त आने वाला है। शीघ्र ही ईस्टर आएगा। 'मैं तुम्हें क्यों प्यार करता हूं नानी !'

'क्योंकि हमारा तुम्हारा रिश्ता है।'

मैं नानी से लगा आराम करने लगा।

दो

जब मैं पहुंचा तो नाना बाग में काम कर रहा था। मेरा स्वागत उसने कुल्हाड़ी यों उठा कर किया जैसे मेरे सिर पर ही दे मारेगा। फिर पूँछा, 'क्या तेरा वहाँ का काम समाप्त हो गया ? अरे तू..........अब तेरा जिस तरह भी जी चाहे रहना।'

'हमें वह सब मालूम है !' नानी ने कहा फिर मुझे कमरे में ले जा बताया, 'नाना तो बरबाद हो गया है। उसके पास जो भी रुपया था उसने निकोलस को ऊँचे सूद पर दिया था लेकिन कोई लिखा पढ़ी नहीं थी। मुझे यह तो नहीं मालूम कि अब ठीक स्थिति क्या है परन्तु सारा रुपया डूब तो अवश्य गया है।' कह कर वह रुकी फिर कमरे में चारो ओर देखकर पुनः कहा, 'इसीलिए तेरा नाना इतना कठोर हो गया है और किसी की सहायता नहीं कर सकता। लेकिन आज रात तू यहाँ रह जा, मेरे पास आज के खर्च भर को पैसे हैं।'

तभी नाना भीतर आया और मुझे घूर कर फिर कहा, 'क्या नाश्ता लेने आ रहा है ?'

'यह तुम्हारे भाग का नहीं लेकिन अगर चाहो तो आओ तुम भी साथ होलो। काफी है।'

वह मेज पर बैठ गया और बोला, 'अच्छा आओ, चा उँड़ेलो।'

मैंने देखा कमरे में सब पहले ही जैसा था। केवल वह स्थान सूना था जहाँ माँ रहती थी। नाना की खाट के ऊपर दीवाल पर एक बड़ा सा कागज पिन से लटकाया गया था।

मैंने पूँछा। 'यह किसने लिखा है ?'

नाना खामोश रहा परन्तु नानी ने मुस्कराकर कहा, 'कागज के उस टुकड़े की कीमत १०० रूबल है।'

नाना चिढ़ गया, 'तुझसे क्या मतलब, चुप रह!' मुझे पुराने दिनों की याद हो आई। कमरे के एक कोने में संदूक के ऊपर रखी टोकरी में सोता निको जाग गया परन्तु मुझे पहचान न पाया।

बाहर गली की खबरें मिलीं—व्याखीर मर गया है। रूबी कहीं चला गया है। याज के पाँव टूट गए हैं, वह चल नहीं सकता। काली आँखों वाले कस्त्रोम ने मुझे यह खबर बताकर कहा, 'बच्चे जल्दी करते हैं।'

'यह तो केवल व्याखीर मरा है।'

'हाँ लेकिन गली छोड़ कर भाग जाना भी तो मरने के ही बराबर है। चेस्नोकोव वाले पुराने मकान में दूसरे किराएदार आ गए हैं। उसका नाम है—इवसिन्को। उनके यहाँ निउस्का नाम का एक लड़का भी है। उसके बहनें भी है, एक तो बहुत छोटी है और दूसरी पंगु है परन्तु हैं खूबसूरत!' तनिक रुक कर उसने बताया, 'चुरका और मैं उसे प्यार करने लगे हैं। उसे लेकर लड़ाई भी हो जाती है।'

'लड़की से लड़ाई होती है ?'

'धुत्त ! मुझमें और चुरका में लड़ाई होती है । लड़की से कभी नहीं ।'

मुझे यह पता लग गया था कि बड़े लड़के और जवान आदमी प्रेम करते हैं। उसी शाम को मैंने उस पंगु लड़की को देखा। वह बैसाखी के सहारे चलती थी। अपने घर की सीढ़ियाँ उतरते समय उसकी एक बैसाखी गिर पड़ी—फिर तो असहाय होकर खड़ी रहने के सिवा वहकर ही क्या सकती थी । मैंने अपने पट्टी बंधे हाथों से उसे उठाकर देना चाहा पर मैं भी असफलरहा मेरी असफलता पर वह हंस पड़ी।—फिर पूछा, 'अपने हाथों को क्या कर लिया ?'

'जला लिया है "

'ठीक है मैं लंगड़ी हूं। तुम क्या यहीं रहते हो ? क्या तुम अस्पताल में थे ? मैं तो बहुत दिनों वहाँ रही ।'

उसके कपड़े सफेद थे। फटे हुए परन्तु साफ सुथरे। उसके बालों में मोटे फीते गुंथे थे जो उसकी छाती पर झूलते रहते। आँखें बड़ी बड़ी। उनमें हल्के नीले रंग की चमक होती थी जिससे उसकी छोटी नाक वाला चेहरा काफी तेजोमय मालूम होता।

उस दिन आधी रात को नानी ने मुझे जगाकर कहा, 'मेरे साथ आ दूसरों का। भला करेगा तो तेरे हाथ का घाव जल्दी ठीक होगा।'

मेरे हाथ पकड़ कर अंधेरी गली में वह यों चलने लगी जैसे मैं अंधा होऊं। उस समय इतना अंधेरा था कि कुछ भी न सूझता था। एक कुत्ता हम दोनों पर भूंकने लगा : नानी ने कहा, डरो मत !

नानी ने कुत्ते को पुचकारा फिर तो वह भी साथ हो गया। काफी चलने पर वह गिरजाघर आया जिसकी खिड़की से रोशनी साफ आ रही थी और कब्रगाह की दीवाल भी दिखाई पड़ती थी। नानी ने कहा, 'तू आ गया, इससे मुझे बहुत खुशी है। क्योंकि अब मुझे इन बड़े आदमियों से बहुत घृणा हो गई है जो खुदा को भी भूले जाते हैं और कयामत के दिन की भी फिक्र नहीं करते। न तो गरीबों से मित्रता करते हैं। और सदा ही अपने पास इकट्ठा हुए सोने के बारे में ही सोचते हैं जो एक न एक दिन अवश्य ही कोयला हो जायगा।'

यहाँ तक आते हुए नानी ने रास्ते में मिले प्रत्येक व्यक्ति के घर की बन्द खिड़की पर एक पैसा और दो बिस्कुट रखा। इस समय मैंने पूछा 'इस कुत्ते को हम घर ले चलें ?'

'अगर यह चले तो। परन्तु मेरे पास एक बिस्कुट बचा है, इसे दे दे! अब मैं बहुत थक गई है।'

हम लोग गिरिजा के दरवाजे के पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गए और कुत्ता भी वहीं बैठ कर बिस्कुट कुतरता रहा। नानी ने कहा, 'एक यहूदी स्त्री है, उसकी दस सन्तानें हैं।'

परन्तु मैं नानी से लग कर सो गया।

अब फिर मेरे जीवन की धारा तेजी से बह निकली। रोज ही मुझे नए नए अनुभव होते। कभ कभी मेरा जी बहुत बेचैनी और दर्द से भर जाता। धीरे धीरे मैं स्वास्थ्य लाभ करने के साथ ही उस पंगु लड़की के प्रति अधिक तेजी से खिंच गया

उसके साथ काफी देर तक गिरजा के दरवाजे पर बैठता—कभी बातें करता कभी चुप ही रहता। उसके साथ खामोश बैठना भी अच्छा ही लगता था। वह कुछ कमजोर हृदय की थी और उसकी आवाज़ चिड़ियों की तरह मधुर थी। वह बहुत दिलचस्प ढंग से डोन के किनारे के कज्जाकों का वर्णन करती जिनके बीच में वह अपने चाचा (तेल के कारखाने का एक मजदूर) के साथ रही है। अब उसका बाप निजनी में आ बसा था। उसने कहा, मेरा एक चाचा ज़ार के राज भवन में काम करता है।'

अक्सर रविवार को या छुट्टी के दिनों में बहुत से युवक युवतियाँ गिरजे में आते। युवक तो भीतर चले जाते परन्तु स्त्रियाँ व बच्चे वहीं बालू पर या बेंच पर बैठ जाते। बच्चे खेलते और मुग्ध होकर मातायें देखतीं। हम लोग भी कभी कभी बच्चों के साथ हो जाते। पहले तो हम सभी साथ खेलते परन्तु अब कोसत्रोम और चुरका एक दूसरे के विपक्षी बन कर खेलते। इनकी लड़ाई तो उस पंगु लड़की के मुस्कान पर विजय पाने की थी। दोनों आकर घूसेबाजी भी करने लगते और इस तरह कि यदि बड़े लोग आकर बचाते तो भी बचा न पाते थे अन्त में उन दोनों पर लड़ाई रोकने के लिये पानी छोड़ा जाता, जैसे लड़ने वाले कुत्तों पर पानी डाला जाता है। अक्सर वह लड़की लुडमिला भी चीख पड़ती, 'बन्द करो, झगड़ा' उसका चेहरा गुस्से से सफेद होकर चमकने लगता।

एक बार चुरका को हरा कर भी कोसत्रोम एक दूकान के पीछे बैठकर रोने लगा। उसकी सिसकी सुनाई पड़ रही थी। उसका चेहरा इतना कठोर बन गया था जैसे पत्थर का हो। उसकी सूजी हुई काली आँखों से पानी गिर रहा था। मेरे

समझाने पर उसने कहा, 'देख लेना, सिर पर वह पत्थर मारेगा। देख लेना।'

और चुरका! वह भी एक ही जीव था। अफसर की तरह वह गली के बीचोबीच चलता। उसके हाथ पैन्ट के जेबों में होते और सिर की टोपी भी तिरछी। वह शान से कहता, 'शीघ्र ही मैं सिगरेट पीना सीख जाऊँगा। दो बार मैंने कोशिश की परन्तु बीमार हो गया।'

इस प्रकार की घटनाओं से मैं परेशान था। धीरे धीरे मेरे सभी मित्र मुझसे अलग हो गए—यह सब लुडमिला के कारण था। एक दिन शाम को अपने आप वह मेरे पास आई, पूछा, 'कहो, क्या हाल है?' फिर तीन बार सिर हिलाकर कहा, 'क्या तुमने चुरका व कोसत्रोम को देखा है?'

'चुरका से अब हमारी नहीं पटती। और तेरे ही कारण! वे दोनों ही तेरे प्रेम के कारण सदा लड़ते रहते हैं।'

वह जैसे फूट पड़ी, 'मैं किस प्रकार दोषी हूँ?'

'तुमने दोनों को अपने प्रेम में क्यों फंसाया?'

'मैंने क्या फँसने को कहा था?' कह कर वह क्रोध में घूमी और फिर बोली, 'बेहूदी बात है मैं उन दोनों से बड़ी हूं। मैं चौदह साल की हूं। बच्चे अपने से अधिक उम्र की लड़की से प्रेम नहीं करते।'

'यह तो तुझे अच्छी तरह मालूम होगा!' उसे नाराज करने को ही मैंने कहा, 'और वह रिब्ल स्तोव की बहन! वह भी तो बड़ी है परन्तु सदा ही लड़के उसके पीछे दौड़ते रहते हैं।'

लुडमिला एक दम मेरी ओर घूम पड़ी। उत्तेजना के कारण उसकी प्यारी प्यारी आँखों में आँसू भर गया था, अपने बैसाखी को

बालू में गड़ा कर उसने कहा, 'तू कुछ नहीं जानता। वह अच्छी लड़की नहीं है। मैं बल्कि बहुत अच्छी हूं। तुम उपन्यास पढ़ो तो सब जान सकोगे।'

दूसरे दिन लुडमिला से दोस्ती करने के लिए मैं उसकी प्रिय वस्तु थोड़ी सी मिसरी लेकर गया पूछा, थोड़ा लोगी ?'

'भाग जा !' क्रोध में उसने कहा, 'हमारी दोस्ती समाप्त हो गई।' परन्तु उसने उसे स्वीकार कर लिया और कहा, 'इसे तुझे कागज में लपेट कर लाना चाहिए था। देख तेरे हाथ कितने गंदे हैं।'

'मैंने धोया तो था।'

उसने मेरा हाथ अपनी हथेलियों में ले लिया और कहा, 'मेरे देख !'

'ये भी तो गंदे और खुरदुरे हैं।'

'मैं सिलाई बहुत करती हूँ। इसलिए सुई से ऐसे हो गए हैं।' फिर उसने चारों ओर सतर्कता से देखकर कहा, 'हमें कहीं ऐसी जगह चल कर बैठना चाहिए जहाँ कोई न देखे। हम लोग 'एक दिलचस्प' उपन्यास पढ़ेंगे। ठीक है न !'

जगह ढूँढ़ने में हमें देरी लगी। क्योंकि कोई जगह नजर में न जँची। अन्त में वह साधारण स्नानगृह दिखा जिसके बगल में ही बूचड़ खाना है। मुश्किल से ही कभी कोई उधर आता था। एक स्टूल पर वह बैठ गई और मैं दरवाजे के पास बैठ कर उसका मुँह ताकता रहा। वह पढ़ती जा रही थी। उसकी चमकती आँखें दो चिनगारियों की तरह पृष्ठ पर नाच रही थीं। अक्सर पढ़ते पढ़ते उसकी आवाज भर जाती और वह जैसे रोने रोने हो जाती।

मेरा कुत्ता जिसे मैंने अब पाल लिया था, उसकी शक्ल और तेजी के कारण उसका नाम 'विंड' रखा था, भी मेरे साथ था।

'सुन रहे हो न!' लुडमिला और मैं सिर हिला देता।

वह फिर पढ़ने लगती। पढ़ती पढ़ती एक दम से रुक जाती जैसे रोशनी बुझ जाए और किताब बंद कर के पूँछती, 'कहो अच्छा था न।'

स्नानघर की पढ़ाई काफी दिनों चलती रही। एक एक करके तीन भाग पढ़े गए। लुडमिला ने कहा कि चौथा भाग भी है। जिस दिन पानी बरसता हम लोग अधिक निश्चिन्त रहते क्योंकि उस दिन कोई भी नहाने न आता और हमें कोई चिन्ता भी न रहती।

कोई देखेगा तो क्या होगा इसकी चिन्ता मुझसे अधिक लुडमिला को थी। हम घंटों एक दूसरे से लग कर बैठे रहते और जो भी मन में आता बातें करते जाते। मैंने उसे नानी की कुछ कहानियाँ सुनाईं। उससे हमें कज्जाकों के जीवन की बातें सुनने को मिलीं।

'वहाँ कितना अच्छा था!' एक आह खींच कर वह कहती। 'ओ यहाँ क्या है? यह तो भिखमंगों का गाँव है।'

'फिर तो स्नानगृह की आवश्यकता भी हमें न रह गई क्योंकि लुडमिला की माँ को कोई नौकरी मिल गई और वह दिन भर वहीं रहने लगी। उसकी बहन स्कूल जाती और भाई एक फैक्टरी में काम करते। इस प्रकार सारा घर अपना ही था। मैं जाकर लुडमिला को घर के कामों में मदद देता।

अक्सर हँसकर वह कहती, 'हम लोग तो बिल्कुल ही एक विवाहित दम्पति की तरह रहते हैं ! बल्कि उनसे भी अच्छे, क्योंकि विवाहित पति पत्नियों की भी मदद नहीं करते।'

जब मुझे पैसे मिल जाते तो मैं चा के साथ के लिए कुछ नाश्ता खरीद ले जाता। नानी भी लुडमिला के लिए सिलाई के काम लेकर आती। वह हमारी मित्रता से परिचित थी—उसने कहा, 'लड़के व लड़की की मित्रता अच्छी बात है परन्तु फूल को खिलने के पूर्व न तोड़ना चाहिए। इससे फल नहीं आते।'

हम दोनों ही नानी के इस वाक्य का अर्थ समझते थे।

लुडमिला के पिता की उम्र चालीस की थी, वह काफी सुन्दर था। उसके दाढ़ी और सिर के बाल घुंघराले थे। वह अक्सर अपने बच्चों को पुचकारता तो भांड की तरह मालूम होता और अपनी पत्नी को भी वह पीटता। हर रविवार व छुट्टी को वह मखमल की पतलून और चमकदार जूते पहन कर अकड़ कर फौजी की तरह दरवाजे पर खड़ा रहता।

लुडमिला अपनी माँ से कहती, 'माँ, तू ऐसी क्यों बनी रहती है। देखती नहीं, वे चटाई बिनने वाली स्त्रियाँ भी कैसे कपड़े पहनती हैं?'

'अगर तुम तीनों को पहनाने की बात न होती तो मैं भी वैसे ही कपड़े पहन पाती।'

लुडमिला के बाप का नाम इवसिन्को था। वह बुरी तरह चटाई वाली स्त्रियों की ओर घूरता रहता।

एक दिन लुडमिला, कोसत्रोस और मैं एक बेन्च पर बैठे थे। चूरका ने लुडमिला के भाई को मूँगफली के लिए चुनौती दी थी। दोनों ही एक दूसरे पर जूझे हुए लड़ाई कर रहे थे। एकाएक लुडमिला चीख उठी, 'देखो!'

कनखियों से देखकर कोसत्रोम ने कालीनिन नामक एक शिकारी की बात बताई जो मर चुका था परन्तु अभी भी कब्र में नहीं दफनाया गया था। इसलिए वह अपने कफ़न में से निकल कर रात भर घूमता रहता है।

'ऐसी बातें मत करो।' लुडमिला ने रोका।

'झूठ है। मैंने उसे दफनाए जाते देखा है। चुरका लड़ाई के बीच ही चीख पड़ा।'

'अबे जा, तू भी उसी तरह फिर कब्र में सो रह!' कोसत्रोम ने कहा।

अपना सिर हिलाकर लुडमिला ने माँ से पूँछा,—'माँ क्या मृतक रात को घूमते हैं?'

'हाँ।' मां ने अधिक चिन्ता के बिना ही उत्तर दे दिया। परन्तु उनका झगड़ा इसे लेकर चलता ही रहा।

एक दुकानदार का लड़का—लगभग बीस वर्ष का लम्बा युवक आया और कहा कि जो भी उस कब्रगाह में रात भर सोए उसे वह तीन रुपये और दस सिगरेट देगा।

हम लोग तो सुन कर ही सन्न रह गए पर लुडमिला की मां ने कहा, 'यह बदमाशी! आखिर क्यों तू बच्चों को यों बहका रहा है।'

'अच्छा पाँच रुपया ला। मैं सोऊँगा!' चुरका ने कहा।

कोसत्रोम ने फौरन ही ताना दिया 'तीन रुपया में डर लगता है? अच्छी बात है बालक! तू कह दे पाँच रुपया। यह कभी न जाएगा।'

'अच्छा पाँच रुपया सही।'

चुरका उठा और चुपचाप भाग गया। कोसत्रोम ने मुँह में दो उँगलियाँ रख कर सीटी बजाई। लुडमिला ने पूँछा, 'वह क्यों भागा?'

'बुजदिल है।' बालक ने कहा, 'सब कहते थे कि यह बहादुर है। सब देख लिया।'

मुझे यह ताना बहुत बुरा लगा। मैं इस बालक को खूब जानता था जो लड़कों को गंदी आदतें सिखा कर लड़कियों को तंग करता था। उसका कहा करके लड़के सदा ही झंझट में पड़ जाते थे। जाने क्यों उसे मेरे कुत्ते से चिढ़ थी। वह उस पर ढेला फेंकता था। एक दिन उसने उसे एक रोटी दी जिसमें सुई चुभी थी। मैंने बालक से कहा, रुपये मुझे दे, मैं जाऊँगा।

उसने मेरा मजाक बनाना शुरू किया। उसने लुडमिला की माँ से रुपया रखने को कहा परन्तु उसने इन्कार कर दिया। 'मुझे यह सब बदमाशी पसन्द नहीं।' कह कर वह चली गई।

लुडमिला ने भी रुपया नहीं लिया तभी नानी आ गई। सब सुनकर उसने अपने पास रुपये रखने का निश्चय किया फिर मुझसे बहुत प्यार से कहा, 'अपना ओवरकोट ले लेना और एक कम्बल वहाँ सर्दी अधिक होगी।

नानी की बात से मुझे ताकत मिली और विश्वास हो गया कि वहाँ कुछ बुरा न होगा।

बालक ने यह शर्त लगाई कि कब्र पर ही सोऊँ। रात भर उस पर से हटने का मेरा अधिकार समाप्त। वह मुझ पर नजर रखेगा।

नानी ने मुझे चूमा और कब्रगाह की ओर घुमा दिया और कहा, 'अगर डर लगे तो खुदा का नाम लेना।'

मैं तेजी से चला। थोड़ी दूर तक कसत्रोम और दूसरे लड़कों ने पहुँचाया। फिर जब मैं कब्रगाह की दीवार तक

रहा था तो कम्बल से लगकर मैं गिर पड़ा परन्तु फौरन ही उठ खड़ा हुआ। जैसे धरती ने मुझे ऊपर फेंक दिया हो। पीछे से मुझे हल्की सी हँसी सुन पड़ी।

मैं जाकर उस कालिनिन वाली कच्ची कब्र पर बैठ कर चारों ओर देखने लगा। आसपास की सारी जगह क्रासों से भरी थी। सामने का सफेद गिरजा बर्फ का बना लगता था। सामने ही चौकीदार की झोपड़ी थी। मैंने मन ही मन निश्चय किया कि अगर कालिनिन कब्र में से निकलेगा तो इसी झोपड़ी में भाग जाऊँगा।

मुझे कब्रगाह का भूगोल मालूम था। माँ की कब्र भी गिरजा के पास ही थी। गाँव से मुझे गाने की आवाज सुनाई पड़ी। मैं पहचान गया। शराबी लुहार मिखोव की आवाज थी।

थोड़ी देर बाद केवल घंटे की ही आवाज रह गई। मेरा जी भी बैठने लगा। गिरजा की ओर मुँह कर के मैं कम्बल में पाँव छिपा कर बैठ गया। मुझे लगा जैसे रह रहकर कब्र फट रही है और नीचे से एक आवाज आ रही है दूसरी बार कोई चीज मेरे पास आकर गिरी। बाद में एक ईंट भी आई। मुझमें डर की एक लहर फैल गई पर मैं जानता था कि दिवाल के पीछे से वालक और उसके साथी मुझे डराने को यह कर रहे हैं। उनके वहाँ उपस्थित होने की कल्पना से मुझे राहत मिली।

अचानक मैं माँ के बारे में सोचने लगा। एक बार मुझे सिगरेट पीते पकड़ कर पीटा था। और कहा था, 'मुझे मत छूना। मैं काफी परेशान हूं। फिर मुझे भट्टी के पीछे भेज कर उसने नानी से कहा, 'वह अजीब भावना हीन है। उसे किसी से प्यार नहीं।'

मुझे इस बात की चोट लगी। मुझे माँ के लिये दुःख हुआ। उधर दीवाल के पीछे मुझे डराने की वे लोग सभी कोशिशें कर रहे थे। अन्त में मैं चीख पड़ा, 'तुम सबों को मौत आवे!' परन्तु मेरी कौन सुनता। चाँदनी में बर्फ के बीच अबरख के कण चमक रहे थे।

मैंने पूरी तरह कम्बल ओढ़ लिया—अब चाहे जो भी हो

जब नानी ने मुझे आकर जगाया! उठ क्या डर गया था।' जाड़ा लग रहा है?

'हाँ थोड़ा डरा था, पर किसी से न कहना, लड़कों को पता न लगे।'

'शाबाश! बेटे, इस धरती पर आकर अपने ही अनुभवों से सीखना होता है। अगर खुद न सीखेगा तो किसी के कहने से कभी न आवेगा।'

फिर तो मैं गली में सब से बहादुर माना जाने लगा। कालीनिन के कब्र से निकलने की बात झूठी हो गई।

लुडमिला ने बहुत प्यार तथा आदर से देखा। नाना भी खुश हुआ। सभी खुश थे—चुरका को छोड़कर। वह कहता—'उसके लिये यह कोई बात न थी। उसकी नानी खुद ही डाइन है न!'

तीन

भोर के तारे की तरह ही मेरा भाई निक गायब हो गया।

चीथड़ों की शैय्या पर हम और वह दोनों ही नानी के साथ सोए थे। यों तो रोज की सुबह भी मुझे बहुत उदास मालूम होती थी—और आज नानी ने फुसफुसा कर कहा, 'निक मर गया।'

सचमुच वह इस तरह तकिए से चपक गया था जैसे तकिया उसके शरीर का एक भाग हो।

'खुदा को शुक्र है कि मर गया। नहीं तो इस संसार में बेचारा किस सुख के लिये रहता!' सिर के बालों को ठीक करती हुई नानी ने कहा।

तभी नाना आया और अपनी उँगलियों से निक की बंद आँखों को छुआ। तब उसकी ओर घूमकर नानी ने कहा, 'बिना हाथ साफ किये उसे क्यों छूते हो?'

नाना ने शून्य दृष्टि से उसे देखा और बाहर जाते हुये

कहा, 'तेरा जो मन आए करना, मैं उसकी अंतिम क्रिया के लिए कुछ भी नहीं करने का।'

मैं वहाँ से चला आया और फिर रात गए ही वापस आया। निक को उस सुबह को दफनाया गया। मैं तब माँ की कब्र के पास अपने कुत्ते के साथ बैठा था। मेरे साथ याज का पिता था। जिसने कब्र खोदी थी। उसने मुझसे कहा, 'मैंने तो केवल मित्रतावश ही यह किया है। इसके लिए किसी दूसरे से मैं कई रूबल लेता।'

नानी उसकी लाश को कब्र तक लाई। उसे कब्र में रख कर मिट्टी भर दी गई। नाना और नानी चुप चाप खड़े थे। न तो पादरी न भिखारी, सिर्फ हम चार ही थे। नानी ने, उसके बाद नाना के कब्र को सम्मान दिया और वापस चले।

काफी गर्मी पड़ रही थी! रास्ते की बालू तक गर्म हो गई थी। चलते चलते रुककर नानी अपना पसीना पोंछ लेती थी।

'माँ की कब्र की मिट्टी काली क्यों हो गई?' मैंने नानी से पूँछा।

'पानी बहुत अधिक ऊपर से बहा होगा।' लेकिन इन बातों पर मत सोच। मैं चुप तो हो गया पर सोचता रहा कि सचमुच मौत कितनी भयानक और कुरूप है।

जब तक हम घर पहुँचे नाना पहुँच कर चा बना चुका था और फौरन ही कहा, 'हमें थोड़ी चा पीनी चाहिए।'

फिर नाना ने नानी का कंधा पकड़ कर झकझोरा और कहा, 'और कहो!'

'इसके क्या माने!' नानी ने मुड़ कर पूँछा।

'इसके माने कि खुदा भी हमसे डर गया है और एक एक करके हमारा नाश कर रहा है।'

इस समय नाना को इतनी अच्छी तरह व्यवहार करते देख मुझे आश्चर्य ही हुआ।—परन्तु नानी ने अपने जैसा ही उत्तर दिया।

'यह क्यों नहीं करते कि जीवन भर तुम कुछ नहीं कर सके।'

उस शाम, लुडमिला से बातें करते हुए मैंने सुबह की सभी घटनाएँ उसे सुनाईं परन्तु उस पर उनका कोई प्रभाव न पड़ा। उसने कहा, अनाथों को काफी सुविधाएँ हैं क्योंकि यदि मेरी मां व बाप मर जाएँ तो मैं अपनी बहन पर भाई का भार छोड़ कर गिरिजा में कोई काम में जाऊँगी। क्योंकि मैं पंगु हूँ! मेरी शादी तो होगी नहीं और यदि हुई भी तो पंगुओं की तादाद ही तो बढ़ेगी।'

उसके इस कथन से मैं उससे दूर भागने लगा।

भाई की मृत्यु के कई दिनों बाद नाना ने कहा, 'आज जल्दी सो जाना, अन्धेरा होने के पहले ही। हमें जंगल लकड़ी लाने जाना है।'

'मैं भी जड़ी बूटी चुनने चलूँगी।' नानी ने कहा।

लगभग दो मील पर एक जंङ्गल था। सुबह होने के पहले ही हम तीनों चल पड़े। जङ्गल आते ही नाना ने कहना शुरू किया।

'जंगल तो खुदा का बगीचा है। जब अपनी युवावस्था में मैं जहाज पर काम करता था तब एक बार मेगुलिया गया था। अलेक्सी! समझ लो कि जो जीवन मैंने बिताया उसकी तुम्हें कल्पना भी नहीं हो सकती। हम लोग सारातोव से मकारा तेल के पीपे ले जा रहे थे। पोरेखा का किरील कप्तान था और हमारा मेट था एक तातार—आसफ! मई का महीना था

शायद । रात को हमारे कैप्टन सोरिल ने एकाएक कहा, 'अब, हम तुम्हें हुक्म न देंगे । अब तुम अपने मन से करना । मैं जंगल में जा रहा हूँ । हम लोग आश्चर्य में डूबे रह गए । हम में कुछ उसे रोकना चाहते थे, कुछ चुप हो रहे । तभी तातार भी चिल्ला उठा, मैं भी जाऊँगा ।'

'क्या वे डाकू हो गए थे ?' मैंने पूँछा ।

'शायद, या हो सकता है कि तपस्वी हो गए थे, कोई ठीक पता नहीं ।'

थोड़ा आगे बढ़ने पर नानी ने कहा, 'अब जरा सुस्ता लें । एक कपड़े में वह रोटी, प्याज, नमक आदि खाद्य सामग्री बाँधकर दो रही थी । उसने कहा, 'हमारे सबों के लिए खाना काफी है ।'

खाना खाने के बाद हम सबों ने काम शुरू किया । नानी तो जड़ी चुनने चली गई । नाना लकड़ी काटने गया । मेरा काम था कि मैं कटी हुई लकड़ियों को जुटाऊँ । परन्तु मैं नानी की ओर चला गया । मैं बहुत चुपचाप उधर गया कि नानी न जान सके । परन्तु उसने मुझे देख ही तो लिया ।

'तू नाना के पास से भाग आया ।'

और हम लोग जंगल में बहुत भीतर घुसते गए । वहाँ जाकर मुझे जंगल में रहने वाले डाकुओं की कल्पना हो आई और मुझे उनका जीवन बहुत आकर्षक लगा । धनी को लूट कर गरीब को देना कितना अच्छा है । मुझे जंगल की नीरवता में बड़ी शांति मिली । वहां मुझे अपनी नानी पर भी बड़ी श्रद्धा उपजी ।

बालक ने मेरे कुत्ते को हाल ही में जहर दे दिया था । जङ्गल में मुझे एक सफेद कुत्ता दिखा । तत्काल ही मेरे मन में आया

कि मैं उसे पाल लूँ। बस मैं उसके पीछे दौड़ पड़ा। वह मुझे अजीब लगा। उसकी पूँछ उसकी टांगों के बीच थी। मेरे सीटी बजाने पर वह मेरे पास न आकर और छिपने लगा। मुझे उसके व्यवहार से बिल्कुल ऐसा लगा कि वह कुत्ता नहीं है।

'तूने देखा।' हँसकर नानी ने पूँछा, 'मैं भी पहले कुत्ता समझी पर वह लोमड़ी थी। लोमड़ी गर्मी में खतरनाक नहीं होती।'

नानी न तो जङ्गल में कहीं रास्ता भूली न उसे डर ही लगा।

नानी जंगल की जड़ी बूटी को बेंच कर सारे पैसे अपने पास ही रख लेती। इस पर नाना मन ही मन कुढ़ता रहता। एक दिन उसने कहा।

'तू भिखारी से भी बुरी है। मुझे तेरे कारण शर्म खानी पड़ती है।'

'शर्म क्यों ? मैं कोई तेरी बेटी नहीं, न तो मैं दूसरी शादी करने वाली हूं।'

'मेरे सिर पर पाप का बोझ कम नहीं है कि दूसरों के पाप भी लादूं।'

'तू किस लायक है यह कोई नहीं जानता।' नानी कह कर चुप हो गई।

एक दिन नाना जब शहर से आया तो बरसात शुरू हो चुकी थी। दरवाजे पर खड़े होकर गौरैया की तरह पानी झाड़ते हुए उसने विजय के उल्लास में कहा, 'अबे ओ, सुन, छोकड़े। कल से तुझे एक नए काम पर जाना होगा।'

'कहाँ ?' नानी ने ऊब कर पूँछा।

'तेरी बहन मातरेना के बेटे के यहाँ।'

'यह तुमने गलती की।'

'चुप रह, नालायक ! वे लोग इसे आदमी बना देंगे।'

नानी ने उत्तर तो न दिया परन्तु संताप से सिर झुका लिया।

उस रात मैंने लुडमिला को बताया कि मैं शहर जा रहा हूँ, और बहुत जल्दी चला जाऊँगा !

तब उसने बताया, 'मेरे पिता मेरे पाँव का इलाज करावेंगे। जब पाँव ठीक हो जाएँगे तब मैं भी ठीक हो जाऊँगी।

उस गरमी में वह कुछ दुबली होकर पीली पड़ गई और उसकी आँखें लम्बी हो गईं थीं।

'तुम क्या डर गई हो ?' मैंने पूछा।

'हाँ।' कहकर वह सिसकने लगी।

शहर के लिए मेरे मन में योंही काफी बुरी कल्पना थी, फिर मैं भला, उसे क्या सांत्वना दे पाता ! बड़ी देर तक एक दूसरे से लगे हम दुःख में डूबे खामोश बैठे रहे। अगर गरमी का मौसम होता तो मैं नानी से कहकर लुडमिला को लेकर जाता और एक काठ की गाड़ी में उसे बैठाकर भीख माँगता घूमता। लेकिन गरमी का मौसम जा चुका था। पेड़ों पर से बरसाती हवा बह रही थी। आसमान में बादल भरे थे। सारे विश्व में हमें केवल दुःख की छाया ही पड़ती दिखाई पड़ी।

चार

पुनः शहर में। वह दो मंजिला मकान मुझे बहुत बड़ी ताबूत की तरह लगा। यद्यपि मकान नया था परन्तु देखने में दीन हीन लगता। प्रत्येक मंजिल में आठ खिड़कियाँ थीं। इनमें चार ही गली की ओर खुलती थीं। यह घर मैंने पहले भी देखा था क्योंकि जब मैं जूतेवाली दूकान में काम करता था, तब जहाँ रहता था वहाँ से यह बहुत दूर न था।

मैं अपने मालिक से अच्छी तरह परिचित हो गया था। एक बार यह और इसके भाई माँ के पास आ चुके थे। इसके भाई ने ही मजाकिया ढङ्ग से गाना गाया था। उसमें तब और अब में कोई अन्तर नहीं आया था। मेरा मालिक ऊंची नाक व लम्बे बालों वाला अच्छा, दयालु व्यक्ति दिखता था। और उसका छोटा भाई विक्टर घोड़े की तरह लम्बे मुँह का था। उनकी माँ, नानी की बहन बहुत बुरे स्वभाव की औरत थी। मालिक की पत्नी बहुत सफेद रंग की थी जैसे बहुत अच्छे सफेद गेहूं की पकी रोटी। उसकी आँखें

बड़ी और काली काली थीं। पहले ही दिन उसने हमें दो बार कहा, मैंने तेरी माँ को सिल्क के काले किनारी वाले कपड़े दिये थे।

मैं जाने क्यों यह विश्वास ही नहीं कर पाता था कि इसने माँ को कभी भेंट दी होगी और माँ ने स्वीकार भी किया होगा। उसने जब दूसरी बार कहा था तो मैंने उत्तर दिया, 'दिया होगा ठीक ही है परन्तु इस प्रकार डींग हाँकने की जरूरत क्या है।'

वह क्रुध हो गई, 'क्या? तू किससे बातें कर रहा है।' उसके चेहरे पर लाल धब्बे उठ आये। आँखें गोल होकर चमक उठीं। उसका पति भी आ गया, हाथ में एक कम्पास लिये और कान पर पेंसिल खोंसे हुये। मुझसे बताया 'इनसे अदब से बातें किया कर, सभी की इज्जत किया कर।'

फिर पत्नी की ओर घूमकर उसने कहा, 'बेकार के लिए मुझे मत परेशान किया करो।'

'बेकार के लिए! तुम्हारा मतलब क्या है? अगर तुम्हारे रिश्तेदार······।'

'मेरे रिश्तेदार और तू जहन्नुम में जा!' चीख कर वह चला गया।

मैं भला किस प्रकार इन लोगों को नानी का रिश्तेदार मानता। मैंने अपने अनुभव से जाना था कि रिश्तेदार एक दूसरे को अजनबी से भी बुरा व्यवहार करते हैं।

फिर भी अपना मालिक मुझे पसन्द था। अपने बालों को जब कान के नीचे समेटता तो मुझे अच्छा लगता। वह कहता, "अबे जंगली।' कभी-कभी अपनी माँ व पत्नी से कहता, 'तुम

लोग बहुत दिनों से लड़ी नहीं।' कह कर वह हंस पड़ता।
मुझे भी आश्चर्य था कि किसी भी समय बिना कारण ही
वे दोनों लड़ सकती थीं। अक्सर बड़ी लड़ाइयों की शुरूआत
खाने की मेज पर खाना पकाने के तरीकों की बहस पर ही
होती। जो भी मांस बनाती, पतोहू कहती 'मेरी माँ ने उस ढङ्ग
से बनाया था।'

'यह तो गलत तरीका हुआ।'

'कुछ भी हो। स्वाद तो बहुत अच्छा था!'

'तो अपनी माँ के पास ही चली जा!'

'क्यों जाऊँ, मैं तो घर की मालकिन हूँ!'

'और मैं क्या हूँ?'

तब मालिक बीच में कूद पड़ता, 'बहुत हुआ, जङ्गलियो।
तुम्हें क्या हो गया। रसोईघर जाने को एक पतली सी दालान
थी। उसी दालान के एक सिरे पर मैं एक कोच पर सोता था।
यहाँ सोने से मुझे जुकाम हो जाता।

सुबह आठ बजे नाश्ते के ठीक बाद मालिक, उसका
भाई अपनी मेज पर कागज फैला लेते, छोटे छोटे प्याले और
तमाम सामान।

मेज के दो किनारों पर बैठकर वे काम करते। टेबिल से पूरा
कमरा भर जाता फिर कमरे में कोई आता तो विक्टर की शिका-
यत होती।

'वसील!' मालिक की पत्नी पुकार कर कहती। 'इससे कहो
कि मुझ पर न चिल्लाये।'

'अच्छी बात है मेरी मेज न हिले।'

'मैं क्या करूँ? मैं गर्भवती हूँ कमरे में आने जाने भर
की जगह नहीं।'

'तो क्या हम कहीं और चले जायें ?'

तभी दूसरे कमरे से झाँक कर सास कहती, 'उसकी आदत है कि वह तेरे कमरे में जरूर घुसेगी। उसके लिये और चारों कमरे पूरे नहीं हैं।'

इस पर विक्टर हँस पड़ता और मालिक कहता, 'काफी हो गया।'

इस पर उसकी पत्नी कुर्सी पर गिर कर रोने लगती, 'मैं मर रही हूँ।'

'मेरे काम में बाधा न डालो। मेरे घर से तो पागल खाना अच्छा ये घर में न रहने देगी।' मालिक बिगड़ता।

ऐसे झगड़ों से पहले तो मैं चिन्तित हुआ। फिर एक दिन मालिक की पत्नी खाने की मेज से एक चाकू लेकर कमरे में घुस गई और भीतर से बन्द कर लिया। मालिक ने काफी धक्का दिया परन्तु कमरा न खुला तो मुझसे कहा, 'मेरे कन्धे पर चढ़ कर सिटकनी खोलो।'

मैं उस पर सवार हो गया और दरवाजे के ऊपरी भाग का शीशा तोड़ कर ज्योंही सिटकिनी खोलने को सिर भीतर डाला कि मालिक की पत्नी ने चाकू से वार किया। सिर कुछ कटा भी परन्तु मैंने जैसे-तैसे खोल ही लिया। मालिक आगे जाकर पत्नी को वापस घसीट लाया और चाकू छीन लिया। तभी मैंने देखा कि चाकू तो केवल रोटी काट सकता है चमड़ा नहीं, अतः मैं चोट की ओर से निश्चिन्त हो गया।

मालिक व उसके भाई, दोनों काम करते समय गाना भी गाते। जिसे सुनकर दूर से ही उसकी पत्नी चीख पड़ती, 'क्या तुम भी पागल हो गये हो? बच्चे को अभी नींद आई है। [illegible] तुम शिक्षित हो, तुम्हें ऐसा गाना न गाना चाहिये।'

मैं दिन भर काफी व्यस्त रहता। घर का मैं सारा काम करता। शनिवार को दोनों सीढ़ियाँ और बाकी कमरे धोता। मैं तरकारियाँ काटता और साफ करता। मैं मालिक की पत्नी को बाजार से खरीददारी करने और तरकारी की टोकरी लाने में मदद देता। परन्तु मुझसे वह बुढ़िया-नानी की बहन बहुत काम लेती। वह सुबह छः बजे उठ जाती। और रात के कपड़े पहने-पहने ही हाँथ-मुँह धोकर खुदा से प्रार्थना करती। अपने बेटे व पतोहू की शिकायत करती, 'ऐ खुदा, मैं कुछ नहीं चाहती, कुछ नहीं, केवल थोड़ी सी शाँति चाहती हूँ।'

उसकी आवाज से ही मेरी नींद खुल जाती और मैं कम्बल में मुँह छिपाये उसकी लीलायें देखा करता। वह अपना सिर पीटती, छाती थपथपाती और कहती 'ऐ खुदा मेरी मुसीबतों को खाते में लिख लेना और मेरी पतोहू से उसका बदला लेना। मुझे जो वह तकलीफें दे रही है। उसका उसे फल मिलना चाहिये। और मेरे बेटे विक्टर की आँखें भी खोलो। ऐ खुदा विक्टर की मदद करो।'

विक्टर तो रसोई घर में ही सोता था। माँ की बातें सुनकर वह चीख उठता, 'किसी नई पतोहू की कामना है क्या? बड़े शर्म की बात है।

'चुपचाप तू सोता रह! फिर वह खुदा से कहती, मुझे कष्ट देने वालों की हड्डियाँ चिटक जाएँ। इस पृथ्वी पर सिर छिपाने को कोई छत न मिले।

नाना की प्रार्थना भी इतनी भयानक न होती थी। यह समाप्त करके वह मुझे जगाती।—'जल्दी उठ, नहीं तो सब काम बाकी रह जायेगा। जा लकड़ियाँ ला, चूल्हा जला। कल लकड़ियाँ नहीं चीरीं? जा नाश्ता तैयार कर।'

उनकी बातों से बचने के लिये मैं बड़ी तेजी से कार्य शुरू करता परन्तु वह खुश न हो पाती।

मालिक की पत्नी के लिये प्रति-दिन दो पौन्ड सफेद रोटी और थोड़ी मिठाई लाता। जब मैं कागज में लपेट सब चीजें लेकर आता तो दोनों ही स्त्रियाँ मुझे शक के निगाह से देखती। फिर चीजें लेकर पूछती, 'तूने तो नहीं खाया ? मुँह खोल ?' फिर दोनों ही चीख उठतीं, 'देखो उसके दाँतों में अब भी थोड़ा सा लगा है देखो। इसने बहुत ज्यादा खा लिया है।'

मैं काफी तत्परता से अपना काम करता था। अक्सर आपस में वे महिलायें बातें करतीं, 'काफी साफ-सुथरा काम रहता है, परन्तु आज्ञाकारी नहीं है।' अक्सर मालिक की पत्नी कहती, 'तू यह मत भूल कि तू कितने गरीब परिवार का है। मैंने तेरी माँ को काली पट्टियों वाला सिल्क का कपड़ा दिया था।' इस पर एक दिन मैंने उत्तर दे दिया, 'तो क्या तुम इसके बदले में मेरा चमड़ा चाहती हो ?'

वह चीखने लगी, 'हे खुदा, यह किसी दिन मेरे घर में आग लगा देगा !' दोनों महिलाओं ने मालिक से शिकायत की परन्तु वह मेरे प्रति दयालु था, 'बच्चे, ठीक से रहा करो।' फिर उसे जैसे पत्नी व माँ को कुछ कहने का अवसर मिल गया। 'तुम्हारी भी क्या जोड़ी है ! क्या यह लड़का घोड़ा है, कि उसी तरह रखना चाहती हो ! कोई दूसरा छोकरा होता तो कब का भाग गया होता।'

इस पर दोनों ही आँसू बहाने लगतीं। पत्नी कहती, 'उसके सामने तो इस प्रकार मत कहा करो। तुम तो लम्बे बालों वाले मूर्ख हो। अब वह भला हमारी क्यों सुनेगा !'

और माँ केवल इतना कहती, 'वासील, खुदा तुम्हें समझे।

बच्चे को इस प्रकार बरबाद मत करो।

उनके चले जाने पर मालिक ने बढ़कर मुझसे कहा, 'अबे देख, तेरे कारण मैं किस चक्कर में फँस गया हूं! तू अपने नाना के पास वापस जा और कूड़े बिना कर!'

इस दृश्य से मैं भी बहुत व्यथित था। मैंने कहा, 'हाँ, कूड़े बिनने में मैं इससे अच्छा ही था! मैं यहाँ काम सीखने आया था, बताओ कि काम मुझे सिखाया है?'

मेरी बात पर वह अजीब आवाज में, आँखें दिखा कर मेरे बालों को पकड़ कर बोला, 'तो तू विद्रोही है। इसमें तेरा ही बुरा होगा लड़के!'

मैंने समझा कि मुझे अब चलाजाना चाहिये। तभी एक दिन मुझे रसोईघर में उसने थोड़ा सा ड्राइंग पेपर, कम्पास और पेंसिल पटरी देकर कहा, 'जब यहाँ से छुट्टी हो तो इसपर नक्शे बनाने का अभ्यास करना।'

मुझे यह नया काम अच्छा लगा। हाथ धोकर मैं उसमें जुट गया। मुझे अपना नक्शा देख कर खुद ही आश्चर्य हुआ। जिस घर की मैं नकल कर रहा था उसकी शक्ल ही दूसरी बन गई थी और दरवाजा इतना ऊँचा कि दूसरी मंजिल तक जाता था। मैंने उस घर के आस-पास चिड़ियों की शक्लें बना दीं और गली में लूले लंगड़े लोग भी। फिर वह नक्शा मालिक को दिया।

बालों को समेट कर, आँखें फैला कर उसने पूछा, 'यह सब क्या है?'

'यह वर्षा हो रही है। ये चिड़ियाँ हैं, पानी के कारण घर में घुस रही हैं। यह सभी आदमी हैं—जल्दी जल्दी घर

आगे जा रहे हैं और यह स्त्री गिर पड़ी है। यह नीबू बेचने वाला है।'

'हाँ, सब समझ गया। धन्यवाद!' व्यंग से फिर हँसकर मालिक ने कहा, 'इसे खुद ही फाड़ कर रद्दी में क्यों नहीं फेंक दिया। अरे जंगली।'

तभी उसकी पत्नी भीतर आई और मेरा काम देख कर बोली, 'इसे पीटो।'

परन्तु मालिक ने कहा, 'कोई बात नहीं, मेरा शुरू का काम ऐसा भी नहीं था।'

फिर उस पर लाल पेंसिल से क्रास बना कर उसने और कागज देकर कहा, 'फिर कोशिश करो।'

दूसरी बार कुछ सफलता मिली परन्तु खाली मकान अच्छा न लगा मैंने उसमें भी रहने वाले बनाए। खिड़कियों पर स्त्रियां को पंखा व सिगरेट देकर बिठाया। दरवाजे पर एक कुत्ता भी। इसे देखकर मालिक बिगड़ा, 'यह सब क्यों?'

मुझे समझ में न आया कि खाली मकान क्यों बनाया जाय। तब मालिक ने कहा, 'अगर सीखना चाहता है तब इसमें दिमाग लगा। यह सब बेवकूफी न करो!'

अन्त में जब मैं एक नक्शा काफी अच्छा बना सका तो वह खुश हो गया, 'यह तेरे ही ऊपर है कि तू कितना कर सकता है। अपने काम को समझ ले।' फिर उसने समझा कर मुझसे कहा, देख, इस घर का एक नक्शा बना, मैं अधिक न बताऊँगा।'

मैं कागज लेकर रसोईघर में चला गया। मैं यह सोच ही रहा था कि किस प्रकार शुरू करूँ कि मालिक की माँ आगई और बिगड़ने लगी, 'तो अब नक्शे बनाएगा?' कहकर उसने

मेरे बाल नोचे और मुझे पटक कर कागज छीन कर टुकड़े-टुकड़े कर डाले और बोली, 'किसी बाहरी को यह कला सिखाना कितना बुरा है जबकि अपने ही खून-मांस का भाई ही काम के लिए भटकता रहता है।'

शोर गुल सुन कर मालिक और उसकी पत्नी दौड़े आए। फिर तीनों में कसकर लड़ाई हुई। फलस्वरूप स्त्रियाँ रोने लगीं और मालिक ने मुझसे कहा, 'फिलहाल यह काम बन्द कर दो।'

मुझे अपने मालिक पर दया आई क्योंकि उन बुरी सी स्त्रियों के ही कारण वह कुछ भी करने में असमर्थ था। उस बूढ़ी स्त्री ने मेरे पढ़ने में विघ्न डालने में कुछ उठा न रखा। जब भी मैं कागज लेकर बैठता, तो उसके पहले उससे पूछ लेता, 'मेरी कोई जरूरत तो नहीं ?' तो वह मुँह चिढ़ाकर कहती, नहीं जब जरूरत होगी तो मैं खुद बताऊँगी।' और कुछ ही क्षणों बाद वह चीखने लगती, 'हाँ, यह क्या कर रहा है। देख आज सीढ़ी साफ नहीं हुई, न कोने का कूड़ा ही हटा है। जाकर सब सफाई कर।'

मुझे सफाई के लिये कुछ न मिलता। तो वह चीख उठती, 'तू मेरी बात क्यों नहीं मानता ?'

वह कभी-कभी मेरे कागज पर तेल या सिरका गिरा देती। मैंने ऐसी बुरी और जलने वाली दूसरी स्त्री न देखी थी।'

उसे अपने बेटे विक्टर पर जो भी प्यार था वह एक प्रकार से नशा था। कभी-कभी मुझे उसपर हँसी आती। अक्सर वह प्रार्थना करती, 'मेरे बेटे की पत्नी बहुत सुन्दर हो,'·····राजकुमारी, लाखों की सम्पत्ति वाले की बेटी। और

'तू ही देख वह कैसी है ?' कहते हुए वह अपनी पतोहू को अच्छी बुरी बातें भी सुना गई, 'एक बार मैं जब उसके साथ ही स्नान करने गई तब देखा कि वह कैसीहै। उसमें ऐसा कुछ नहीं जिस पर गर्व किया जाय! भला कौन उसे सुन्दरी कहेगा।'

अपनी पतोहू के लिए वह जितने भी वाक्यों का प्रयोग करती सभी वीभत्स होते। पहले तो उसकी बातों से मुझे ऊब लगती परन्तु धीरे-धीरे मैं बुढ़िया के दर्द का भी अनुभव करने लग गया।

बगल के एक घर से हमारा आँगन दिखता था। बगल वाले इस घर के आठ भागों में चार में अफसर किराएदार थे। पाँचवे हिस्से में एक पादरी। उस घर का आँगन, अर्दलियों, और नौकरों, नौकरानियों और रसोइयों से भरा रहता था। वहाँ हर रसोईघर में उनके प्रेम-नाटकों का अभिनय सदा ही चलता रहता, कभी-कभी मारपीट भी होती, औरतें भी पिटतीं। यानी वहाँ वीभत्स, और करुणामय दृश्यों की कमी नहीं होती थी। परन्तु यह सब देखकर बुढ़िया मजा लेती। सब सुन कर मालिक की पत्नी की मुस्कुराहट भी फूट पड़ती। विक्टर भी बहुत दिलचस्पी लेता परन्तु मेरा मालिक कहता, 'खतम भी करो।'

इस पर विक्टर माँ को भड़काता। 'माँ यहाँ की तू मालकिन है, तेरा जो जी में आए कर।'

मुझे आश्चर्य था कि आपस में इतना भेद-भाव ये किस प्रकार निभाते हैं। अगर कभी मालिक माँ से कह देता कि तू विक्टर को बिगाड़ रही है तो वह कहती, 'यह बड़े पाप की बात है कि तू अपने भाई को प्यार नहीं करता।'

बिक्टर का व्यवहार तो माँ के प्रति सदा ही उपेक्षा पूर्ण होता परन्तु प्रति शनिवार को जब मिठाइयाँ आतीं तो मेज पर से चुरा कर माँ उसके लिए मेरे बिछौने के नीचे छिपा देती। बाद में बिक्टर चुराकर खाता तो बुढ़िया कहती, जल्दी खा ले, नहीं तो कोई देख लेगा।'

'मैं तो बताही दूंगा कि तू मेरे लिए मिठाइयाँ चुराती है।'

बिक्टर मुझसे सदा ही जलता रहा। मेरे मन में भी उसके प्रति काफी घृणा थी। मैं उसकी गाली सहता, दिन भर में कई बार उसके जूते चमकाता। यहां मेरा जीवन एक तो योंही काफी परेशानी का था, फिर जब नानी कभी-कभी आ जाती तो वह और भी कठिन हो उठता। वह पिछले दरवाजे से रसोई-घर में आती और अपनी छोटी बहिन के सम्मुख झुक जाती। नानी के झुकने से मुझे लगता जैसे मैं ही किसी बोझ से दबा होऊं।

'अरे तू अकूलिना है?' बड़ी विचित्रता से वह स्वागत करती।

नानी तो जैसे बदल गई थी। उसके ओंठ चिपके होते और आंखें सूनी-सूनी लगतीं। मैं नानी से कहता, 'यों क्यों बैठी हो?'

'तू चुप रह, तू तो यहां मालिक नहीं है।' नानी मुझे ही डांटती।

'बिना काम की बात ही यह सदा करता रहता है। मार गाली का भी तो इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।' बुढ़िया मेरी शिकायत करती। फिर थोड़ा रुककर अपनी बहन से कहती, 'तो तूने भीख माँगना शुरू कर दिया है?'

'यह मेरा अभाग्य है।'

'उनके लिए अभाग्य नहीं, जो बेशर्म हैं।'

'मैंने सुना है कि ईसा ने भी भीख मांगा था ।'

'कौन कहता है ? चुड़ैल, तू खुद मूर्खा है । ईसा भिखारी नहीं । वह तो खुदा का बेटा था । वह हर एक पर दया करता है । आजकल तेरी और तेरे पति बसील की जो हालत है वह उन दिनों का फल है जब तू अमीर थी और मैं गरीबी में तेरे पास सहायता मांगने गई थी ।

'लेकिन मेरे पास जो भी था मैंने तुम्हें दिया था ।' नानी ने उत्तर दिया । 'खुदा मुझे उसका पुरस्कार भी देगा ।'

उस बुढ़िया की बातों से नानी तनिक क्षुब्ध हुई थीं । नानी इतना किस प्रकार सह सकी मुझे आश्चर्य था । नानी का वह रूप भी हमें पसन्द नहीं आया ।

तभी मेरे मालिक की पत्नी ने आकर कहा, 'खाने के कमरे में आइए, आइए ।'

मालिक सदा ही नानी का प्रसन्नता से स्वागत करता था, 'अरे, अकुलीना मौसी, सन्यासिनी, कैसी हो ? वृद्ध काशरिन मौसा का क्या हाल है ?'

नानी मुस्कुरा कर कहती, 'अभी भी मिहनत से काम कर रहा है ?'

नानी और मालिक में बड़ी देर तक और दिलचस्प बातें होतीं । अक्सर बात मेरी मां तक आ जाती, 'वारबरा, क्या रत्न थी !'

बीच में टोक कर मालकिन कहती, 'याद है, मैंने उसे कपड़े दिए थे—काली सिल्क पर सुनहली किनारी !'

'हां याद है ।', नानी ने स्वीकार किया ।

'काफी अच्छा था न !' मालकिन ने फिर पूछा ।

'बहुत अच्छा——।' मालिक ने व्यंग किया ।

'इससे तुम्हारा क्या मतलब ?' मालकिन ने चिढ़कर पूछा ।

'कुछ नहीं, खुशी और अच्छे लोग बहुत दिनों नहीं रहते।'

'जाने तुम्हारे मन में क्या-क्या विचार आते हैं।'

तब नानी को नवजात शिशु के दर्शन कराए गए। जब मैं टेबुल साफ कर रहा था तब मालिक ने कहा, 'तेरी नानी भी कितनी अच्छी है।'

मुझे यह शब्द अच्छे तो लगे परन्तु फौरन ही मैंने नानी से कहा, 'तू यहाँ क्यों आती है। देखती नहीं किस तरह......।'

'अरे अलेक्सी, मैं सब देखती हूँ।' अपने चेहरे पर हँसी लाकर उसने कहा। वह सब कुछ समझती थी, यहाँ तक कि मेरे अन्दर की उथल-पुथल से भी वह परिचित थी। उसने कहा, 'मैं केवल तुझे देखने आती हूं। तेरा नाना बीमार है। मैं उसकी सेवा करते-करते थक जाती हूँ। मैं अपना काम भी नहीं कर पाती, इससे मेरे पास एक पैसा भी नहीं बच रहा है। और माइक ने अपने बेटे शाश्का को भी घर से निकाल दिया है और मैं ही उसे खाना देती हूं। इन्होंने तुम्हें प्रति माह छः रूबल देने कहा था परन्तु मुझे विश्वास है कि अब तक तुझे एक रूबल भी न दिया होगा जब कि मुझे यहाँ लगभग छः महीने हो गए हैं। इनकी शिकायत है कि तू आज्ञाकारी नहीं है परन्तु मैं कहूंगी कि किसी तरह धीरज के साथ रह कर काम सीख ले। समझे!'

मैंने उससे वायदा किया यद्यपि जानता था कि यह वायदा पूरा न हो पाएगा। यहां की जिन्दगी एक बोझ थी। अक्सर मैं सोचता कि मैं भाग जाऊँ परन्तु जाड़ा आ गया था। रात भर बर्फ के तूफान चलते। मैं भला कहां जाता? मुझे घर से बाहर जाने की इजाजत भी न थी। केवल गिरजा तक जाता था। मुझे गिरजा अच्छा लगता। परन्तु मैं कभी गिरजा में प्रार्थना

न करता तथा मुझे शर्म भी आती। इसलिए मैं नानी व नाना दोनों की ही प्रार्थनाएँ न जान पाया। जब कभी मुझे परेशानी होती तो मैं अपनी प्रार्थना करता।

'या खुदा, मुझे दुःखों से बचा। मुझे जल्दी से बड़ा कर दे, इस नर्क से निकाल, मुझे क्षमा दे। मुझे ऐसी शिक्षा नहीं मिलती जिससे मेरा भला हो।' यह प्रार्थना मेरे मन में आज तक ताजी है। लड़कपन से मस्तिष्क में जो भी असर पड़ता है वह जिन्दगी भर रहता है।

अक्सर रात को मैं अकेला गलियों में, अँधेरे में घूमता। इस घूमने में मुझे केवल पहरेदारों व कुत्तों से ही भेंट होती। अक्सर मैं कहीं बड़ी देर तक बैठकर इधर-उधर की शान्त वातावरण वाली आवाजों का सुनता और संगीत का मजा लेता परन्तु जब कभी पहरेदार आ जाते तो पूछते, यहां क्या कर रहा है?'

'गाना सुन रहा हूँ।'

मालिक के घर से भाग कर अक्सर रात में मैं अँधेरे में मँडराता रहता। मुझे दिन को शांत और रात को प्रकाशमान रहने वाले कुछ घरों ने अपनी ओर आकर्षित किया। अक्सर खिड़कियाँ बन्द रहतीं। रोशनदान से बहुत मस्ती की आवाजें आतीं। मुझे लगता कि मैं सपना देख रहा होऊँ। अतः मैं प्रति शनिवार की रात को यहाँ नियम पूर्वक आने लगा। जाड़ों का मौसम होने के कारण सन्नाटा अधिक होता और उस अँधेरी गली की ओर मुझे ऐसा कोई परिचित भी न मिलता जो कि मालिक से शिकायत करता कि मैं गिरजा के अलावा कहीं और भी गया था। मुझे नीचे के हिस्सों में रहने वाली वेश्याओं व शराबियों को देखकर कोई कष्ट न होता था और जब वे खिड़कियाँ बन्द न रहतीं या परदे खिंचे न रहते तो मैं उन्हें

खूब देखता था। उनकी खिड़कियों पर जो चित्र चपके थे वे भी बहुत ही अच्छे थे। कुछ लोग प्रार्थना करते हुए, कुछ ताश खेलते हुए, कुछ प्यार से चुम्बन लेते हुए कुछ झगड़ते हुए। यह सभी दृश्य मुझे बिना किसी खर्च के देखने को मिलते। एक बार खिड़की की राह मैंने देखा कि एक मेज पर दो युवतियाँ और उनके सामने एक युवक बैठे पढ़ रहे थे। दूसरी वाली युवती पहली की कुर्सी की बाँह पर बैठी थी। अचानक वह बड़ी वाली स्त्री जिसके बाल बहुत सुन्दर थे सिसक कर रो पड़ी। युवक ने किताब बन्द कर दी, दूसरी वाली युवती उठी और बाहर भागी। युवक आकर उस बड़ी स्त्री के सम्मुख घुटने के बल बैठा और उसके हाथों को खींच कर उन्हें चूमने लगा। एक दूसरी खिड़की से भी मैंने देखा कि एक स्त्री एक वृद्ध के सम्मुख प्रणय प्रदर्शन कर रही है।

इस प्रकार के अनेक चित्रों का मुझ पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा। और उन्हें देखता हुआ मैं काफी रात गुजार देता। कि एक दिन घर आते ही दोनों स्त्रियों ने प्रश्न किया, 'आखिर तू किस गिरजा में जाता है कि इतनी देरी लग जाती है?'

वे दोनों ही प्रत्येक गिरजा व प्रत्येक पादरी को जानती थीं अतः मेरा कोई भी बहाना, अवश्य ही पकड़ा जायगा यह भी मैं जानता था। क्योंकि वे दोनों ही सदा ही झगड़े में भगवान को साक्षी बनाती थीं।

एक रविवार को बुढ़िया ने मांस पकाने वाले बर्तन में खीर पकाया जो गिरजा जाने को थी। खीर खराब हो गई तो पतोहू ने कहा, 'तूने मांस के बरतन में खीर पका कर खुदा के साथ धोखा किया है। खुदा तुझे इसकी भरपूर सजा देगा।'

यह सब होते हुए भी मैं उस अपने आकर्षण के केन्द्र से दूर ही था फिर भी एक दिन जब मुझे सात रुपये मिले, और

मैं उस खेल में शामिल हुआ और काफी रात गए वापस आया। जुए का यह खेल मुझे अच्छा ही लगा और मैं उसका आदी होने लगा। और धीरे धीरे मैं जुए की बारीकियों से भी परिचित हो गया।

उस दिन पड़ोसी पादरी के सामने मुझे आत्मशुद्धि के लिए अपने पापों को स्वीकार करना था। मैं जानता था कि मैंने पादरी की खिड़कियों में ढेले फेंके हैं और उसके बच्चों को पीटा है अतः वह इससे अपरिचित भी नहीं है। परन्तु पादरी ने हँस कर कहा।

'अरे, यह तो मेरा पड़ोसी है। बेटे, झुक कर बता दो कि तूने क्या पाप किए हैं?'

मेरे सिर पर उसने मखमल का एक टुकड़ा रख दिया। धूप बत्तियों की सुगंध मेरे नाकों में घुस रही थी, मैं बोलने में अपने को असमर्थ पा रहा था। उसने पूछा।

'तुम अपने बुजुर्गों का कहा मानते हो?'

'नहीं।'

'तो कहो कि मैंने पाप किया है।'

परन्तु मैं कह बैठा। 'चोरी की है!'

'कहाँ, कैसे?' पादरी ने पूछा।

'गिरजा में...।'

'तो यह तो बहुत बुरा था, पाप था मेरे बेटे!'

'मैं जानता हूँ।'

'तो कहो, मैंने पाप किया है! और चोरी क्यों की, कुछ खाने के लिए?'

'हाँ, लेकिन [illegible] इसलिए कि रुपये मैं जुए में हार गया था।'

पादरी ने फिर कई सवाल पूछे और अचानक फुसफुसाहट के बाद पूछा, 'क्या तुम कुछ जब्त किताबें भी पढ़ते हो ?'

सवाल मेरे समझ में पूरी तरह न आया इसलिए मैंने पूछा 'जब्त किताबें ?'

'हाँ, जब्त किताबें ! पढ़ी हैं तुमने ?'

'नहीं, एक भी नहीं ।'

'तो उठो तुम्हारे पाप खत्म हो गए !'

मैं उठा । उसकी शान्त दृष्टि ने जाने क्यों मुझे परेशान कर दिया कि मैं अपने आप कह उठा, 'मैंने आपके घर पर ढेले फेंके हैं ।'

'बुरी बात थी, पर अब तुम भाग जाओ ।'

'तुम्हारे कुत्ते को ढेला मारा है ।'

पादरी ने ध्यान नहीं दिया । मैं चला तो आया परन्तु जब्त किताबों की बात दिमाग में बुरी तरह चक्कर काट रही थी ।

दूसरे दिन मुझे पन्द्रह रुपये मिले । वह मुझे गिरजाघर पहुँचाने थे । रास्ते में मुझे एक जगह खेल जमा दिख गया । मैंने पूछा कि मैं भी शामिल हो सकता हूँ । 'एक रुपये की बाजी !' मुर्गे की शक्ल के एक आदमी ने कहा ।

जोश में मैंने तीन रुपये लगा दिए और दूसरे ही क्षण में ६ रुपये जीता । उस व्यक्ति ने कहा, 'देखो यह जीतकर भाग न जाए !'

मुझे यह बुरा लगा और क्रोध में मैंने नव रुपये की बाजी लगादी । यह नवों रुपये वह जीत गया ।

मैंने उत्तर में तीन रुपये लगाए । इस बार वह हारा । इसके बाद लगातार तीन बाजियाँ मैं हारा । अभाग्य की बात उसी समय गिरजा की घन्टियाँ बजीं और खेल खत्म हो

गया। उस व्यक्ति ने मेरे बाल पकड़ कर झकझोर दिया और पूछा, 'तेरी शादी हो चुकी है ?'

उत्तर न देकर मैं उससे छूट कर भाग गया। तभी बहुत अच्छे कपड़े पहने एक लड़का दिखा। मैंने पूछा, 'तुम गिरजा में थे, जब प्रार्थना हुई।'

'मान लो था, पर तुम्हें क्या ?'

'तो बता दो कि क्या क्या हुआ ?'

'गिरजा की बातें पूछता है ? मैं कुछ न बताऊँगा।'

मैं घबड़ाहट में घर पहुंचा। बुढ़िया ने पूछा, 'किरानी को क्या दिया ?'

'पाँच रुपये !' और उस दिन जान बची।

बसन्त आया। प्रत्येक नए बसन्त में नए कपड़े पहनने का जी चाहता था। नए कपड़े तो न थे अतः पुराने कोट को साफ किया।

उस दिन मैं रसोई घर में काम कर रहा था कि मालकिन कहीं से चीखी, 'दौड़ कर दरवाजे खोल !'

घबड़ा कर खोला तो एक युवक अपने हाथों में मोम-बत्तियाँ लिए खड़ा था। पूछा, 'तुम सभी अभी सो रहे हो ?'

ये सभी गिरजा के आदमी थे। उनके पीछे दो व्यक्ति और थे। एक सुन्दर लड़की थी। नानी ने बताया था वह कुमारी ईसा की बेटी होती है। सबों ने उसे चूमकर आदर प्रगट किया। मुझे वह इतनी अच्छी लगी कि मैंने यह सोचे बिना ही कि बड़ों ने किस प्रकार चूमा है मैंने उसके गालों व होठों पर चुम्बन अंकित कर दिये। फौरन ही मुझ पर सबों के तमाचे नाच गए।

'इसके लिए पादरी से पूछना होगा।' मालिक ने कहा !

'सुअर ! यह किससे सीखा कि ओंठ चूमे जाते हैं।'

काफी दिनों तक सहमा सा मैं सजा की प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने गन्दे हाथों से उसे छूकर चूम लिया था। मुझे सजा जरूर मिलेगी। परन्तु शायद उस देवी ने मुझे क्षमा कर दिया होगा क्योंकि पाप का उद्देश्य पाप नहीं था। या तो वह यह जान गई हो कि उसकी सजा के पूर्व ही मुझे घर में काफी सजा मिल गई थी।

एक दिन मैंने बुढ़िया से कहा, 'लगता है कि वह देवी मेरी सजा भूल गई है।'

'तू रह तो जा!' बुढ़िया ने क्रुद्ध होकर कहा।

'तू भूत है; बदमाश ? तू क्या जादूगर है या क्या होगा, मुझे तो तेरे हर काम में आश्चर्य होता है!' मालिक ने कहा।

पाँच

उसी वसन्त में मैं भाग गया। एक सुबह, रोटी के लिए मैं नानबाई की दुकान पर गया तो जब बाहर था तभी उसने अपनी पत्नी को गाली दी और कोई भारी भरकम चीज से उसके सिर को इस तरह फोड़ डाला कि वह घर से बाहर भागी और गली तक आते आते ही उसके प्राणान्त हो गए। भीड़ इकट्ठी हो गई और एक खाट पर लाद कर उसे अस्पताल ले जाया गया। उसी के पीछे पीछे मैं भी चला। अन्त में मैंने अपने को वोल्गा के किनारे पाया और मेरे हाथ में बीस कोपेक थे।

बगल में बहती वोल्गा और वसन्त की प्यारी धूप देखकर मैं इस प्रकार मोहित हो गया कि फौरन ही निश्चय किया कि मुझे वापस नहीं लौटना है। न तो नानी के पास ही कुनाविन जाना है। मैं उसके वचन पूरे न कर सका था इसका खेद था साथ ही नाना की झिड़कियों का भी डर था।

काफी दिनों तक किनारे पर घूमता ही रहा। खाना और रात का सोना खैरात बाँटने वालों पर चला। एक दिन एक ने कहा, 'इस प्रकार यहाँ मंडराने से काम नहीं चलेगा, अपने काम

खुद करो। मैंने सुना है कि एक स्टीमर में एक रसोइए की दरकार है। जाकर पता लगाया।'

मैंने प्रयत्न भी किया। मुझे एक बहुत लम्बे, दाढ़ी वाले व्यक्ति के सामने ले जाया गया जो चश्मा लगाए था। और अपनी टिमटिमाती आँखों से मुझे घूर रहा था, 'महीने में दो रूबल! बोलो पासपोर्ट कहाँ है।'

मेरे पास कुछ न था। उसने फिर कहा, 'अपनी माँ को बुला ला।'

मैं भागकर नानी के पास गया। उसे मेरे काम की बात अच्छी लगी। उसने नाना को सरकारी मजदूरों के दफ़्तर में भेजकर पासपोर्ट मंगाया और मुझे नाव तक पहुंचा आई।

'आगए, अच्छा। आ मेरे साथ।' जहाज वाले ने कहा।

वह मुझे रसोई घर में ले गया जहाँ एक मनुष्य राक्षसों की तरह ऊँचा बड़ा, सफेद रसोइयों वाला कपड़ा पहने मेजपर बैठा लगातार चाय सुरकता जा रहा था। उसके सामने करके उसने कहा, 'रसोई घर के लिए यह छोरा!'

चाय पीना बन्द करके उसने पूछा, 'तू कौन है?'

मैंने देखा कि सफेद कपड़ों के बावजूद भी वह काफी गंदा लगता था। उसके कानों के बाल मोटे और बड़े बड़े थे कि लगता था जैसे ऊन हो। मैंने कहा, 'मैं भूखा हूं।'

मेरी बात सुनकर पहले तो वह गंभीर हुआ फिर उसकी मूंछें उठीं और वह हँस पड़ा। उसके घोड़े जैसे दाँत दिखे और लगा कि वह माँ की तरह ही कोई स्नेहपूर्ण व्यक्ति है। उसने फौरन ही फांसीसी खाने की एक तश्तरी बढ़ाकर कहा, 'खूब पेट भर के खा लो। तुम्हारे मां बाप हैं? क्या तुम

चोर भी हो ? घबड़ाओ नहीं । यह जगह तो चोरों से भरी है । तुम सब जल्दी ही सीख जाओगे ।'

उसके ओंठों के किनारे पर सिगार खुसी थी । जब मैं खाकर चा भी पी चुका तो उसने एक रूबल देकर कहा, 'जाकर अपने लिए कपड़े खरीद ले, या रह जा, मैं भी चल रहा हूँ ।'

जहाज पर मैं जब पहली बार यात्रा पर चला तो मुझे अपना बचपन याद आ गया जब मैं अस्त्राखान से निजनी गया था । मेरे सामने मां व नानी के चेहरे नाच गए । अब की परिस्थिति में मुझे बड़ा मजा आया और इस नए जीवन के प्रति मुझे आकर्षण भी प्राप्त हुआ ।

वोल्गा की यह रातें मुझे इतनी प्यारी लगतीं कि कभी कभी आत्मविभोर होकर मैं आंसू बहाने लगता । उस जहाज पर भी लोग थे सभी विचित्र थे । युवा और वृद्ध, पुरुष वा स्त्रियाँ, सभी एक दूसरे से मिलते जुलते । हमारी स्टीमर जरा धीमी चलती । दिन भर प्यालों तश्तरियों, छुरी कांटों का ढेर लगता जाता और मैं उनकी सफाई करता । सुबह से आधी रात तक मैं काम में व्यस्त रहता । आधी रात के बाद थोड़ी छुट्टी मिलती जब यात्री खाना न खाते और चा या वोदका पीते । स्माउरी हमारा सरदार था वह टेबिल पर प्याले रख कर चा पीता और उसके सहयोगी, जैक, मैक्स और सरजे भी हमें अच्छे लगते । सरजे के चेहरे पर चेचक के दाग थे । जैक गंदी-गंदी कहानियां सुना कर हँसता और अपने भद्दे तथा बड़े बड़े दाँतों का प्रदर्शन करता ।

जैक की बातों का केवल एक विषय था—औरत । और औरतों के प्रति उसका दृष्टिकोण भी बहुत भावुक था । अगर कभी कोई सुन्दरी स्त्री जहाज पर आ जाती तो वह उसका पूरी तरह गुलाम बन जाता । अक्सर वह कहता, 'देख, गो क्रिशो

को फसाया जाता है।' अक्सर मुझे स्माउरी अपने केबिन में ले जाकर एक किताब पढ़ने को देता, 'लेकर पढ़ो।'

पढ़ने में मेरा जी न लगता परन्तु मेरे अभाग्य से उसके पास लोहे की सन्दूक भर कर किताबें थीं। वह कहता, 'यदि एक बार पढ़कर समझ में न आवे तो दुबारा पढ़ो, जरूरत पड़े तो सात बार पढ़ो। और अगर फिर भी न समझो तो एक दर्जन बार पढ़ो। स्माउरी बहुत स्पष्ट वक्ता था। उसके शब्द लोगों को ढेले की तरह लगते थे। मेरे प्रति वह सदा ही बहुत दयालु रहा है। फिर भी उसके व्यवहार कभी कभी मुझे परेशान कर देते। कभी कभी तो लगता वह भी पागल है जैसे नानी की बहिन। कभी कभी आँखें बन्द कर के वह लेट रहता और कहता, 'पढ़ना बन्द कर दे!' उसका पेट धौंकनी की तरह चलता। अपनी बालों से भरी छाती पर उँगलियां रख कर सोता जैसे मुर्दा हो। फिर चीख उठता, 'देख, अब तू होशियार हो रहा है।'

रुक रुक कर वह अपने फौजी जीवन की कहानियाँ सुना रहा था। स्टीमर के चलने पर अपने ढंग का एक शोर होता था परन्तु उसका आदी हो जाने के कारण लगता जैसे हम लोग सन्नाटे में ही चल रहे हों। स्माउरी से सभी डरते। वह किसी को भी चोर और एशियायी कह दिया करता था। इसी कारण अक्सर उससे और दूसरे लोगों से झगड़े भी हो जाते। झगड़े में कुछ लोग स्माउरी के पक्ष में हो जाते कुछ उसके विपक्षी। यहाँ तक कि कप्तान की पत्नी जिसका चेहरा पुरुषों की तरह था और जो लड़कों की तरह बाल रखती थी सो भी उसी का पक्ष लेती थी। उसमें एक खूबी और थी कि वह बहुत शराब पीकर भी नशे में नहीं आता था। सुबह आँख खोलते ही एक बोतल वोदका पीता था। बाद में तो सारा दिन शराब पीता।

अक्सर रात को वह खुले में बैठ कर किसी एक ही ओर घंटों ताकता रह जाता। इस समय वह बहुत डरावना मालूम होता। अगर कभी मैं उसके पास चला भी जाता तो वह पूछता, 'क्या चाहते हो?'

'कुछ नहीं।'

वह चुप हो जाता तो मैं फिर पूछता, 'आखिर लोग तुमसे इतना क्यों डरते हैं जब कि तुम अच्छे ही आदमी हो।'

मेरी आशा के विपरीत वह नाराज न हुआ, 'मैं केवल तुम्हारे लिए ही अच्छा हूँ।......लेकिन तू ठीक कहता है। मैं सभी के लिए भला तो हूं पर इसका प्रदर्शन नहीं करता। मैं बेवकूफ जो नहीं हूं। परन्तु पढ़ाई जारी रख। किताबों में तुझे आवश्यकता की सभी चीजें मिल जाएँगी। ले कुछ पिएगा!'

'मैं नहीं पीता!'

'ठीक, ठीक है, यह उचित ही है कि तू इससे दूर रहता है। पीना तो एक अभिशाप है। अगर मेरे पास खूब रुपया होता तो मैं तुझे खूब पढ़ाता क्योंकि बिना पढ़ा लिखा आदमी बैल होता है।'

कप्तान की पत्नी ने उसे गोगोल की कहानियों की एक किताब दी थी जिसे मैंने बड़ी दिलचस्पी से पढ़ी। परन्तु स्माउरी ने उस पर अपना व्यक्तव्य दिया, 'बेकार, ऊटपटांग! मैं सब पढ़ चुका हूँ। इनसे भी अच्छी बहुत सी किताबें हैं।'

अजीब बात थी। मेरी उसकी पसन्द में अन्तर था। जो पढ़कर उसकी आंखें गीली हो जातीं उन्हें पढ़ कर मैं ऊबता।

एक दिन मैंने उसे बताया कि कुछ ऐसी भी किताबें हैं जो जब्त हैं और जिन्हें रात को छिपा कर पढ़ा जाता है। सुनकर उसकी आंखें फैल गईं और उसने कहा, 'क्या गप्पें हांकता है?'

'गप्पें नहीं, मुझे खुद पादरी ने इसके बारे में कहा था। और मैंने लोगों को वे किताबें पढ़ते देखा है जब वे चीख पड़ते थे।'

'कौन चीखता था ?'

'औरतें जो सुनती थीं, और दूसरे पुरुष भी कमरे से बाहर भाग जाते थे।'

'सपना देखा है क्या ?' स्माउरी ने पूछा, 'लेकिन कुछ तो ऐसी चीजें हैं ही जिन्हें मैंने नहीं देखा है।'

फिर पूरे घन्टे तक वह बड़े उत्साह से सुनता। धीरे धीरे पुस्तकें पढ़ने की मेरी आदत पड़ गई और मैं कोई भी पुस्तक उठा कर पढ़ सकता था। कभी कभी स्माउरी भी मुझे बुला लेता और कहता 'पेश्कोव, पढ़ो।'

'मेरे पास थोड़ी तश्तरियां साफ करने को हैं अभी।'

'कहो कि वह मैक्स कर ले।'

फलस्वरूप मैक्स को मेरा काम करना पड़ता और गुस्से में मैक्स काम करते करते गिलास तोड़ डालता। इस पर कभी कभी अफसर कहते।

'तुझे मैं नौकरी से भगा दूंगा।'

एक बार जान बूझ कर मैक्स ने कुछ गिलास तोड़ दिए और पानी वहा दिया। गिलास भी उनके साथ बह गए। अफसर ने कहा, 'यह तेरी गलती है तुझे इसके दाम देने पड़ेंगे।'

वे अब जान बूझ कर तश्तरियां गंदी कर के मेरे काम को बढ़ाते रहे। मुझे लगता था जैसे इस काम का अन्त भी बुरा ही होने वाला है।

एक शाम को वहां दो स्त्रियाँ बैठी थीं। एक बूढ़ी, लाल चेहरों वाली, ब्लाउस पहने थी। दूसरी छोकड़ी थी, गुलाबी जैकेट और पीले कपड़े पहने थी। दोनों ही हँस रही थीं। दोनों

ही दूसरे दर्जे के यात्री थीं। उनका दर्जा जेक और सरजे के केबिन के सामने ही था। जब बूढ़ी स्त्री चली गई तो सरजे उसकी जगह जा बैठा।

उस रात को जब मैं काम खतम कर के एक बड़ी मेज पर बिछौना ठीक कर रहा था कि सोता तभी सरजे आया और मुझे बाहों में कस कर कहा, 'आ जल्दी आ! तेरे लिए मौज का प्रबन्ध किया है।

वह पिए था। जब मैंने अपने को छुड़ाना चाहा तो उसने डांट कर कहा, 'अरे चल भी!'

मैकस भीतर आया, वह भी पिए था। दोनों ही मुझे डेक पर खींच ले गए। परन्तु डेक पर स्माउरी खड़ा था और दरवाजे पर जैक था। वह लड़की अपने हाथों से पीठ सहला कर नशे की अवस्था में ही चीख रही थी, 'मुझे जाने दो।'

स्माउरी ने मुझे सरजे और मैकस से अलग करके उनके बालों को पकड़ा और सिर लड़ा कर छोड़ दिया, दोनों दूर दूर जाकर गिरे।

'एशियाटिक!' वह जैक पर चीखा और जैक ने दरवाजा बन्द कर लिया। फिर मुझे डाँटा, 'भाग जा यहाँ से।'

मैं भाग आया। उस रात को बादल थे इससे अन्धेरा हो रहा था। थोड़ी देर में स्माउरी आकर मेरे बगल में बैठ गया। तो वे जबरदस्ती तुझे उसके पास ले जा रहे थे? ओफ, जानवर हैं सब! मैंने सुन लिया था।'

'तुमने उस लड़की को उनके पंजे से छुड़ा दिया न!'

'उस लड़की को!' उसने सिर हिला कर कहा। 'अरे इस स्टीमर में सब कुछ अजीब है। गाँव की तरह, उससे भी खराब! तू गाँव में रहा है।?'

'नहीं।'

उसने अपनी सिगरेट दूर फेंक दी फिर कहा 'तू इन सुअरों के बीच आ पड़ा है। मुझे तेरे लिये बड़ी चिन्ता है। उनके लिये भी! मैं नहीं जानता कि दूसरी बार मैं क्या करूँगा। इन छोकड़ों को क्या हो गया है।'

तभी स्टीमर की ऊपर वाली रोशनी जल गई अन्य रोशनी भी जली और हम जान गये कि किनारा पासही है। उसने कहा,

'यहाँ एक नदी है उसका नाम है पियनाया। मैं जरा किनारे पर जा रहा हूं। किनारे पर सामान बेचने वाली लड़कियाँ खड़ी थीं। उनसे सामान खरीदते या मोल भाव करते समय मल्लाह लोग उनके छाती और पावों में चिकोटी काट लेते और वे चीखतीं, थूकतीं और पेटियों से मारने दौड़तीं। यह दृश्य मैं पहले भी सैकड़ो बार देख चुका था जहाँ भी स्टी-मर रुकी थी।

मुझे लगता जैसे मैं उस स्टीमर रहते रहते बूढ़ा हो गया हूं या वरसों से उसी पर रह रहा हूँ और यह भविष्य वाणी कर सकता हूँ कि अगले सप्ताह क्या होगा।

दिन आगया था। किनारे पर बालुए मैदान दिखाई पड़ रहे थे। पहाड़ों पर से स्त्रियों के गाने व हँसने की आवाज भी आ रही थी।

मुझे जाने क्या हुआ कि मुझे रोना आने लगा। आँखे भरने लगी और मेरा मन उन पहाड़ की स्त्रियों के साथ ही खोगया। ऊब कर मैं डक की सफाई करने वाले डिलएग्विन के पास चला गया।

'मेरा असली नाम डिलएग्विन नहीं है। मेरे माँ है और एक बहन है।' डक साफ कर चुकने पर उसने धीरे से कहा, 'देखो औरतों को लेकर कितनी परेशानी होती है। मुझे औरतें अच्छी भी नहीं लगती। यदि मैं औरत हुआ होता तो अवश्य

ही किसी पुल पर से कूद कर नदी में डूब मरा होता। यह समझ लो कि जब तक औरतों के साथ रहो समझ लो कि आग के साथ हो। वे बेवकूफ भी नहीं होतीं। वे बड़ी समझदार हैं, बल्कि जादू जानती हैं।'

तभी कप्तान की स्त्री उधर से गुजरी। अपने स्कर्ट को ऊपर उठाये जैसे पानी में चल रही हो वह काफी लम्बी और मोटे गोश्त वाली स्त्री थी। मेरा मन हुआ कि मैं उसके पीछे जाऊँ और प्रार्थना करूँ, 'मुझसे बातें करो। मुझसे बातें करो।'

इसी समय स्टीमर ने किनारा छोड़ दिया। क्लिणखिन ने कहा, 'चलो जान बची।'

छः

सारापुतिया में मैक्स को जहाज पर से हटा दिया गया। वह चुपचाप चला गया। किसी से विदा भी न ली। उसके पीछे एक स्त्री यात्री और उसके आगे एक छोकड़ी थी जिसकी आंखें सूजी थीं। बड़ी देर तक सरजे कप्तान के केबिन के दरवाजे पर सिर पटकता रहा, दरवाजे को चूम-चूम चिल्ला रहा था, 'माफ करदो! यह तो मैक्स की बदमाशी थी। मेरी नहीं!'

मल्लाह, यात्री सभी जानते थे कि गलती उसी की थी परन्तु उन्होंने ने भी कप्तान से सिफारिश ही की। परन्तु कप्तान ने उसे दुतकार दिया।

मैक्स की जगह बिल्का का एक सिपाही रख लिया गया। वह भी अजीब था। कुछ चिंगना मारने को उसे भेजा गया। तीन को मार कर बाकी को छोड़ दिया। यात्रियों ने दौड़ कर बाकी को पकड़ना चाहा। दो मुर्गियों सहित पानी में जा रहे। इस पर वह सिपाही बैठ कर रोने लगा।

'अबे क्या बात है! सिपाही होकर रोता है।' स्माउरी ने डांटा।

परन्तु वह रो-रोकर आंसुओं को कमीज की बांह से सुखाता रहा। यात्री भी उसे देख कर मजा ले रहे थे। इस पर वह बिगड़ उठा, 'क्या देख रहे हो ? तुम सबों को टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा। इस पर लोगों की दिलचस्पी और बढ़ी और वे उसे देखते रहे। वह चूहों की तरह भागता रहा, लोग हँसते रहे।

उसके पीछे बैठकर स्माउरी यह दुःख कर रहा था कि किस प्रकार सिपाही को सम्हाला जाय। मैंने सिपाही से बताया कि लोग उस पर क्यों हँसते हैं। उसने गुस्से में आकर दोनों हाथ से मेरे बाल पकड़ लिए। फिर हम दोनों ही घूँसेबाजी करने लगे। यात्रियों ने हमें घेर लिया। तभी उन्हें हटाकर स्माउरी आया, हमें अलग किया और उसके कान खींचे। इसे देख कर सभी यात्री और हँसने लगे। स्माउरी को संभवतः यह बुरा लगा। उसने सिपाही को छोड़ दिया और भालू की तरह घूम कर यात्रियों पर चीख पड़ा, 'अपने केबिन में जाओ। भागो !'

तभी सिपाही फिर मुझसे उलझ गया। इस बार स्माउरी ने एक हाथ से घसीट कर उसे पानी के पम्प के नीचे खड़ा कर दिया। यह देख कर सभी मल्लाह दौड़ आए, यात्री भी जुट गए। सबों को बड़ा मजा आ रहा था। सिपाही आग के सामने बैठ कर जूते सुखा रहा था तथा मोजे उतार रहा था। उसके बालों से पानी भी चू रहा था। उसने कहा, 'कोई बात नहीं, मैं उस छोकड़े को मार डालूँगा !'

स्माउरी ने यात्रियों व मल्लाहों को हटाया। फिर सिपाही से कहा, 'तेरे साथ क्या किया जाय ?'

सिपाही ने उत्तर तो न दिया परन्तु अजीब डरावनी आंखों से घूरता रहा।

'चुप रह, शैतान के बच्चे !' स्माउरी ने डांटा।

'तुम मुझे कुछ नहीं कह सकते।' सिपाही ने कहा। इससे स्माउरी बहुत नाराज हुआ। उसने घृणा से थूक दिया और मुझे लेकर चला गया। मैं उसके साथ चला पर घूम घूम कर सिपाही को देख लेता था। 'वह जंगली है!' स्माउरी ने कहा।

तभी सरजे भाग कर आया और बोला, 'वह आत्महत्या करने जा रहा है!'

'कहाँ है वह?' दौड़ते हुए स्माउरी ने कहा।

सिपाही कैबिन के सामने ही छुरी तेज कर रहा था। इसी छुरी से चिंगने मारे जाते थे। उसे देख कर सभी को हँसी आ गई। किसी को भी यह विश्वास न था कि वह आत्महत्या करेगा। हमें भी विश्वास न था। परन्तु स्माउरी गम्भीर था। उसने यात्रियों को गालियाँ देकर भगा दिया! अजीब बात थी। सभी बेवकूफों की तरह सुबह से हँस रहे थे। स्माउरी ने जाकर सिपाही का हाथ पकड़ लिया और कहा, 'लाओ वह छुरी हमें दो।'

'तुम्हें क्या पड़ी है?' कहते हुए उसने छुरी दे दी।

स्माउरी ने छुरी मुझे दे दी और सिपाही को कैबिन में ले जाकर कहा, 'लेटो और सो रहो। तुम्हें किस चीज ने यों परेशान कर रखा है?'

सिपाही ने उत्तर न दिया।

'वह तुम्हारे लिए खाना लावेगा। और वोदका भी लाएगा। वोदका पीते हो न!'

हाँ, कभी-कभी।'

'लेकिन देखना उसे छूना मत। उसके कारण तेरा मजाक नहीं बना।'

'वे मुझे क्यों सताते हैं?' सिपाही ने पूछा।

स्माउरी ने कहा, 'यह मैं क्या जानूँ!'

मेरे साथ रसोई घर में आकर उसने कहा, 'देखो उसकी फिकर करना।'

मैं जब रोटी, गोश्त और वोदका लेकर पास गया तो देखा कि अब भी वह औरतों की तरह रो रहा है। मैंने कहा, 'खाना खा लो।'

'किवाड़ें बन्द कर दो!'

'अंधेरा हो जाएगा।'

'बंद कर दो नहीं तो वे झाकेंगे।'

मैं चला आया। मुझे उस पर बड़ी दया आई। एक यात्री ने एक बार कहा था, 'सब पर दया करना, किसी का जीवन सुखी नहीं है।'

स्माउरी ने पूछा, 'खाना दे आए। वह अब कैसा है?'

'मुझे उस पर दया आती है।'

'क्यों, अब क्या हुआ? अपनी दया यों बेकार मत जाने दे। ले एक सिगरेट। यह जगह तेरे लिए नहीं है।'

मुझे यात्रियों का व्यवहार अच्छा न लगा। किसी को सता कर वे कैसे आनन्द पाते हैं। वे मुझे अच्छे न लगे।

जहाज में नए पुराने यात्रियों के आने-जाने में कोई नवीनता न थी। मुझे दुःख था कि मैक्स जो सीधा और अच्छे स्वभाव का था वह निकाला गया। और बदमाश सर्जे अब तक था।

एक बार आधी रात बीत चुकी थी जब इंजन में कुछ गड़बड़ी आ गई। चिमनी से भाप निकल कर चारों ओर छा गई। मेरी खाट रसोई घर में लगी थी। ज्यों ही भड़ाका हुआ मैं जाग गया। चारों ओर सन्नाटा था। बस चिमनी घर से आवाज आ रही थी। फिर अचानक चारों ओर शोर हुआ! बाल खोले स्त्रियाँ, आँखें मलते पुरुष सभी इधर-उधर शोर करके भागते

और एक दूसरे से टकराते । संदूक व बिस्तरों से टकरा कर गिरते और खुदा की दुहाई देते । इस प्रकार की सनसनी मैंने पहली बार अनुभव की । यद्यपि मैं जानता था कि यात्रियों ने बेकार ही चीखना चिल्लाना शुरू कर दिया है। जहाज की रफ्तार भी पहले जैसी ही थी । चाँदनी के कारण उजाला भी काफी था परन्तु पागलों की तरह यात्री दौड़ दौड़ कर एक दूसरे से टकरा रहे थे । घबड़ाहट में एक पानी में घिर पड़ा और उसे बचाने में दो और गए । एक मोटा यात्री जिसने घबड़ाहट में बिना कमीज पहने ही पतलून पहन ली थी अपनी छाती पीट रहा था ।

मल्लाह यात्रियों को पकड़-पकड़कर खींच रहे थे । स्माडरी भी डाँट रहा था, 'तुम्हें शर्म आनी चाहिए । यह सब क्यों हो रहा है ? देखो वहाँ किनारा दिख रहा है । जो कूदे थे उन्हें भी जाल डाल कर पकड़ लिया गया है । देखो दो नावें दिख रही हैं ।' कहते हुए उसने तीसरे दर्जे के यात्रियों के सिर पर घूँसे मारने लगा ताकि वे बैठे रहें । यह सब हो रहा था तभी एक स्त्री ने स्माडरी के चेहरे पर चम्मच से मार कर कहा, 'यह क्या है ?'

तभी एक आदमी ने अपनी मूँछें उमेठ कर स्त्री को पकड़ लिया और कहा, 'यह क्या कर रही है ?'

स्माडरी जो स्त्री के व्यवहार के कारण घबड़ा गया था, मुझसे बोला, 'क्या बात है ? वह मुझपर क्यों टूट पड़ी ? मैं तो उसे जानता भी नहीं, अजीब बात है ।'

गर्मी समाप्त होने के पहले ऐसे दो सनसनीदार दृश्य देखने को मिले । यह किसी मुसीबत के कारण नहीं बल्कि झूठे डर के कारण । तीसरी बार दो चोर यात्रियों के बीच में पकड़े गये

जिसमें एक विदेशी कपड़े पहने था । उन्हें मल्लाहों ने अपने कब्जे में कर लिया तो सभी यात्री चीखने लगे ।

'चोर को छिपाना ! यह साफ है कि मल्लाह खुद उनसे मिले हैं ।

परन्तु आगे जहाँ भी जहाज रुका उन चोरों को अधिकारियों को सौंप दिया गया । मुझे आदमियों से—हर प्रकार के आदमियों से दया होती थी । मैंने चोरों के प्रति अपनी सहानुभूति स्माउरी से प्रदर्शित की । उसने सिगार के धुएं से अपना मुँह ढाँप लिया, 'सभी आदमी एक से नहीं होते । कुछ अच्छे भी कुछ बुरे भी । तू यह सब मतसोच । किताबें पढ़ तुझे सब अपने आप पता लग जाएगा ।

उसे खुश करने को मैंने एक किताब खरीद कर भेंट स्वरूप उसे दी । पाँच कोपेक की किताब—मल्लाह की कहानी जिसने पीटर को बचाया ।

'यह कौन सी किताब है मूर्ख ! मैंने तुझे अच्छी किताबों के लिये पढ़ना सिखाया था—यह क्या बेवकूफी की पुस्तक मेरे लिए लाया है ? बता इस में जो लिखा है वह क्या सच है ?'

'मैं नहीं जानता !'

लेकिन मैं जानता हूं ।'

मैं चला आया । सोचा वह ठीक कहता है । मैं छिपा कर पूरी पुस्तक पढ़ गया । बाद में जाना कि सचमुच यह अच्छी किताब नहीं है । इससे मुझे बुरा तो लगा परन्तु स्माउरी के प्रति आदर का भाव जागा । एक दिन उसने मुझसे कहा, 'अब तू कितना सीखेगा । यहाँ तेरे लिए स्थान नहीं है ।'

मैं खुद इसे अपनी जगह नहीं समझता था। खास कर सरेज के व्यवहार से मैं बहुत चिन्तित था। एक बार मैंने उसे चा का सामान चुरा कर यात्रियों को देते देखा था। इस चोरी के लिए स्माउरी मुझे कई बार आगाह भी कर चुका था।

अचानक मेरा नाविक का जीवन समाप्त कर दिया गया। एक शाम को कजान से निजनी के रास्ते में मुझे कप्तान के पास पेश किया गया। उस कमरे में स्माउरी भी स्टूल पर बैठा था। कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया गया तब स्माउरी ने पूछा। 'तूने सरजे को मेरा प्याला व तश्तरी दी है ?'

'उसने मेरे सूने में लिया होगा !'

कप्तान ने कहा, 'देखो, यह जानता है, देखा नहीं।'

स्माउरी उठ खड़ा हुआ, पूछा, 'तूने कभी सरजे से पैसे लिए हैं ?'

'नहीं।'

'कभी नहीं ?'

'कभी नहीं।'

फिर कप्तान से उसने कहा, 'यह कभी झूठ नहीं बोलता।'

'मुझे खुद नजर रखनी चाहिये थी।' उसने कहा।

निजनी पहुंचकर मैं निकाल दिया गया। मुझे आठ रूबल मिले जो अब तक की मेरी सब से बड़ी कमाई थी। स्माउरी ने कहा, 'आगे आँख खोल के रहना, समझे ! मुँह खोलकर मत चलना !'

उसने मुझे बाहों में उठा लिया, चूमा और डेक के नीचे उतार दिया। मुझे उसके और अपने दोनों के लिए दुख था।

मेरे आँसू न थम सके जब किनारे पर अकेला खड़ा मैं उसे जहाज पर जाते देख रहा था।

—सात—

नाना और नानी फिर शहर में वापस आगए थे। मैं उनके पास गया परन्तु मेरे मन में इस बात का गहरा संताप था कि सभी मुझे चोर क्यों समझते हैं? नाना ने अपनी स्वाभाविक खीझ के स्वर में कहा, 'कुछ पैसे बचाए हैं?'

'मैंने जो भी बचाया है सभी मेरा अपना है।' खिड़की पर बैठ कर मैंने उत्तर दिया और सिगरेट की डिबिया निकाल कर एक सिगरेट जलाया।

'तो यह बात है, जहर का स्वाद ले रहा है?' कहते हुए वह मुझ पर टूट पड़ा। मैं भी भिड़ गया। वह फर्श पर आरहा। फिर उसने धीमी आवाज में कहा, 'तूने अपने नाना को—माँ के बाप को गिरा दिया।'

बिना अपने कृत्य पर सोचे ही मैंने उत्तर दिया, 'इसके पूर्व तू भी मुझे अनेक बार गिरा चुका है।'

उठ कर वह मेरे पास बैठ गया और मेरे मुँह में लगी सिगरेट झटक कर खिड़की के बाहर फेंक दिया और कहा, 'अरे पागल! खुदा तुझसे उम्र भर इसका बदला लेगा! अरे मालकिन!' नानी को संबोधित करके बोला, 'इसने मुझे पटका है, पूछ ले।'

मुझसे बिना कुछ पूछे या कहे ही नानी ने झपट कर मेरे बाल नोंच कर मुझे तमाचे लगाए—'ले, ले, और ले।'

मुझे चोट तो न आई परन्तु नाना के कारण बहुत ग्लानि हुई। क्योंकि वह कुर्सी पर बैठकर अब हँस रहा था, 'ठीक, ठीक, बहुत ठीक।'

भाग कर मैं बाहर बरामदे में चला गया और एक कोने में लेट गया। थोड़ी देर बाद नानी ने आकर सांत्वना दी।—'मैंने तुझे पीटा थोड़े ही था यह 'तेरे बूढ़े नाना को दिखाने के लिए था। और उसे कष्ट न दिया करना। अब तू छोटा बच्चा भी नहीं है। एलेक्सी समझ ले कि अब वही बच्चा है।'

उसकी बातों से मुझे सचमुच सांत्वना मिली और मैं उससे लिपट गया। नानी ने कहा, 'जा, नाना के पास जा। पर उसके सामने सिगरेट न पीना, अच्छा!'

मैं पुनः कमरे में गया परन्तु नाना को देखकर बड़ी कठिनाई से हँसी रोक सका क्योंकि मेरे पिटने से उनके चेहरे पर सचमुच बच्चों की तरह परम संतोष का भाव खेल रहा था। अपने पावों को बार बार समेटता और फैलाता हुआ वह बैठा था। बोला,

'अरे डाकू! तू फिर आ गया। तू बिल्कुल अपने बाप की ही तरह है।'

मैं कुछ न बोला ताकि वह अपने स्मरण भर की गालियाँ दे ले। लेकिन थोड़े समय में ही उसने अपना धार्मिक भाषण शुरू कर दिया, 'खुदा का डर बहुत आवश्यक है। केवल खुदा ही तो हमारा परम मित्र है। आदमी तो आदमी का शत्रु होता है। तू फिर मालकिन के पास भाग जा और बसन्त आते ही किसी स्टीमर पर जाना। जाड़ा यहीं पर बिताना पर उन्हें यह पता न लगने देना कि बसन्त में तू भाग जाएगा।'

'उसे धोखा क्यों देने को कहते हैं ?' नानी ने पूछा ।

'बिना धोखा दिये कोई जी नहीं सकता । किसी ऐसा का नाम ले सकती है जिसने जिन्दगी भर किसी को धोखा न दिया हो ।'

रात को जब नाना प्रार्थना कर रहा था तब नानी और मैं खेतों में गये । दो खिड़कियों की वह झोपड़ी जिसमें नाना रहता था वह शहर के किनारे पर थी । कोनाली सड़क के पीछे, जहां उसका पहले एक मकान था । नानी ने हँसकर कहा, 'आखिर हम लोग फिर आ ही गए । इस बूढ़े को कहीं शान्ति नहीं मिलती । परन्तु यहां मुझे अच्छा लगता है ।

फिर बड़ी देर तक स्टीमर की बातें हुईं । मैं बहुत हिचक रहा था कि नानी को कैसे बताऊँ कि मैं क्यों निकाला गया । अन्त में मैंने बता दिया परन्तु उसे अधिक चिन्ता न हुई । उसने कहा, 'तू अभी भी काफी छोटा है । तूने अभी जीने की कला नहीं सीखी है ।'

'यह बात तो सभी कहते हैं । जीने की कला नहीं सीखा । पर तूने कहाँ सीखा है ?'

मैंने भी कहाँ सीखा ! तेरा नाना ही कितना बुद्धिमान और तेज है पर वह भी यह कला नहीं जानता ।'

उस रात निश्चय किया कि जीवन निर्वाह के लिये चिड़ियों का व्यापार शुरू करूँ । मैं पकड़ूँ और नानी बेचा करे । मैंने जाल खरीदा, पिंजरा बनाया । और सुबह से ही झाड़ियों में जा बैठता ।

उस दिन नानी ने पुकारा, 'अरे तू कहाँ है ?' वह रास्ते के एक किनारे बैठी थी । रुमाल पर खाने की चीजें बिखरी थीं ।

जिसमें रोटी और सेब भी थे। और इनके बीच में वोद्का का एक गिलास भी था।

'मैंने एक गाना बनाया है।'

'हाँ सुनाना तो।'

मैंने सुनाया। शायद कोई कविता थी—इस प्रकार,

'जाड़े के आगमन की बहुत सी निशानियाँ दिखाई पड़ रही हैं। ओ, गर्मी की धूप! तुम्हें विदाई का नमस्कार।'

वह बीच में ही बोल पड़ी, 'इसी तरह का एक गीत मुझे भी मालूम है परन्तु इससे अच्छा।' और उसने सुनाया,

'दूर, बहुत दूर, जंगल के पीछे गरमी की धूप अंधेरी रात में मिल गई है। मैं पीछे छूट गई। और सुबह मुझे वही रास्ता दिख गया जिसपर मैं मई में चल रही थी। सूखे खेत कितने बुरे दिखते हैं जहाँ मैंने अपनी जवानी खो दी। किसी ने जैसे मेरे कलेजे से मेरा हृदय निकाल कर बर्फ के नीचे गाड़ दिया है।'

गीत सुनकर मेरे अन्दर करुणा जाग गई। नानी ने कहा, 'देखा, कैसा गीत है। इसे एक युवा लड़की ने रचा था। मैं समझती हूं कि पहले उसका प्रेमी उसे प्यार करता रहा होगा फिर जाड़ों में वह किसी दूसरी लड़की से प्रेम करने लगा। उसे बड़ी व्यथा हुई और वह जी भरकर रोई। बिना अनुभव के इस प्रकार की बात नहीं जानी जा सकती। तुम्हीं देखो न यह कविता कितनी सजीव है।'

पहली बार उसने एक चिड़िया बेची थी। चालीस कोपेक पाकर वह चकित थी। बोली, 'तू क्या समझता है! बच्चों का खेल और यह आमदनी!'

'तूने तो बहुत सस्ते भाव में बेंच दिया।'

'सो कैसे ?'

'बाजार के दिनों में तो उसे प्रति चिड़िया एक रूबल भी मिल जाते। उसने उस दिन भी कहा, 'दिन भर घर में झाड़ू लगाकर और कपड़े धोकर स्त्रियां चौथाई रूबल पाती हैं और तू केवल चिड़िया पकड़ता है। लेकिन यह अच्छा काम नहीं है, एलेक्सी।'

लेकिन मुझे तो चिड़ियाँ फंसाने में मजा आने लगा था। मैं कितना आजाद था! मेरे इस कार्य से चिड़ियों को छोड़कर और किसी को कोई कष्ट नहीं होता था। मैंने धीरे धीरे चिड़ीमारों के सभी साधन जुटा लिए और पुराने चिड़ीमारों से काफी अनुभव भी पाया। मैं वोल्गा के किनारे किनारे लम्बी पूँछ वाली सफेद चिड़िया के लिए दो दो मील जंगलों में चलता जाता! अक्सर मैं शाम होते ही चल पड़ता और रात भर चिड़ीमारी करता। मेरी तो बरसात में भी अपने काम की आदत पड़ गई थी। अक्सर जाड़ों की रात में भी जब मैं कंधे पर बोरे में पिंजरा लादे और हाथ में जाल व डंडा लिये किसी गांव से निकलता तो चौकीदार चीख पड़ते, 'अरे कौन है! इस रात को शैतान के सिवा कौन घर से बाहर निकल सकता है?'

मुझे चौकीदारों से काफी डर लगता और उनके लिये मैं अपनी जेब में सदा ही पांच कोपेक घूँस देने को डाले रहता था। फोकीनोई गांव का तो मेरा मित्र बन गया था—वह कहता, 'फिर आगये! तुम भी तो किसी चिड़िया से कम नहीं जो सदा ही भागते रहते हो।'

उसका नाम था निफरोन। वह देखने में सन्यासी सा लगता वह अपने कोट से वह सेब, मटर व शलजम निकाल

कर मुझे देता, 'ले यार, तेरे लिये यह उपहार है। खाओ और मस्त रहो।' फिर बातें करते-करते वह गांव की सरहद तक आता और विदा देकर कहता, 'जा दोस्त, खुदा तेरे साथ है।'

मैं प्रातः के पूर्व ही जंगल में पहुंच जाता, जाल बिछा देता और अपना कोट बिछाकर दिन की इन्तजारी में सो जाता। फिर सूरज निकलता और चारों ओर उजाला फूट जाता। मुझे प्रातः का सूर्य बहुत अच्छा लगता। मुझे नाना द्वारा कई बार बताई गई एक कहानी याद आ जाती—माइकेल चेरनीगोवस्की और लेडी थियोडूा की कहानी। जब चिड़िया गाती हुई आतीं और मेरे जाल में फँस जातीं तो मैं पिंजड़े में उन्हें बन्द करते समय तनिक दुखी होता। शायद उन्हें केवल देखने में मुझे अधिक सुख मिलता। लेकिन इधर एक शिकारी के मन की कचोट भी तो थी।

मेरा शिकार का काम दोपहर तक पूरा हो जाता। मैं जङ्गल की राह ही वापस लौटता। यदि सड़क से आता तो गांव के युवक व बच्चे हमें वहीं ढेर कर देते और सब छीन भी लेते। इसका तो मुझे अनुभव भी हो चुका था।

मैं अंधेरा होते-होते घर आया, थका, भूखा। नाना ने भाषण दिया, "यह व्यापार बन्द कर दे। कोई जिन्दगी भर चिड़ियों की हत्या नहीं करता रहता। कोई और काम खोजो जहाँ तुम्हारी योग्यता निखर सके। आदमी को यों बिना काम ही जीवन बिता देने से जिन्दगी नहीं मिलती। जीवन भी कमल की तरह ही है कि एक कमल को किसी अलबेले ऐसा उगाया जाय कि उससे तीन कमल हो सकें। तुम क्या समझते हो कि जिन्दगी

कोई खेल है ? नहीं, यह खेल नहीं है। ऐसा जिओ कि लोग जानें कि दुनिया के साथ जी रहे हो। और किसी पर निर्भर न रहो चाहे जो भी परिस्थिति हो।'

वह रात बड़ी देर तक यह सब कहता रहता। मैं जीवन के बारे में सोचता। मैंने जैसा देखा है। कोजाक और फौजी बहुत मस्ती और बेफिक्री का जीवन बिताते थे। मैं अक्सर उनकी परेड देखता और उनके पीछे पीछे गलियों में तथा उनके बैरेक के पास तक जाता। उनका स्वस्थ और ताजा चेहरा यों दिखता जैसे नया बना सिक्का।

एक दिन एक युवक अफसर ने एक अजीब मोटी सी सिगरेट मुझे दी। 'पियो, पियो ! मैं सबों को नहीं देता, तुम्हें भी नहीं मिलनी चाहिये। यह बड़ी कीमती है।'

मैंने जलाया और वह कुछ दूर हट गया। अचानक लाल लपटें उठीं। मेरी उंगलियाँ, नाक और आँखें जल गईं और मुझे बहुत जोर की खाँसी भी आई। मैं तो अन्धा होकर तड़पने लगा और सिपाही इसमें मजा ले लेकर हँसने लगे। मैं घर भागा। उँगलियाँ जल गई थीं। चेहरा सूज आया था।

आठ

जिस दिन पहली बर्फ गिरी उसी दिन नाना मुझे नानी की बहन के यहाँ ले गया। पिछली गर्मियों में मुझे जो भी अनुभव प्राप्त हो गए थे उससे मैं अपने को बहुत अधिक बूढ़ा और होशियार मानने लगा था।

शाम को मैं बैठकखाने में बुलाया गया और मुझसे पूछा गया, 'बता, नाव पर क्या-क्या हुआ?'

दरवाजे के पास बैठकर मैंने अपनी कहानी बता दी। आज विवशता के कारण जो जिन्दगी मुझे अपनानी पड़ी थी उसके बाहर के जीवन की बातें करना अच्छा लगता था। मालकिन कभी जहाज पर नहीं चढ़ी थी। वह बहुत चकित होकर पूछ रही थी, 'क्या उसमें कुछ खतरा न मालूम हुआ?' मैं न समझ पाया कि उसमें भला क्या खतरा हो सकता था।

'नाव यदि डूब जाती तो सभी लोग मर गए होते?'

इस प्रश्न पर मालिक खूब हँसा और बुढ़िया ने बताया, 'नाव की तरह जहाज पानी में खेई नहीं जाती बल्कि चक्कों के सहारे वह पानी की सतह पर चलती है।'

फिर मुजरिमों की बातें होने लगीं। मालकिन को मुजरिमों से नफरत थी। 'उनसे बहुत नुकसान होता है,' उसने कहा, 'विशेषकर बड़ी उम्र वालों को। ग्रेवेस्का में जहाँ मैं रहती थी

वहीं एक जवान लड़की थी। वह बहुत ऊँचे खानदान की थी साथही वह सदा पुस्तकें ही पढ़ती रहती थी। फिर जानते हो क्या हुआ। वह एक पादरी से प्रेम करने लगी। जिसकी स्त्री ने बीच सड़क पर तमाम आदमियों के सामने उसकी बेइज्जती की। ओफ वह दृश्य कितना भयानक था।'

एक बार मैं वहाँ के नौकरों के सामने अपने अनुभवों की कहानियाँ सुना रहा था कि मुझे कहना पड़ा, 'साफ कहूं—अब मुझे कुछ कहना नहीं है।'

वे चीख पड़े, 'क्या कहा ?'

उस समय घर में दो छोटे बच्चे थे। दोनों की दाइयों से मालकिन कभी संतुष्ट न हो पाई। फलस्वरूप वह रोज ही बदली जातीं। मुझे उन बच्चों की देखभाल करनी पड़ती। उनके कपड़े साफ करने पड़ते। एक दिन धोबिन ने कहा, 'आखिर तू औरतों के काम क्यों किया करता है।'

ये धोबिनें अधिकतर यारोस्लो की ओर की ही होती थीं। और ऐसा लगता था कि वे संसार के सम्बन्ध में बहुत अनुभव भी रखती थीं। उन सबों में एक थी नातालिया कोजलोवस्की जो कहानियाँ खूब सुनाती। उम्र उसकी लगभग तीस की थी। चेहरा भी अच्छा था, मजबूत थी और आँखें व जीभ खूब तेज थीं। उसके साथ की धोबिनें उससे अपने हर बात में सलाह लेतीं। जब वह दो बाल्टियों में गीले कपड़े भरे आती तो सभी स्वागत करतीं।—'तुम्हारी बेटी कैसी है ?'

'स्वस्थ है और खूब पढ़ रही है।'

'ठीक है वह लड़की महान महिला होगी।'

'इसीलिए तो उसे मैं ऊँचे स्कूल में पढ़ा रही हूँ।'

मैंने नाविकों को, सिपाहियों को, किसानों को औरतों के बारे में बातें करते सुना है पर इन औरतों को मैंने सबों से भिन्न पाया। पहले मैंने सभी पुरुषों को सुना था कि वे अपनी स्त्रियों के बारे में सदा ही प्रशंसा के शब्द कहते थे। तभी से मैं यह अनुभव कर रहा था औरत बहुत शक्तिशाली होगी।

जब मेरे पास कुछ समय बचता तो मैं छावनी वाले बाहरी बरामदे में जाकर लकड़ी चीरता। यहाँ अकेले मुझे बहुत अच्छा लगता परन्तु यह अवसर कम ही मिल पाता। क्योंकि अफसरों के अर्दली यहाँ आकर मुझे घेर लेते और जहाज की कहानियाँ सुनाते। मेरे पास बहुत आने वालों में दो थे—यरमोखीन और सिदोरोव। पहला तो कलुगा से आया था, लम्बा आकर्षक व्यक्तित्व, छोटे से सिर में बहुत चमकदार आँखें और सारी देह में चमड़े पर उभरी मोटी-मोटी नसें! किसी भी स्त्री को देखकर उसकी आँखें फड़फड़ाने लगतीं और वह यों झुक जाता कि कहीं गिर न पड़े। घर की नौकरानियों के प्रति उसका आकर्षण कभी-कभी सब को आश्चर्य में डाल देता था। और सिदोरोव जो तुला से आया था बहुत भावुक मधुर-भाषी बातें करते समय वह किसी कोने में ही आँखें गड़ाये रहता।

'क्या देख रहे हो।'

'मैंने समझा वहां कोई चूहा है। मुझे चूहे अच्छे लगते हैं।'

मैं उन अर्दलियों के घर उनके पत्र लिख देता जो अधिकांश प्रेम पत्र ही होते। मुझे भी यह लिखते समय

बहुत मजा आता। खासकर सिदोरोव का पत्र लिखते समय। हर शनिवार को वह मुझसे तुला में अपनी बहन के पास मुझसे खत लिखाता। अपने पास बैठकर बहुत धीरे-धीरे वह बताता,

'शुरू करो, वही रोज की तरह—'प्यारी बहन, आशा है तुम पूरी तरह स्वस्थ व प्रसन्न होगी।' अब लिखो 'तुमने रूबल भेजा सो मुझे मिला। इसके लिये धन्यवाद पर इसकी कोई आवश्यकता न थी। हम लोग यहाँ बहुत आराम से रह रहे हैं'- - - -लेकिन हम तो यहाँ कुत्तों से भी बुरी जिन्दगी बसर कर रहे हैं। लेकिन इसके लिखने की क्या जरूरत। वह लड़की है—चौदह वर्ष की। उस पर अपनी मुसीबत का बोझ क्यों डाला जाये!' 'अब आगे लिखो।'

'अगर तुमसे कोई प्रेम की बातें करे तो उस पर विश्वास न करना। समझना कि वह तुम्हें बेवकूफ बना रहा है। उसका सारा नाटक तुम्हें बरबाद करने को ही है।' कहते-कहते उसकी आँखें भर आतीं। आवाज रुक जाती। मैं पूछता।

'क्या बात है?'

कुछ नहीं तुम लिखे जाओ। 'और खासकर भलेमानुसों का, कभी विश्वास न करना। वे पहली निगाह में ही लड़कियों को गुमराह कर देते हैं। उनमें पास इस कार्य के लिए रुपये भी होते हैं।'

पत्र लिखते-लिखते मेरे कलेजे में टीस होने लगी। उस सिदोरोव और उसकी बहन की दशा पर मेरे आँसू आ जाते।

और जब उसकी बहिन का खत आता तो वह मेरे पास भागा आता, 'जल्दी से पढ़कर सुनाओ तो!'

यों तो वह काफी सीधा और अच्छे स्वभाव का था परन्तु औरतों के प्रति उसका अजीब दृष्टिकोण था। अक्सर मुझे उसकी प्रेमलीलाएँ देखने को मिलतीं। उनका आरम्भ और अन्त दोनों ही अजीब और बुरा होता। वह स्त्रियों को किस प्रकार भड़काता मैं खूब देखता फिर एक दिन मैंने पूछ ही तो लिया तो उसने उत्तर दिया।

'यह चीजें तुम्हारे जानने की नहीं हैं। यह गलत और पाप के कर्म हैं। तुम अभी यह समझने के लिए बहुत छोटे हो।'

लेकिन एक बार मैं साफ-साफ उत्तर पा गया, 'क्या तुम समझते हो कि, सिदोरोव ने कहा, 'स्त्रियाँ यह नहीं समझतीं कि उन्हें बेवकूफ बनाया जा रहा है। वे सब ठीक-ठीक समझती हैं। यह खेल ही ऐसा है कि हर कोई बेईमानी करता है। यह कोई प्यार नहीं है बल्कि एक खेल है। समय आएगा तो तुम्हें भी इसका अनुभव होगा।'

मैं अपने चारों ओर दुखी लोगों को ही देखता था। एक दिन मैंने सिपाहियों से एक कहानी सुनी जिसने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। एक दर्जी की दूकान पर कपड़े काटने वाला एक विदेशी था। उसकी शादी एक ऐसी स्त्री से हुई थी जिसके कोई संतान न हुई थी और वह दिनभर किताबें पढ़ा करती थी। वे पति-पत्नी छुट्टी के दिन थियेटर जाने के अलावा कभी भी बाहर न निकलते थे। पति तो रात को भी काम में व्यस्त रहता। उसकी स्त्री कभी-कभी पुस्तकों की खोज में पुस्तकालय भी जाती थी। वह स्त्री तो थी परन्तु देखने में बिल्कुल लड़की मालूम होती थी। चिड़ियों की तरह भोला और आकर्षक उसका चेहरा था। मेरे मन में वहाँ की अन्य स्त्रियों के अलावा इसके प्रति ही अधिक आकर्षण हो गया था। लोगों का कहना था कि पुस्तकों से उसका दिमाग खराब होगया है। और उनकी

एक कानी नौकरानी थी जिसकी दूसरी आँख से भी कम सूझता था। मैंने सोचा कि यह तीनों यहाँ गलत स्थान पर आ गए हैं।

तभी मैंने सुना कि किस प्रकार सिपाही लोग उसके लिए योजना बना रहे हैं। एक-एक करके वे रोज उसे पत्र लिखते—उसके सौंदर्य की प्रसंशा—प्यार की याचना!

इसी घटना की ओर इशारा करके सिदरोव ने कहा, 'कोई भी औरत इनसे अनजान नहीं रहती। वह सब जानती रहती है।'

एक दिन मैं सचाई जानने को जब उसकी कानी नौकरानी चली गई तो उसके रसोईघर में गया। वहाँ कोई न था, मैं दूसरे कमरे में गया। एक मेज पर वह स्त्री बैठी थी। एक हाथ में एक प्याला और दूसरे में पुस्तक लिए हुए। मुझे देखते ही पुस्तक अपने कलेजे से लगाकर उसने कहा, 'कौन है! कौन है?'

मैंने अपने बारे में बताया। वह पीले रंग का फ्राक पहने थी और उसके सुन्दर बाल उसके कंधेपर थे। मुझे वह स्वर्ग की परी सी दिखी। उसकी आँखों में पहले क्रोध था जो अब आश्चर्य में बदल गया था।'

मैं वापस चला तो उसने कहा, 'जरा रुकना।' फिर प्याला पुस्तक टेबिल पर रख कर उसने कहा, 'तू अजीब लड़का है—इधर आ।'

मैं लजा कर उसकी ओर बढ़ा। उसने मेरा हाथ अपनी छोटी-छोटी उंगलियों से पकड़ लिया, 'सच कहना किसी ने तुम्हें यहाँ आने को सिखाया तो नहीं है?'

'नहीं! मैं कहने आया हूं कि तुम जल्दी ही यहाँ से दूर चली जाओ'

'क्यों ?'

'नहीं तो वे सिपाही तुम्हें धोखा देंगे।'

सुनकर वह अट्टहास करके हँसी और बोली, 'क्या तुम पढ़ रहे हो ? क्या तुम्हें किताबें अच्छी लगती है ?'

'मेरे पास पढ़ने लिखने को समय नहीं है।'

'अगर चाहो तो समय अवश्य मिल सकता है।, कहते हुए उसने दो ग्रेवेन का एक सिक्का मुझे दिया। जिसे इन्कार करने में मैंने अपने को असमर्थ पाया।

उसके बाद कई दिनों तक मेरे मन पर वह स्त्री छायी रही। एक बार उससे मैं फिर मिला। परन्तु इस बार देखा कि उसके सिर पर लाल रूमाल बँधा था और आँखें सूजी हुई थीं। उसने मुझे काली जिल्द की एक किताब दी परन्तु मैं उससे कारण न पूछ सका। मैं किताब लेकर चुपचाप भारी मन से लौट आया। किताब को मैंने बड़े यत्न से रखा। पहले तो उसपर कागज चढ़ाया फिर नई धुली कमीज में लपेट लिया ताकि कोई गन्दी या खराब न कर दे ?'

वे लोग नेवा* नामक पत्रिका के ग्राहक थे। वे उसे सिलाई की गई डिजाइनें और पहेलियों के लिए ही मंगाते थे कभी पढ़ते न थे।

शनिवार को मैंने उस पुस्तक का कपड़ा उतारा और पढ़ा। शाम तक मैं खिड़की पर बैठा पढ़ता रहा यह पुस्तक एक उपन्यास थी। मैं बाद में रसोईघर में जाकर पढ़ता ही रहा कि दरवाजे की घंटी बोली। मैं फौरन समझ गया कि कौन

---

*नेवा—एक प्रसिद्ध पत्रिका जो [illegible] (रूस के [illegible]) के पास से होकर बहने वाली नदी के नाम पर थी।

और क्यों बजा रहा है। मोमबत्ती पूरी जल गई थी। झटपट मैंने पुस्तक चुल्हे के नीचे छिपा दी। तभी घर की दाई ने डाँटा, 'क्या तू बहरा है ? सुनता नहीं कि घंटी बज रही है।'

दौड़कर मैंने दरवाजा खोला। मालिक ने डाँटा 'क्या सो गया था।' भीतर आते ही बुढ़िया ने देखते ही जान लिया कि मोमबत्ती क्यों समाप्त हो गई। इसने पूछा, 'बता तू क्या कर रहा था ?' मैंने उस समय तो कोई उत्तर न दिया परन्तु जब मालिक व मालकिन खाने की मेज पर बैठे तब बुढ़िया ने मेरा मामला पेश किया—'देखो, इससे पूछो कि पूरी मोमबत्ती कैसे जला दी। इस तरह एक दिन यह घर में भी आग लगा देगा।'

बहुत हल्की सी डाँट पड़ी और अन्त में जब मालिक मालकिन और बुढ़िया भी सो गई तो मैंने उस गुप्त स्थान से पुस्तक निकाला। और खिड़की के पास लाया। चांदनी रात थी, परन्तु इतने बारीक अक्षर पढ़ने के लिए अपर्याप्त। फिर भी पढ़ने ही लगा कि वह बुढ़िया चुपचाप नंगे पाँव आई और इस प्रकार घूरने लगी कि जैसे अब पुस्तक छीनकर फाड़ डालेगी। परन्तु उस समय कुछ न हुआ और नाश्ता के समय मालिक ने डांटकर पूछा, 'तुझे वह किताब कहाँ से मिली ?'

दोनों महिलाओं ने एक दूसरे से कुछ कहा तो विक्टर ने पूछा, 'यह किसकी बदबू है ?'

जब मैंने कहा कि मुझे पादरी ने दिया है तब उन्हें आश्चर्य हुआ कि पादरी ने उपन्यास कैसे दिया परन्तु वे चुप हो गए और बाद में एक भाषण दिया,

'पुस्तकें पढ़ने वाले, लुटेरे और हत्यारे होते हैं।'

'तुम क्या पागल हुए हो जो इस तरह की बातें उसके दिमाग में भर रहे हो।' मालकिन ने कहा।

मैं पुस्तक को लेकर सिदोरोव के पास गया और उससे अपनी पूरी कहानी बतादी। उसने साफ तौलिए में पुस्तक लपेटी और संदूक में छिपा दिया। कहा, 'उनकी बातें मत सुनो। यहाँ आकर पढ़ाई किया करो और मैं यदि न रहूं तब वहाँ उस मोमबत्ती के पास चाभी रखी रहेगी। निकाल लिया करना।'

मेरे मालिक द्वारा पढ़ाई के लिए इतनी नाराजी ने मेरे मन में पढ़ने के लिए अजीब भावना भर दी। मैं पुस्तक समाप्त करने के लिए पागल हो रहा था। बुढ़िया सदा मुझपर नजर रखती और कहती, 'किताबी कीड़े! किताबें पढ़कर आदमी पतित होता है। उस किताबी कीड़े को देख-उस औरत को। वह इतनी बेकार है कि बाजार से सौदा भी नहीं खरीद ला सकती। लेकिन वह यह जानती है कि अफसरों से किस प्रकार व्यापार की बातें करे।'

मेरे मन में हुआ कि मैं चिल्ला उठूँ, 'यह झूठ है।' पर मैं डर के मारे कह न सका। उन्हीं दिनों एक बार मुझे रास्ते में उसकी रसोइया मिली और कहा, 'आज ही पुस्तक वापस कर देना।'

दोपहर को खाना-खाने पर जब घर में सभी झपकी लेने लगे तब मैं बहुत सकुचाता हुआ उसके पास पहुँचा। आज वह दूसरे तरह के कपड़े पहने थी—ब्लाउज और स्कर्ट। उससे यह बताते हुए मेरी आंखों में आंसू आ गए कि मैं पुस्तक समाप्त नहीं कर पाया क्योंकि मुझे पढ़ने की इजाजत नहीं मिली।

'ओफ़! कैसे बेवकूफ हैं वे लोग!" उसने अपनी पुतलियाँ हिलाकर कहा, 'तेरा मालिक तो अच्छा आदमी है! परन्तु तू चिन्ता न कर। मैं उसे पत्र लिखूँगी।'

'नहीं, नहीं मत लिखना ! मैंने कहा, 'वे तुम पर हँसेंगे और हँसी उड़ाएँगे। क्या मालूम नहीं कि वे सभी तुम्हारे विरोधी हैं। वे तुम पर हँसते और मूर्ख समझते हैं।'

मेरी बात सुनकर उसने अपनी उँगली ओठों पर रख ली। मैंने संकोच से सिर नीचा कर लिया। परन्तु वह कुर्सी पर बैठकर बेतरह हँसने लगी। 'वाह वाह।'

फिर मुझ पर निगाह जमाकर उसने कहा, 'अच्छा, तो क्या करना चाहिए यही बताओ ! तुम तो अजीब आदमी हो।'

तभी अचानक मैंने सामने के शीशे में अपनी शक्ल देखी, मेरे सिर के बाल सचमुच इतने बढ़ गए थे कि अजीब अवश्य लगते थे। तभी वह बोली 'अच्छा, जब भी तुम्हें पढ़ने को समय मिले तो आकर यहीं पढ़ा करना। मैं किताबें दूँगी।'

मैंने बड़ी करुण दृष्टि से रैक में लगी पुस्तकें देखीं। उस स्त्री ने हाथ बढ़ाकर कहा, 'अच्छा विदा।'

बहुत लज्जा से मैंने उसका हाथ छुआ और भागा।

मुझे वह जाने क्यों बहुत अच्छी लगी।

नौ

कपड़े काटने वाले की स्त्री की सभी पुस्तकें बड़ी कीमती दिखती थीं। इसलिए मुझे हर समय डर लगा करता था कि कहीं बुढ़िया किसी दिन उन्हें चूल्हे के हवाले न कर दे।

मैं सुबह जिस दूकान पर रोटी खरीदने जाता था वहीं सस्ती पुस्तकें भी मिलती थीं। इसका मालिक एक कुरूप, मोटे ओठों वाला, सफेद आँखों वाला आदमी था। जिसे देखकर ही घृणा उपजती थी। उसने अपनी दूकान को जवानों तथा आवारा स्त्रियों के मिलने का अड्डा बना रखा था। उसी दूकान पर मेरे मालिक का भाई भी जाता-पीता-जुआ खेलता। लेकिन इससे भी अजीब बात यह थी कि दूकानदार की स्त्री व उसकी बहिन भी शराब के नशे में चूर सिपाहियों और अन्य इसी प्रकार के ग्राहकों से हँसी दिल्लगी करतीं परन्तु वह बुरा न मानता। इतना होने पर भी वह सदा यही कहा करता था कि उसका रोजगार ठीक नहीं चल रहा है।

मेरा पढ़ना भी अजीब था। जिस पुस्तक को मैं निश्चित समय में पढ़ना चाहता वह मुझे सबों के सो जाने के बाद मोमबत्ती के सहारे पढ़नी पड़ती। लेकिन वह खूसट बुढ़िया यह भी न देख सकती और प्रतिदिन रात को सोने के पूर्व वह किसी लकड़ी के सहारे मोमबत्ती नाप लेती और सुबह मोमबत्ती छोटी मिलने पर वह उपद्रव मचाती।

एक बार तो विक्टर ने उसे बताया, 'वह मोमबत्ती के सहारे ही तो पढ़ता है। मैं जानता हूं कि वह किताबें कहां से पाता है—उसी स्टोर से। वहाँ रखता है छिपाकर।'

बुढ़िया मेरे सुरक्षित स्थान की ओर दौड़ी। किताब उसके हाथ लग गई और उसने उसे जला दिया। इससे मुझे क्रोध हो आया। परन्तु विवश होकर मैं चोरी-चोरी पढ़ाई करता ही रहा। लेकिन बुढ़िया के हाथों काफी पुस्तकें पड़ गईं और उसने उन्हें नष्ट कर दिया। फलस्वरूप मैं दूकानदार का सैंतालिस कोपेकों का कर्जदार हो गया। अपने कर्ज के लिये वह मुझे सताने लगा। एक दिन बहुत रूखाई से उसने कहा, 'क्या तू मेरी दूकान पर दान लेने आता है? मैं समझता हूँ कि तुझे जेल भिजवाकर ही मुझे रुपये वसूलने पड़ेंगे।'

मेरी कमाई का भी एक पैसा मेरे हाथ न पड़ता। पूरा रुपया सीधे नाना के पास जाता। मैं बहुत घबड़ा गया कि मेरे लिये क्या होने वाला है? एक बार तगादे के रूप में उसने मुझे कुछ अनुचित बातें कह दीं। मैंने उसके तराजू पर से एक बड़ा बटखरा उठाया और तानकर उसके सिर पर मारा। पर वह बच गया और बोला, 'क्या बात है? मैं तो मजाक कर रहा था।'

मैं जानता था कि वह मजाक नहीं था। मैंने अन्त में निश्चय किया कि अब मैं उतना रुपया चोरी करके ही उससे छुट्टी पाऊँगा।

अचानक दूसरे दिन मालिक के कपड़े साफ करते मैंने उसकी पतलून की जेब में कुछ रुपयों की खनखनाहट सुनी। कुछ तो जेब से निकलकर फर्श पर बिखर

भी गए। एक बार दो रुपये सीढ़ी के पास गिरे थे तब मैं कई दिन बाद मालिक को वापस कर आया था। तब मालकिन ने मालिक से कहा था, 'जेब में पैसे गिनकर रखा करो।'

'नहीं वह चोरी न करेगा। मैं जानता हूँ।' मालिक ने कहा था।

वह घटना याद आ गई। चोरी की हिम्मत न पड़ रही थी। कई बार मैंने जेब से रुपये निकाले गिने और फिर रख दिये। पूरे तीन दिन तक मैं इसी उधेड़बुन में रहा अन्त में मैंने बहुत आसानी से और झटपट फैसला कर लिया।

मालिक ने अचानक कहा, 'पेशकोव क्या बात है? तू कैसा होता जा रहा है? क्या तेरी तबियत ठीक नहीं है?

मैंने उसे मन की सच्ची बातें बता दीं। दिया तब उसने कहा, 'देख, यह तेरी पुस्तकों के ही कारण है। अभी या कभी भी निश्चय रूप से पुस्तकें आदमी को मुसीबत में डाल ही देती हैं।'

उसने मुझे आधा रूबल दिया और सावधान किया 'लेकिन इसके बारे में मेरी पत्नी या माँ से कुछ न कहना नहीं तो बड़ा उपद्रव होगा।' फिर तनिक हँसकर कहा, 'और पुस्तकों के लिये चिन्ता न करना। मैं इस नये वर्ष से एक पत्रिका का ग्राहक बन जाऊँगा तब तुझे पढ़ने को आराम हो जायगा।'

चिल्लाकर पढ़ना मुझे पसन्द न था क्योंकि जोर से पढ़ने से मेरी समझ में कुछ न आता था। मेरा मालिक

'दी मास्को लीफ' का ग्राहक बन गया। मैं उनके नाश्ते के समय जोर-जोर से पढ़कर पत्रिका के कुछ अंश उन्हें सुनाता और वे खुश होते।

कभी-कभी 'दि मास्को लीफ' में लिओनिड ग्रेव की कवितायें होतीं जो मुझे बहुत प्रिय लगतीं। मैंने उसकी कुछ कवितायें नकल भी कीं। परन्तु उन दोनों स्त्रियों की राय थी, 'कविता तो केवल नाटक के पात्रों के बोलने की भाषा है।'

वे जाड़े की रातें मुझे अपने जीवन की परीक्षा की रातें मालूम हुईं। खिड़की के बाहर रात मुर्दे की तरह खामोश थी। वहीं एक कमरे के एक कोने में मैं भेड़िये की तरह रातभर दुबका पड़ा रहता था।

कमरे में मेज के एक कोने पर मालकिन बैठकर सीना-पिरोना करती। उसके सामने मेज पर झुक कर विक्टर बैठता जो अपना नकशे बनाने का काम करता रहता और बीच बीच में चिल्ला उठता—'टेबिल मत हिलाओ।'

दूर पर मालिक बैठता जिसके आगे सुन्दर कढ़ाई का कपड़ा बिछा रहता। अक्सर जब वह मुझे खाली देखता तो अपने काम की मदद के लिये पुकार लेता।

मुझे मालिक के काम में मदद करने में आन्तरिक प्रसन्नता होती। उसके साथ ही मैं सुई से काम करता। ऐसी व्यस्तता में उसके बालों की एकाध लटें उसके माथे पर झूलने लगतीं। वह अक्सर काम करते-करते रुक जाता और भावमग्न होकर कुछ सोचने लगता। तब उसकी पत्नी डांट देती 'क्या सोचने लगे।'

कुछ नहीं, कुछ खास नहीं ' वह कहता और फिर काम में जुट जाता। परन्तु ऐसे प्रश्नों से मैं खीझ उठता। भला कोई अपने मन में उठे विचारों को भी बताने को बाध्य क्यों हो?

"दि मास्को लीफ' का अङ्क मेरा शाम का पूरा वक्त काटने को काफी न होता। और मैं दूसरी पत्रिकायें भी अपने बिछौने के नीचे रखने लगा। एक दिन मालकिन ने पूछा, 'अरे, उनमें पढ़ने को क्या है? केवल तस्वीरें होती हैं।'

बिछौने के नीचे धीरे-धीरे अच्छा खासा पुस्तकालय तैयार हो गया। मेरा काफी समय कटने लगा। एक दिन मेरे सौभाग्य से शराबी नौकरानी के न होने के कारण बुढ़िया बाग में सोई। मुझे विक्टर की चिन्ता न थी क्योंकि सबों के सो जाते ही वह चुपचाप कपड़े पहन कर गायब हो जाता फिर सुबह के पहले कभी वापस न आता। मुझे अलग से कोई मोमबत्ती जलाने को न मिलती। न खरीदने की मुझे सुविधा ही थी। इसलिए दूसरों की जली हुई मोमबत्तियों की मोम इकट्ठी करके मैं उसमें सूत लगाकर अपने लिए काम चलाऊ मोम बत्तियाँ बना लेता।

उन सचित्र पुस्तकों से मैंने कुछ अनजाने देशों और वहाँ के निवासियों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया।

उन्हीं दिनों एक रात को जब हम लोग सो रहे थे तभी अचानक गिरजे की घण्टियाँ बज उठीं। सभी जाग गए। सभी खिड़कियों से बिना पूरे कपड़े पहने ही लोग झाँकने लगे। और पूछने लगे, 'क्या बात है? क्या कहीं आग लगी है?'

तभी जीन कसा हुआ एक घोड़ा आगया। बुढ़िया ने कहा कि पादरी को किसी ने लूटा होगा।

मालिक ने कहा, 'क्यों माँ, चुप भी रहो। देखें क्या बात है ?'

तभी विक्टर कपड़े पहन कर आया, बोला, 'मैं जानता हूँ क्या बात है।'

मालिक की आज्ञा से मैं छत पर यह देखने गया कि कहीं आकाश लाल तो नहीं। परन्तु आकाश ठीक था। मैंने आकर यही सूचना दी।

'ओफ़ ! फिर क्या है ?' मालिक ने कहा। उसने अपनी कालर उठा ली और बाहर चला।

''बाहर मत जाना ! बाहर मत जाना !' उसकी पत्नी ने रोका।

'बेवकूफ़।'

विक्टर कहे जा रहा था, 'मैं जानता हूँ कि क्या बात है।' वह भी भाई के पीछे बाहर चला गया लेकिन दूसरे ही क्षण दरवाजे की घंटी बज उठी। मालिक ने खामोश सीढ़ी पर आकर किवाड़े बन्द कर लिए। धीरे से कहा, 'ज़ार की हत्या की गई है।'

'ज़ार की हत्या ? कैसे ?' बुढ़िया ने पूछा।

'हाँ हत्या। मैंने एक अफसर से पूछा है—देखें अब क्या होता है।

तभी विक्टर भी आया और लापरवाही से अपना कोट खींच कर उसने कहा, 'मैं जानता था कि लड़ाई छिड़ने वाली है।'

सभी ने चा की मेज़ पर भी धीरे-धीरे इसी विषय की बहस जारी रखा। गलियों में भी खामोशी छा गई थी। घण्टियाँ भी चुप हो गईं थीं।

कई दिनों तक चारों ओर इसी की चर्चा रही। प्रत्येक व्यक्ति इसी प्रकार की बातों को एक रहस्यमय फुसफुसाहट के साथ करते थे। मैं बहुत कोशिश करके भी घटना के विषय में अधिक न जान पाया। अन्त में, ऊब कर मैंने सिदोरोव से पूछा तो उसने डाँट दिया, 'जानता नहीं इस विषय की चर्चा करने की मनाही है।'

मेरी उत्सुकता कम न हो सकी। क्योंकि प्रतिदिन ही विक्टर इसीके संबंध की कोई न कोई नई व अजीब सी बातें आकर घर में बताता।

रविवार को गिरजा से लौट कर बुढ़िया ने पूछा कि खाना तैयार है? मैंने घबड़ाहट में 'हाँ' कह दिया यद्यपि खाना तैयार न था। फल स्वरूप मुझ पर इतनी मार पड़ी कि मैं अधमरा हो गया और मुझे दूसरे दिन मेरा मालिक अस्पताल ले गया।

एक बहुत ही रूखे और कुरूप दिखने वाले डाक्टर ने मेरी परीक्षा की और कहा, 'यह तो अत्याचार की हद है। इसकी तो जाँच-पड़ताल होगी।'

सुनकर मालिक घबड़ा गया। उसने फुसफुसा कर डाक्टर से कुछ कहा। परन्तु डाक्टर ने डाँट दिया, 'नहीं, नहीं। यह नहीं हो सकता।'

फिर डाक्टर ने मुझसे पूछा, 'क्या तुम शिकायत करना चाहते हो?'

मैंने कहा, 'नहीं नहीं, मुझे केवल आराम कर दो।'

मुझे दूसरे कमरे में ले जाकर दवा लगाई गई। डाक्टर ने पूछा, 'क्या तुम्हें बहुत मार पड़ी है ?'

'नहीं पहले इससे भी अधिक मार खा चुका हूं।' मेरे उत्तर पर डाक्टर हँसा और मुझे पुनः लाकर मालिक के सुपुर्द किया और दूसरे दिन फिर आने की हिदायत की।

रास्ते में मालिक ने कहा, 'पेश्कोव ! जरा सोच लो कि मुझे तुमसे अधिक मार पड़ती थी और तेरे लिए तो कम से कम मैं दया दिखाने को हूँ ही जब कि मेरे लिए कोई न था। दूसरे को सताने के वख्त आदमी बिलकुल राक्षस बन जाता है।'

मालिक की बातों से मुझे काफी सांत्वना मिली। घर आने पर देखा कि स्त्रियों ने डाक्टर की बातों को सुनने में काफी दिलचस्पी प्रकट की। फिर तो सबों को जैसे विवश होकर मेरे प्रति दया दिखानी पड़ी। सबों ने चूमचूम कर मेरा जी भर दिया।

मेरे शिकायत न करने की बात से सबों ने मुझे बहुत स्नेह दिया और इससे लाभ उठाने को मैंने आज्ञा मांगी कि मैं उस कपड़े काटने वाले की स्त्री से किताबें मांग कर पढ़ सकूँ। 'ना' करने की उनमें शक्ति न थी। यद्यपि उस बुढ़िया ने कह ही दिया, 'कितना धूर्त राक्षस है !'

दूसरे दिन मैं उस स्त्री के यहां पहुंचा। उसने कहा, 'मैंने सुना है तुम बीमार होकर अस्पताल गए हो। मुझे सब मालूम है।'

मुझे बहुत संकोच हुआ कि उसे भी मेरी दुर्दशा का पता लग ही गया। उस दिन बहुत सी किताबें लाया। जी भर कर पढ़ाई करता रहा। एक दिन बुढ़िया से जब न रहा गया तो उसने कहा, 'इस तरह तू अवश्य ही अंधा हो जायगा।'

मैंने जितनी भी किताबें पढ़ी उनमें मुझे केवल यही मिला कि किस प्रकार बुरे लोग अच्छे लोगों पर अन्याय व अत्याचार करते हैं। मुझे इस प्रकार की कहानियों से ऊब होने लगी। यहाँ तक कि अक्सर मैं कुछ पुस्तकों के प्रथम अध्याय ही पढ़ कर पूरी पुस्तक का आभास पा जाता था।

फिर उस स्त्री ने मुझे एक किताब और दी जो मुझे बहुत अच्छी लगी। कुछ हास्य की थीं कुछ व्यथा की। इसी स्त्री के पुस्तकालय से मैंने वाल्टर स्काट, और विक्टर ह्यूगो आदि का परिचय पाया।

उस स्त्री के प्रति मेरी भावनाएँ अजीब तरह से विकसित होती रहीं। सदा ही जब मैं उसके पास जाऊँ तो साफ कमीज पहन लूँ तथा अपने को सुन्दर बनाने की आशा में बाल में कंघी भी कर लूँ। परन्तु सब करने पर भी वह मेरे जाने पर केवल एक ही बात करती, 'क्या इसे पढ़ लिया ? कैसी लगी ?'

'बहुत अच्छी नहीं।'

'क्यों ?'

'इन सब के बारे में खूब जान गया हूँ ?'

'किन सब के बारे में ?'

'प्यार के !'

उसकी आँखों में एक चमक जागृत हुई और हँस कर उसने कहा, 'लेकिन सभी पुस्तकें प्रेम विषयक ही तो नहीं होतीं।'

वह अपनी आराम कुर्सी पर बैठ गई। मेरा जी चाहा कि आज मैं फिर कहूँ, 'कहीं चली जाओ ! सभी अफसर चिट्ठियाँ लिख कर तुम्हारा मजाक उड़ाया करते हैं।'

लेकिन जाने क्यों कहने की मेरी हिम्मत न पड़ी। इस औरत को लेकर हर जगह काफी गंदी चर्चा चलती। मुझे बहुत

बुरा लगता क्योंकि मैं जानता था कि यह सभी गप्पें झूठी हैं। उससे दूर रह कर मैं उसके प्रति बहुत सहानुभूति पूर्ण बातें सोचता परन्तु उसके सामने, उसकी चमकदार आँखों के सम्मुख मैं सदा ही हत प्रेम हो जाता था।

अचानक वसन्त आते ही वह एक दिन गायब हो गई। कुछ दिनों के बाद उसका पति भी चला गया।

फिर उस घर में नए किराएदार के आने के पूर्व एक बार मैं खाली मकान देखने गया मैंने खाली कमरे, सूनी दीवारों को घूम-घूम कर देखा। रंगीन कपड़ों के कतरन, कागज के टुकड़े, दवाइओं की शीशी के डिब्बे और तेल की टूटी शीशियाँ और गंदा फर्श ही दिखा।

फिर मैं एक बार उससे मिल कर उसे धन्यवाद देने को आकुल हो उठा परन्तु बेकार!

—दस—

कपड़े काटने वाले की स्त्री के गायब होने के पूर्व वहाँ तेज काली आँखों वाली एक स्त्री उसकी लड़की और उसकी सफेद बालों वाली बूढ़ी माँ जो दिन रात सिगरेट पीती—को देखते थे। वह स्त्री सुन्दर थी और घमण्डिन भी। उसकी आँखें ऐसी तेज जैसे वह दूर से ही सब कुछ देख रही हो। उसके दरवाजे पर सदा ही उसका सिपाही नौकर तुफायेव, उसका घोड़ा और उसकी पत्नी दिखाई पड़ती।

शाम को उसके यहाँ उसके मित्रों की मंडली आती। वे पियानो वाइलिन और गिटार पर गाते, नाचते। उसके यहाँ बहुत अधिक आने वालों में भूरे बालों व लाल चेहरे वाला मेजर ओलेसोव था। वह भी बहुत अच्छा गिटार बजाता था।

अपनी माँ की तरह ही वह पाँच वर्ष की बालिका भी काफी सुन्दर थी। उसकी दादी घर की देख-भाल में सारा समय लगाती। उसकी मदद तुफायेव करता। घर में कोई नौकरानी न थी। वह लड़की सदा ही दरवाजे पर खेला करती। मुझे जाने क्यों वह बहुत ही प्यारी लगती थी और मैं अक्सर अँधेरे में जाकर उसके साथ खेलता भी था। बाद में तो वह मुझे इतना परच गई कि अक्सर मुझसे कहानियाँ सुनते-सुनते वह गोद में ही सो जाती और मैं ही उसे बिछौने पर ले जाता। वह काफी तेज भी थी। कभी-कभी तो यदि कोई विचार उसके मस्तिष्क में

आता तो वह फौरन खेल के बीच में रुक जाती और पूछती, 'कहो, यह पादरियों के स्त्रियों जैसे लम्बे बाल क्यों होते हैं ?'

या कभी कहती, 'मैं खुदा को कहूंगी कि तुम्हारा बहुत बुरा हो। जानते हो खुदा काफी बुरा भी करता है।'

या कहती, 'नानी तो कभी-कभी पागल हो जाती है परन्तु माँ सदा हँसती रहती है। वह बहुत सुन्दरी है। यही जोसेफ भी कहता है।' वह अपनी माँ के बारे में बहुत बातें करती और मेरे लिए एक नई दुनिया के दर्शन होते। मेरे सामने महारानी मारगोट की कहानी नाच उठती और पुस्तकों के प्रति मेरी आस्था बढ़ने लगती और मैं इस तरह जीवन को बहुत गहराई से देखने का आदी हो गया।

एक बार मेरी गोद में लड़की सो गई। तभी घोड़े की पीठ से उसकी माँ उतरी। उसने लड़की के सिर पर हल्की सी चपत लगाई और बोली, 'क्या सो रही थी ?'

'हाँ।'

'अच्छा।'

वह सिपाई तुफायेव घोड़े को आगे बढ़ा ले गया। उसने कहा, 'लाओ, इसे मुझे दो।' कहकर अपनी बाहों में बेटी को ले लिया।

'मैं पहुँचा दूं ?' मैंने पूछा।

'वाह, क्यों ?' वह मुझ पर चिढ़कर चीख उठी। जैसे अपने घोड़े पर चीख रही हो। उसके चीखने से लड़की की नींद भी टूट गई। यद्यपि चीखें सुनने का मैं आदी था परन्तु इसका चीखना मुझे अप्रिय लगा।

एक या दो मिनट बाद वह बाहर रहने वाली स्त्री आई क्योंकि लड़की बिना मेरे सुलाए सोने को तैयार न थी। मैं भीतर गया। मां उसके कपड़े उतार रही थी।

'देख वह आ गया। राक्षस !'

'नहीं राक्षस नहीं—मेरा दोस्त !'

मैंने उसे सुला दिया। जब वह सो गई तब उसकी माँ ने मुझे बुलाकर पूछा, 'कहो तुम क्या चाहोगे ?'

'कुछ नहीं—कोई किताब पढ़ने को दीजिए !'

'तो तुम्हें किताबें अच्छी लगती हैं। कहाँ तक पढ़े हो।'

मैं कुछ बता न सका। उसने मुझे एक पीली जिल्द की किताब दी, 'इसे पढ़कर लौटा देना तो और दूंगी—इसकी तीन जिल्दें और हैं।'

मैं 'राजकुमार मेंसकेरेस्को पीटर्सबर्ग का रहस्य' बहुत ध्यान और दिलचस्पी से पढ़ने लगा।

जब वह पुस्तक मैंने लौटाई तो उसने पूछा, 'क्या अच्छी लगी ?' मैंने संकोचवश कुछ न कहा। उसने दूसरी पुस्तक दी और कहा, 'इसे पढ़ना और खराब न करना।'

यह पुश्किन की कविताओं का एक संग्रह था। मैं इन्हें इस प्रकार पढ़ता गया जैसे किसी प्रिय पेय पदार्थ को पी रहा होऊँ। मैं पुश्किन की कविताओं से इस प्रकार प्रभावित हुआ कि गद्य मुझे नीरस लगने लगा। मैं उनकी पंक्तियाँ अक्सर सदा ही गुनगुनाता रहता शायद केवल निद्रावस्था में ही उनका ध्यान मैं छोड़ पाता।

मेरी पढ़ने के प्रति अभिरुचि का मेरे मालिकों को खूब

पता था। बुढ़िया अक्सर कहती। 'तू बहुत ज्यादा समय पढ़ने में गंवाता है। चार दिन से बर्तन ठीक से साफ नहीं हुए।'

जब मैंने वह किताब लौटाई तो उस स्त्री ने पूछा, 'कहो कैसी लगी ? क्या तुमने पुश्किन के बारे में सुना है।'

मैंने पुश्किन के बारे में अब तक कुछ अखबारों में पढ़ा था परन्तु उसकी बात सुनने के लिए मैंने कहा, 'नहीं' तब उसने पुश्किन के जीवन और उसकी मृत्यु१ के बारे में थोड़ा सा बताया। अन्त में उसने चमकदार आंखें नचाकर कहा, 'देखा, किसी स्त्री का प्यार कितना खतरनाक है।'

मुझसे रहा न गया और अपने सम्पूर्ण ज्ञान के बूते पर मैंने कहा, 'खतरनाक तो है परन्तु हर कोई तो प्रेम में पड़ जाता है और स्त्रियों को भी अपने भाग का नुकसान उठाना ही पड़ता है।'

उसने गहरी दृष्टि से मुझे देख कर पूछा, 'तुम यह सब समझते हो ? अगर तुम सदा ही इसे मन में रखो तो बड़ा अच्छा हो। क्या तुम्हारे मालिक तुम्हारे रिश्तेदार हैं ?'

"हाँ।" मैंने कहा परन्तु मुझे स्पष्ट ज्ञात हो गया कि उत्तर सुन कर उसे तकलीफ हुई।

गली में अधिक रहने की मुझे मनाही थी। उन दिनों निजनी नोवगोरोड का मेला एक विशेष व्यक्ति के हाथ में था। उसके निर्माण का ठीका मेरे मालिक ने लिया था। मैं मालिक का बनाया नकशा मंजूरी के लिए अफसर के पास ले गया। लिफाफे में नकशे के साथ पच्चीस रूबल के नोट भी थे। जिन्हें

१ पुश्किन की हत्या उसकी पत्नी के एक प्रशंसक ने की थी।

अफसर ने अपनी जेब के हवाले किया और बिना नक्शा देखे ही उसे मंजूर कर दिया। इसी प्रकार मालिक की ओर से मैंने इन्स्पेक्टरों और अन्य अफसरों को भी घूस खिलाया।

इसी सिलसिले में अक्सर मेरा मालिक अफसरों से मिलने आता और वे लोग आधी रात के बाद तक बातें करते। मैं बाहर बैठा इन्तजार करता तथा खिड़की से झाँककर अफसरों की बीबियों की उस विलासिता को देखता जिसका वर्णन मैं फ्रांन्सीसी उपन्यासों में पढ़ चुका था। परन्तु किताब देने वाली स्त्री मुझे बेहद अच्छी लगती जिसका अपने मन में मैंने रानी मारगोट नाम रख लिया था। उसका एक लम्बा सा मित्र अक्सर एक वाइलिन लेकर आता था। वह इसे इतनी खूबी से बजाता था कि रास्ते चलने वाले भी ठहर जाते थे और अक्सर आस-पास के काफ़ी लोग इकट्ठे हो जाते थे।

एक दिन मैं शाम को उसके कमरे में गया। बाहर से ही उसके पास किसी पुरुष के होने की बात मुझे पता लग गई थी तभी उसने पुकारा, 'कौन है? अरे तुम! आओ, आओ!'

मैं शरमा गया क्योंकि उस अफसर को वहीं मैंने बैठा देख लिया था जहाँ वह पलंग पर लेटी थी।

'मेरा मित्र' रानी मारगोट ने मेरा परिचय दिया। मुझे अचम्भा हुआ कि वह मुझे अपना मित्र समझती थी। 'इतना डर क्यों रहे हो?' कह कर उसने मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया और कहा, 'तुम बड़े आदमी बनोगे। अच्छा अब चले जाओ।'

मैंने उसकी अलमारी में एक किताब रखकर दूसरी ले ली

ओर चला आया। मुझे अपनी इस नानी के विषय में कल्पना कर के आश्चर्य हुआ कि वह भी साधारण स्त्रियों की तरह अपना प्रेम इर को बांटती है। एक दिन उसने कहा, 'तुम रूसी किताबें पढ़ा करो। रूसी जीवन के बारे में जानो।' फिर अपने बालों की पिन को ठीक करती हुई उसने कई रूसी लेखकों का नाम गिना दिया। फिर तो उसने नियमपूर्वक मेरी शिक्षा की ओर ध्यान देना भी प्रारम्भ कर दिया।

फिर तो मुझे जो रूसी पुस्तकें पढ़ने को दी गईं उसमें मैं इतना डूबा कि लगा कि जिन्दगी की मुसीबतों में मैं ही अकेला नहीं हूं।

जब नानी आई तो मैंने उससे बहुत प्रफुल्लित हृदय से रानी मारगोट के बारे में बताया। अपनी नाक में सुँघनी ठूँसकर नानी ने कहा, 'ठीक है। आस-पास अच्छे आदमियों को ही खोज लेना बड़ी बात होती है। अच्छा मैं जाकर उससे मिलूँगी।' परन्तु मैंने मना कर दिया, 'नहीं इसकी दरकार नहीं है।'

अक्सर मेरी आंखों की पुतलियाँ फूल आती थीं जिससे मेरी आंख खुल नहीं पाती थी। मेरे मालिक ने समझा कि मैं अन्धा हो रहा हूँ। मुझे एक डाक्टर के यहाँ भेजा गया जो कई दिनों तक मेरी पुतलियाँ धोता और सफाई करता रहा। बाद में आंखों पर पट्टी बांध दी गई और मैं जैसे अंधकार में डूब गया। इतवार के पहले दिन पट्टी खुली मैंने अनुभव किया कि मैं कब्र से उठकर आया हूँ। इतवार को सभी उत्सव मना रहे थे। मैं अर्दलियों के पास गया। वे सभी शराब के नशे में चूर थे। उसी शाम को नशे में ही धरमाखिन ने सिदोरोव

के सिर पर लाठी मार दी। बेहोश होकर सिदोरोव गिर पड़ा और डरकर यरमोखिन भाग गया।

चारों ओर यह खबर फैल गई कि सिदोरोव की हत्या हो गई और बहुत से लोग उसकी लाश देखने आ गए। बेहोश सिदोरोव को सभी मुर्दा ही समझ रहे थे कि ऐन वक्त पर धोबिन नातालिया कोजलोवस्की आ गई और भीड़ को हटा कर वह पास आई तो देख कर बोली, 'बेवकूफों ! यह अभी जिन्दा है। जल्दी थोड़ा पानी लाओ।'

लोग चीखे, 'तू क्यों बीच में पड़ती है। यह तेरे बस का रोग नहीं।'

'पानी !' वह इस प्रकार चिल्ला उठी जैसे आग लगी हो। बैठकर उसने अपने नए कपड़ों की चिन्ता किए बगैर ही उस घायल सिपाही का सिर अपनी जांघ पर रख लिया। लोग धीरे-धीरे खिसकने लगे। मैं धोबिन की आंखों से बरसती चिनगारी को साफ देख रहा था। मैं ही पानी लाया और नातालिया के कहेनुसार उसके मुँह पर छींटे देता रहा! थोड़ी देर में उसे होश आया, आंखें खुलीं, वह कराह उठा।

'उठाओ !' नातालिया ने कहा और मेरी मदद से उसे उठाकर रसोई घर में लेजाकर खाट पर लिटाया। फिर सिर पर गीली पट्टी बदलने की मुझे सलाह देकर बड़बड़ाती हुई चली गई।

बड़ी देर के बाद उसने पूछा, 'क्या मामला है ?' क्या मैं गिर पड़ा था ?' फिर कहा, 'मुझे तो मार ही डाला।' मुझे इस पर हँसी आ गई।

इस पर उसे क्रोध आ गया, 'अरे, मेरा, स्वर्गवास हो गया और तू हंस रहा है ! तू जा यहाँ से, भेड़िया !'

'मूर्खता मत करो।' मैंने कहा।

तभी नातालिया, यरमोलिन के साथ आई। नातालिया ने दोनों को डांटा और सोने की आज्ञा दी। दोनों डर कर छोटे बच्चों की तरह सो गए। एक खाट पर और दूसरा फर्श पर। फिर बाहर आकर मुझसे बोली, 'देखा, क्या होता है वोद्का पीने से। तू कभी मत पीना।' फिर कुछ देर के बाद उसने कहा, 'मेरा पति भी खूब पीता था, लेकिन मैंने उससे शराब छुड़वा दी।'

'तुम बहादुर हो।' कहते समय मैं सोच रहा था ईव ने भी किस प्रकार खुदा को मूर्ख बनाया था।

'औरत को बहादुर होना ही चाहिए। पुरुष की दूनी। इसीलिए तो खुदा ने स्त्री को बनाया है।' नातालिया ने कहा।

तभी मालिक व मालकिन अन्दर आ गए। देखते ही मालकिन ने कहा, 'यह धोबिन के साथ ? यह सब क्या हो रहा है ?'

मुझे बहुत बुरा लगा खासकर जब मालिक ने हँसकर कहा, 'यही तो इसकी सीखने की उम्र है।'

दूसरे दिन सुबह मुझे लकड़ी वाले दरवाजे के पास एक पर्स पड़ा हुआ मिला जिसे मैं पहचान गया कि वह सिदोरोव का होगा और झट उसके पास ले गया। उसे पाते ही वह चीख पड़ा, 'मेरे रुपये कहाँ है ? तीस रूबल ! मुझे वापस कर !'

उसे यह यकीन नहीं आ रहा था कि मैंने इसी तरह पर्स पाया। यरमोखिन ने भी सिर हिलाकर कहा, 'जरूर, इसी ने चुराया है। इसे इसके मालिक के पास ले जाओ। सिपाही एक दूसरे की चीजें कभी नहीं चुराते।'

पता नहीं क्यों उसकी बातों से मुझे विश्वास हो गया कि चोरी उसीने की है और खाली पर्स मेरे दरवाजे पर छोड़ गया था। मैंने बिगड़ कर कहा, 'झूठा तूने ही चुराया है।'

मेरी बात पर उसका चेहरा फक् हो गया परन्तु दूसरे ही क्षण वह चीखने लगा, 'साबित कर, साबित कर।'

दोनों ने पकड़ कर मुझे बाहर लाकर शोर करना शुरू किया। सभी के सिर खिड़की से झांकने लगे। रानी मारगोट की माँ भी। मुझे लगा कि मैं उन स्त्रियों की नजर में अब गिर जाऊँगा।

मुझे दोनों सिपाही पकड़कर मालिक के सामने ले गए। मालिक ने सिर हिलाकर सिपाहियों की ही तरफदारी की। मालकिन ने भी उनका समर्थन किया, 'अवश्य ही इसी ने लिया होगा। कल रात यह योविन से घुलमिल रहा था। उसे दिया होगा।'

'अवश्य यही बात है।' यरमोखिन ने कहा।

मुझ पर मार तो पड़ी ही परन्तु सौभाग्य से यह किस्सा जल्दी ही समाप्त हो गया। क्योंकि शाम को मैंने सुना कि नातालिया चीखकर कह रही थी, 'नहीं! मैं क्यों चुप रहूँ? मैं तो तेरे अफसर से अवश्य ही कहूँगी।'

मैं फौरन ही भाँप गया कि मेरा ही किस्सा है। मेरे कमरे की सीढ़ी पर ही सब हो रहा था। नातालिया यरमोखिन

से कह रही थी, 'कल तुम मुझे रुपया दिखा रहे थे। आखिर वह कहां से आया? बताओ वह रुपया कहां से आया।'

तभी जब मैंने सुना तो फूल उठा जब सिदोरोव ने कहा, 'तो, यरमोखिन यह तेरी करतूत—।'

'और बच्चे को इसके लिए मार खानी पड़ी।'

मेरा जी चाहा कि दौड़कर जाकर मैं नातालिया का मुँह चुम्बनों से भर दूँ। तभी देखा कि खिड़की से मालकिन भी सब देख सुन रही थी।

तभी मालिक भी आ गया और प्यार से मुझसे बोला, 'तो पेश्कोव, तेरा हाथ इसमें नहीं था न!'

मैं बिना कुछ कहे सुने गूम गया। फिर थोड़ी देर बाद कहा, 'जैसे ही मैं उठने लायक हुआ कि चला जाऊँगा।'

सिगरेट का कश खींचकर उसने कहा, 'अब तो तेरी मरजी है। तू कोई छोटा बच्चा तो है नहीं।'

और चार दिन बाद मैं चला गया। मेरा जी बहुत चाहता था कि मैं रानी मारगोट से मिल लूँ पर ऐसा न कर सका। मुझे संकोच हुआ क्योंकि मैं समझता था कि वह मुझे बुलावेगी। परन्तु जब मैंने उसकी पुत्री से बिदा ली तो कहा, 'अपनी माँ से कहना, बहुत बहुत धन्यवाद।'

'अच्छा।' हँसकर उसने कहा, 'कल फिर मिलना।'

लेकिन इसके बाद हमारी भेंट बीस वर्ष बाद हुई। वह तब एक अफसर की बीवी थी।

ग्यारह

पुनः मैं एक स्टीमर के रसोई घर में काम करने लगा। रसोइया का सहकारी। मुझे सात रूबल प्रति मास मिलते थे। वहाँ का भंडारी बहुत मोटा, बदसूरत और गंजे सिर का था और उसकी चालीस वर्ष के आयु के लगभग की स्त्री, बहुत शृंगार करती थी।

रसोई का मैनेजर इवान बहुत शौकीन आदमी था। रोज़-दाढ़ी बनाता था। उसकी काली मूंछें, उमेठे हुए ऊपर को उठते से लगते थे। अपने खाली समय में वह सदा मूँछों को ही उमेठा करता था। उस नाव में सबसे अच्छे व्यक्तित्व का जेक था। वह ताश का अच्छा खिलाड़ी था। ईवान के साथ चाय पीते समय उसने बताया, 'मैं तो पादरी हुआ जा रहा था, अगर पेंजा से वह स्त्री न आगई होती। उसने प्रस्ताव किया तू जवान है, और मैं अकेली विधवा। आओ हम लोग मिल जाएँ। मेरा अपना घर है और व्यापार भी। उसकी बातें मुझे अच्छी लगीं और मैं उससे मिल गया। और तीन साल तक मेरा उसका इतना साथ रहा जैसा चूल्हा और रोटी का।'

'तू झूठा है।' ईवान ने कहा।

'सुनो तो।' उसने आगे कहा, 'मेरा जी उसके साथ न लगा तो मैंने उसकी भांजी पर हाथ साफ किया और उसे पता

लगा तो उसने गरदन पकड़ कर मुझे घर से बाहर निकाल दिया।'

'तुम्हारे लिए यही उचित था।' कह कर सब हँस पड़े।

एक बार एक बुढ़िया यात्री का पर्स किसी ने उड़ा दिया। जब पता न चला तो कप्तान ने पाँच रूबल दिया और यात्रियों ने चंदा किया। जब बुढ़िया को रुपये मिले तो उसने बहुत बड़प्पन से कहा, 'तीन ग्रेवेन (तीस कोपेक) ज्यादा हैं।'

'रख लो, इसे भी रख लो।' लोगों ने कहा परन्तु जेक ने कहा, 'बढ़े रुपये मुझे दे, मैं खेलूँगा। तू रुपया रखकर क्या करेगी। अब तो जल्द ही तू कब्रगाह में पहुंचेगी।'

रुपयों के दर्शन से ही वह खुश हो जाता था। एक बार उसने मुझे ताश खेलने को बुलाया। मैं जानता न था तो उसने कहा, 'इतना बड़ा होकर खेलना नहीं जानता। फिर तो अवश्य सीख ले।'

खेलना शुरू किया। मैं आधा पौंड चीनी हार गया। फिर उसने रुपयों की बाजी लगाई। मेरे पास पाँच रूबल थे। वो लगाये और वो भी उसके हवाले हुए। मैंने अपने जाकेट की बाजी लगाई। उसकी कीमत भी पाँच रूबल के लगभग थी वह भी हार गया। फिर नया जूता लगाया। वह भी हार गया। इतना जीतकर जेक ने कहा, 'तू अभी तक खेलना नहीं सीख पाया। तुझे अब अपने सभी जूते कपड़े छोड़ जाने पड़ेंगे। लेकिन अपनी सभी हारी चीजें ले जा। मुझे नहीं चाहिये। मैं केवल सिखाने की फीस के रूप में एक रूबल लूँगा।'

मुझे उसपर बड़ी श्रद्धा उपजी। उसने फिर कहा,

'यह खेल खेल के लिये है । इसपर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिये ।'

एक बार एक शराबी, मोटा व्यापारी अपने नशे में पानी में गिर पड़ा । जहाज रोका गया, इन्जन बन्द किया गया । उसका चिल्लाना सुनाई पड़ रहा था । सभी यात्री आकर देखने लगे और भीड़ के कारण एक दूसरे से टकराने लगे। उस डूबने वाले का एक साथी भी था जो भी पिये हुये था और आकर वह सबों को धक्का देने लगा, 'मैं बचा दूंगा ।'

अब तक दो मल्लाह उसे बचाने के लिये पानी में कूद चुके थे और नावें भी छोड़ी जा चुकी थीं । जेक अपना भाषण दे रहा था, 'वह अवश्य डूबेगा । वह बच नहीं सकता । उसके कपड़े ऊपर तैर आये हैं इसीलिये तो औरतें जल्दी डूब जाती हैं । अपने लंहगे के कारण वे बच नहीं सकतीं ।

और सचमुच वह न बचा, डूब ही गया । दो घन्टे तक उसकी खोज हुई पर वह न मिला । अब डेक पर बैठ कर उसका साथी रोने लगा—'उसका पूरा परिवार है। वे लोग क्या कहेंगे ।'

जेक ने उसे सान्त्वना दी, 'तुम बेकार ही शोक कर रहे हो । कौन जानता है कि कौन कब मरेगा ।'

फिर मेरे पास आकर जेक ने कहा, 'दुनिया के हर कोने के आदमी चींटी से अधिक होशियार नहीं हैं । जब भी आदमी के संपर्क में आओगे मुसीबत में फँसोगे । मैंने हर तरह के आदमियों को देखा है । जिप्सीओं को भी ।'

हम लोग डेक पर बातें कर रहे थे। आकाश में चाँदनी थी और सितारे पीले थे। थोड़ी देर बातें करके हम लोग अलग हुए। थोड़ी देर अकेले रहकर जब मैं ऊब गया तो फिर जेक के पास चला गया। और बातें करना चाहा,

'क्या मजाक है! भला क्या बातें करूं?' पहले तो वह खीझा पर फिर कहने लगा, 'एक बार एक घोड़े की चोरी के सिलसिले में मैं पुलिस के चक्कर में फंस गया था। मेरा साईबेरिया जाना निश्चित सा था।' फिर वह रुक गया। जेक बहुत मिहनती भी था। अक्सर मैं उसके साथियों से पूछता, 'तुम्हारी जेक के लिए क्या राय है?'

'जेक, कोई गड़बड़ नहीं है।'

एक दिन जेक ने बताना शुरू किया। अपने एक तपेदिक के मरीज युवक वकील परिचित की और उसकी बांझ जर्मन पत्नी की कहानी। वह स्त्री एक मेवे के व्यापारी से प्रेम करती थी उस व्यापारी के तीन बच्चे और सुन्दर पत्नी भी थी। व्यापारी को जब उस स्त्री के प्रेम का पता लगा तो उसने एक चालाकी की। एक रात को अपने दो मित्रों को बाग में बुलाकर झाड़ी में छिपा दिया। जब वह जर्मन स्त्री आई तो उसने समझाना शुरू किया, 'मैं विवाहित हूँ। तुम्हारे योग्य नहीं हूँ। लेकिन मैं तुम्हें अपने दो मित्रों से मिलाऊंगा जिसमें से एक विधुर है और एक कुँवारा।'

'इस पर उस जरमन स्त्री ने उसे धक्के देकर बेंच पर गिरा दिया। मैं भी वहाँ सब झांक रहा था। दोनों मित्र झाड़ी से निकल आए और उस स्त्री के बाल खींचने लगे। तभी मैं भी कूद कर पहुंच गया। बीचबचाव में उनमें से एक

ने मेरे सिर पर पत्थर मारकर घाव कर दिया। और स्त्री ने छुटकारा पाकर कहा, 'जिस क्षण भी मेरा पति मर जाएगा, मैं जरमनों के बीच चली जाऊँगी।' 'तुम्हें यही करना भी चाहिए।' मैंने सलाह दिया। और सचमुच वकील के मरते ही वह चली भी गई। वह कितनी सुन्दर और अच्छी स्त्री थी! और वह वकील भी—खुदा उसे स्वर्ग दे।'

सुनकर भी मैं कहानी का अधिक रस न ले पाया। मैंने पूरी बात पूछी।

'क्या इतनी कहानी काफी नहीं?' जेक ने कहा।

अब तक किनारा पास आ गया था। अधिकांश यात्री डेक पर आने लगे। एक लम्बी दुबली काले कपड़े पहने स्त्री हमारे पास आ रही थी। जेक ने पहले ही कहा, 'देखो, उसे कुछ तकलीफ है।'

दूसरों के कष्ट में उसे मजा आता था। जब वह कहानियाँ बताता तो किताबों में पढ़ने से ज्यादा मजा आता और मैं उसकी बातों पर अकसर घंटों सोचा-विचारा करता।

मुझे भंडारी की स्त्री के लिए पानी लाना पड़ता था। मैं उसके केबिन के पास खड़ा उस स्त्री को निहारता, उसकी पीली देह को गौर से देखता। उसे देखकर मुझे रानी मारगोट की याद बरबस आ जाती। एक बार हंस कर उसने कहा। 'सुख से मुँह क्यों मोड़ता है?'

जेक ने बाप की तरह समझाया, 'होशियारी से काम लेना।'

मैंने जेक से पूछा, 'तुम्हारे सिवा सबों के पास पत्नी है। तुम भी ब्याह क्यों नहीं करते?'

'मैं ! अरे वाह, शादी के बाद एक जगह जमना पड़ता है। घर बनाना पड़ता है। फिर सिपाही के जीवन का क्या ठिकाना !'

'तुम कभी खुदा की प्रार्थना करते हो, तो किस तरह !'

'बहुत तरह से प्रार्थना होती है।'

मुझ पर वह सिपाही मेहरबान था। वह खाना रूखा-सूखा खाता और अक्सर पुकारता, 'आना, अलेक्सी, कुछ कविता हो जाय !'

मुझे कुछ कविताएँ याद थीं और कुछ मैंने नोट कर रखी थीं। वह लम्बी-लम्बी सांसें लेकर सुनता। एक बार बोला, कोई कवि है, मैंने सुना है—सुरबीन पुश्किन।'

'लेकिन वह तो वर्षों पहले मार डाला गया।'

'सो कैसे ?'

मैंने उसे संक्षेप में वह कहानी बतादी जो मुझे रानी मार-गोट ने सुनाई थी। इसपर जेक ने राय दी, 'औरतों ने बहुत से आदमियों को नष्ट किया है।'

मैंने उसे बहुत सी कहानियाँ सुनाईं जो मैंने पुस्तकों में पढ़ा था। ड्यूमा के नायक मुझे बहुत भाते थे। उसका राजा हेनरी छठा मुझे बहुत पसन्द था।

उपन्यास में हेनरी को बहुत अच्छा बताया गया है। उसे ही पढ़कर मुझे लगा कि संसार में सबसे प्यारा देश—फ्रांस—बहुत ही विशाल और वैभवशाली होगा। जहाँ हेनरी की हत्या की चर्चा थी उसे पढ़कर मेरी आँखों में आंसू आ गए। मैं क्रोध में दांत पीसने लगा। सुनकर जेक ने कहा,

'राजा हेनरी बहुत अच्छा आदमी था।'

जब मैं हेनरी की कहानी सुनाता तो वह सहानुभूति से भर कर चुप रहता और बीच में कभी न बोलता। और जब मैं किसी कारण से एक क्षण को भी चुप हो जाता तो वह कह उठता, 'क्या समाप्त !'

'अभी नहीं।'

'फिर चुप क्यों हो ?'

और मैं उत्साह से फ्रांस का वर्णन कर जाता।

शरद ऋतु में जब सूरज की किरणें पीली पड़ने लगीं तब जेक ने नौकरी छोड़कर हमें डरा दिया। एक दिन पहले ही उसने मुझे अपनी योजना बताई थी। एक यात्री के साथ वह चा की मेज पर बैठ कर बातें कर रहा था। यात्री ने कुछ बताया तो जेक ने कहा, 'नहीं—पसन्द नहीं ?

फिर उनमें बहुत देर तक बातें हुईं और वह चला गया। बाद में जेक ने मुझे बताया। 'यह अच्छा आदमी है। मैं उसके साथ काम करने जा रहा हूँ। पर्व पहुँच कर मैं चला जाऊँगा। तुम सबों को विदा का नमस्कार करूँगा। पहले तो रेल से जाना होगा फिर थोड़ा पानी की यात्रा है फिर घोड़े पर तब कहीं इसके जिले में पहुँचेंगे।'

'क्या तुम इसे जानते हो ?'

'कैसे जानता ! पहले तो कभी देखा नहीं।'

दूसरे दिन सुबह कपड़े पहन कर वह आया और मेरी बांह पकड़ कर कहा, 'साथ चलेगा ? वह तुझे भी रखलेगा।'

पर मैं उसकी बातों में विश्वास न कर सका। जेक चला गया। अब मैं पछताने लगा—

ओफ़ ! जेक कैसा आदमी था !

बारह

शरद ऋतु के अन्त में जब जहाजी यात्रा का मौसम समाप्त हो गया तो मैं मूर्ति रंगने का कार्य सीखने लगा। एक दो दिन के बाद ही दुकान की मालकिन बुढ़िया ने कहा, 'अब दिन छोटे तथा रात बड़ी होती है इससे दिन को तू दूकान पर काम कर और रात को सीखा कर।'

मेरा नया मालिक—दूकान का मैनेजर एक खूबसूरत जवान था। सुबह सुबह मैं जाड़े और ठण्ड में उसके साथ बाजार जाता जहाँ एक दोमंजिले पर दूकान थी। पहले यह कोई गोदाम था, यहाँ थोड़ा अंधेरा रहता था। इसमें एक लोहे का द्वार और एक लोहे की छड़ों की खिड़की थी। यह दूकान मूर्तियाँ, चित्र और चित्रों के चौखटे और पुस्तकों से भरी थी। इस दूकान के बगल में भी एक दूकान इन्हीं चीजों की थी जिसका मालिक काली दाढ़ी वाला एक व्यक्ति था। इसी के साथ इसका लड़का भी काम करता था जिसकी चूहों जैसी आँखें थीं।

दूकान खोलकर मैं फौरन गरम पानी का प्रबंध करता। फिर नाश्ता करने के बाद मैं दूकान सजाता। गर्द झाड़ता और फिर बाहर गली में खड़ा होकर ग्राहकों को अपनी दूकान बताता।

'ग्राहक चीज अच्छी नहीं देखते। दाम देखते हैं।'

धीरे-धीरे मैं सभी मूर्तियों और उनकी विशेषताओं व मूल्यों के विषय में जान गया।

बाजार के दिन बहुत भीड़भाड़ के दिन होते—बुध और शुक्र। इस दिन, किसान, बूढ़ी स्त्रियाँ कभी-कभी पूरा परिवार आजाता। 'आपकी क्या सेवा करूँ ?' मैं पूछता।

मैं अपने ताईं बहुत मिहनत करता परन्तु अच्छा विक्रेता न बन सका। एक दिन एक बूढ़े ने हमें डांटा—

'यहाँ अच्छी मूर्तियाँ नहीं बनतीं, मास्को में विगोमिन के यहाँ सबसे अच्छी होती हैं।'

अभी तक मेरे मालिक ने कभी मास्को की इस दूकान के बारे में नहीं बताया था। पूरे बाजार के लोगों का जीवन बहुत अस्वाभाविक था, किसी भूले भटके को वे जानकर गलत रास्ता बता देते थे—इसमें उन्हें बड़ा मजा आता था। वे दो चूहों को पकड़कर उनकी पूँछ बांध देते और उनका आपस में टकराना बड़ी दिलचस्पी से देखते और बाद में उन पर मिट्टी का तेल छिड़क कर जला देते और मजे से जलना देखते। और कभी-कभी कुत्ते की दुम में टीन का टुकड़ा बाँधकर उसकी परेशानी से मजा लेते।

जाड़े में व्यापार बहुत ढीलाढाला था। मैं बूढ़े पीटर से कभी-कभी घरेलू बातें करता। मैंने उससे कहा, 'जिस तरह ये दूकानदार रहते हैं वह ढंग मुझे अच्छा नहीं लगता।'

अपनी दाढ़ी में उँगलियाँ डालकर वह कहता, 'क्या तुम जानते हो कि वह कैसे रहते हैं ? क्या तुम उनके घरों में जाते हो ? यहाँ तो केवल उनका व्यापार है—दूकानें हैं। आदमी को उसके असली रूप में उसके घर में ही देखा जा

सकता है। और उनके घरेलू जीवन के बारे में तुम अधिक नहीं जानते।'

'ठीक है, पर क्या वे यहाँ भी वही नहीं सोचते जो घर में सोचते हैं।'

'तुम किसी के मन के विचारों को किस प्रकार जान सकते हो ? और तू दुनिया भर के लिये चिन्ता न किया कर ! इन सब के लिये तू बहुत छोटा है। तेरे उम्र के छोकरे को आँखों देखी बात ही जाननी चाहिये—दिमाग नहीं खपाना चाहिये।'

उसकी सीखों के सहारे मैं अपना समय काट रहा था।

तेरह

जहाँ मूर्तियाँ बनतीं और रंगी जाती थीं वह दो कमरे थे। एक में चार खिड़कियाँ थी और दूसरी में दो खिड़कियाँ थीं। इनमें केवल एक खिड़की बाग की ओर खुलती थी बाकी सड़कों या घरों की ओर। इस घुटन वाले कमरों में लगभग बीस आदमी कार्य करते थे। सभी पालेख, खोलुया और म्सटर के रहने वाले। वे सूती कमीज पहनते और गला खुला रहता। कुछ नंगे पाँव रहते कुछ सैण्डल पहनते। वे अक्सर काम के बीच में बिरहा गाते।

खिड़की के पास नक्काशी करने वाला बैठता था। नाम था, गोलोवीव! फूली हुई नाक वाला बूढ़ा। पानफिल जुड़ाई करता उसका स्वभाव अच्छा न था। डेवीडोव पहला रंग पोतता था। सोरोकिन दूसरा रंग चढ़ाता। मिलोशीन पेंसिल से रेखायें बना देता।

मुझे यह अलग-अलग किए गए काम से तैयार कृति निर्जीव सी लगती। कुछ दिनों के बाद मैं भी इस कारखाने में शामिल होगया। एक दिन प्रमुख कार्यकर्ता, एक डोन-कोजाक जिसका नाम केपेन्डुखीन था, शराब पीकर आया। वह बहुत मजबूत और अच्छा दिखता था। उसे इस अवस्था में देखकर सभी दूसरे काम करने वाले भयभीत हो गए। सभी दबी जुबान एक दूसरे से कहते, 'पटक दो।' चेहरा बनाने

वाला ईजेने सितानोव उसके सिर पर स्टूल मारकर गिरा देने में सफल हुआ। सभी ने मिलकर उसे तौलिए से बाँध दिया। वह जानवरों की तरह उसे दांतों से चीथने लगा। सीतानोव टेबल पर चढ़कर उसपर कूदने को हुआ। उसके कूदने से अवश्य ही केपेन्डुखीन के छाती की हड्डी टूट जाती लेकिन लेरिओनोविच समय पर आगया। उसने डांट कर कहा, 'इसे उठाकर बड़े कमरे में डाल दो।'

कोजाक को घसीटकर बाहर किया गया। कुर्सियां जगह पर रखकर काम फिर पूर्ववत चालू होगया। सभी की यही राय थी कि उस शराबी को कभी न कभी इसी तरह के झगड़े में मौत होगी। मैं एक-टक लेरिओनोविच को और उसके प्रभाव को देख रहा था। उसने केपेन्डुखीन से कहा, 'तुम बहुत अच्छे और सच्चे अर्थों में कलाकार हो। परन्तु अपनी कृतियों में तुम और जान डालो।'

कोजाक ने ध्यान से सुना फिर काफी मधुर आवाज में जो शराब के नशे के कारण तीखी मालूम होती थी कहा, 'अरे वाह, मेरे बाप। मैं तो जन्म का गायक हूँ अतः यह शिक्षा मेरे लिए नई नहीं है।'

नया कलाकार पाल ओडिन्स्तोव ने भंडा गिराते हुए रोक लिया। सभी मिलकर गा रहे थे—कोई सामूहिक गान! गाने के नशे में सभी अपनी सुध-बुध भूले हुए थे। इस प्रकार के गानों का नायक और नेता वही केपेन्डुखीन ही होता था। इसमें झिखारेव भी था। चालीस वर्ष का बूढ़ा लगने वाला गंजे सिर का व्यक्ति।

'पाल' उसने पुकार कर कहा, 'ओडिन्स्तोव, शुरू करो, न आता हो तो सुनो।'

और अपने लबादे में हाथ पोंछता हुआ पाल भी गाने में शामिल हो गया। भिखारेव बहुत कुशल कलाकार था क्योंकि वह मूर्तियों के चेहरे बहुत अच्छे बनाता था। उसे मूर्तियों का अनुभव भी खूब था। दूकान का सबसे अच्छा कारीगर होने पर भी सदा वह नए कारीगरों जैसे पाल और मुझ पर सदा मेहरबान रहता था। दूसरे तो हमारी ओर देखते भी न थे परन्तु वह नए-नए ढंग बताता रहता।

अक्सर अपने कार्य समाप्त कर के वह ओवरकोट पहनकर शराब खाने जाता। छोटे कारीगर उसे जाता देख मुस्कराते और बड़े कारीगर सीटी बजाते।

हर शनिवार को सुबह वह मलिक से पास पत्र लिख कर पाल से भिजवाता। और दोपहर को वह लेरिओनोविच से कहता, 'मैं नहाने जा रहा हूं।'

'वापस कब आओगे ?'

'खुदा—।'

'कृपा करके मंगलवार तक तो आ ही जाना।'

नहा कर आता और कपड़े पहनता। चांदी के जंजीर वाली घड़ी बांधता और किसी से बोले बिना ही चला जाता। केवल पाल को और मुझे आज्ञा देता, 'शाम तक कमरे की सफाई कर लेना, टेबल भी साफ करना।'

सबों पर मस्ती का आलम छाया होता। सभी नहाते और अच्छा खाना खाते। शाम के बाद भिखारेव वापस आता, साथ में बियर और दूसरी शराब की बोतलें लाता। उसके पीछे-पीछे एक स्त्री होती। वह साढ़े छः फिट ऊँची थी और उसके सामने यहाँ के फर्नीचर खिलौने से दिखते। उसकी देह तो अच्छी थी परन्तु उसके स्तन बहुत बड़े थे। छोटी पहाड़ियों की तरह ऊँचे। वह चलती तो लगता कि वह उनके

बोझ से दबी हो। वह अवश्य ही चलीस के लगभग होगी परन्तु उसके चेहरे पर एक भी झुर्रियाँ न थी। बड़ी आँखें, चिकनी चमड़ी, प्यासा चेहरा। वह सबों से बातें करती, 'क्या हाल है ? आज सचमुच बहुत जाड़ा है। यहाँ तो रंगो की गंध से घुटन हो रही है।' कुछ भी बोलने के पहले वह तेजी से सांस लेती थी। हम छोटे लोग उसे कुछ डर और प्यार से देखते। झिखारेव उसे सादर 'दोस्त' कहता। उत्तर में उसकी मुस्कान फैल जाती।

जब वह होती तो इत्तर की सुगन्ध भरी रहती। जैसे ताजी रोटी की सुगन्ध। बूढ़ा गोलोवीव उसे गौर से देखता। जब वह कुछ ज्यादा परेशान हो जाता तो देखकर वह कहती, 'हम अपनी जवानी में बहुत अच्छे न लगते थे। तीस की उम्र के लगभग मुझे एक कमाण्डर मिला था।'

केपेन्डुखीन बहुत न पीता था। उसकी बातों पर सारी दूकान कह-कहों से गूँज जाती थी। सीतानोव पीकर पीला हो जाता था। उसके माथे पर मोती की तरह पसीना चमकता और भावुक आंखों में जैसे मोमबत्तियाँ जल उठतीं। बूढ़ा गोलोवीव अपनी उंगलियों से गीली आंखें सुखा कर पूछता, 'तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?'

'केवल एक।'

वहाँ टेबुल पर एक ओर एक भट्ठी पर लैम्प थी। उसी के धीमे प्रकाश में वह सबों को खाने-पीने की प्रार्थना कर रहा था। इस पर किसी ने कहा, 'तुम बूढ़े होकर इतना कष्ट क्यों उठाते हो ? हर आदमी को अपना हाथ और अपना पेट है। सब खुद खाएं-पीएंगे। पेट में जितनी जगह होगी उतना सभी खाएँगे।'

'शान्त रहो मित्रों !' झिखारेव ने चीख कर कहा।

उस दिन गाना ठीन से न चला। सभी खाना और वोदका से भरे थे। तब झिकारेव ने आज्ञा दी, 'अब रूसी नाच !'

'वाह, तुम कितने अजीब हो।' उस स्त्री ने कहा।

थोड़ी जगह खाली की गई। अपने छोटे भूरे स्कर्ट को हिलाती हुई वह उठ खड़ी हुई। उसकी पीली ब्लाउज और सिर पर बँधा लाल रूमाल चमक उठा।

झिखारेव को नाच न आता था। वह केवल बकरे की तरह झूमता और चमकदार जूतों की ऐड़ी रगड़ता। वह स्त्री भी अच्छा न नाची जब झिखारेव ने उसे अपने बाहों से घेर लिया तो एक अजीब रोशनी उसकी आंखों में चमकने लगी।

सितानोव ने कुछ व्यंग किया था जो अब तो मुझे ठीक याद नहीं। 'यह कोई प्यार तो नहीं है। धोखा है धोखा। इससे सबों को शर्म आनी चाहिए।'

मैं सोचने लगा कि सचमुच ही क्या यह धोखा है ? फिर रानी मारगोट ? मैं जानता था कि झिखारेव का प्यार सच्चा था। और मैं यह भी जानता था कि सितानोव को अपनी प्रेयसी—एक लड़की से निराशा मिली थी जो सड़कों पर घूमने वाली एक छोकड़ी थी।

यह स्त्री अब तक अत्यधिक भावुक होकर अपना रूमाल हवा में हिला रही थी और झिखारेव उसके पास ही मंडरा रहा था।

रात होने लगी थी। रात की कालिमा खिड़कियों से अन्दर आ रही थी। लैम्प धुँधली हो रही थी।

अब तक सबों का जी भर गया था। मुझे अचानक सोगन की याद आ गई। केपेन्डुखीन के पीछे-पीछे पाल और सोरोकिन चले गए।

सितानोव इतना पी चुका था कि उसके चेहरे से लगता था जैसे वह रो पड़ेगा और वह बड़बड़ा रहा था, 'सोचो तो क्या कोई आदमी ऐसी स्त्री को प्यार कर सकता है ?'

लेरिओनोविच ने कंधा हिलाकर कहा, 'औरत औरत ही है। और कुछ जानना भी बेकार होता है।'

वे बात करते ही रहे और विषय बने दोनों व्यक्ति चले गए।

सितानोव ने पूछा, 'क्या दोनों चले गए।'

थोड़ी देर के बाद उसने फिर कहा, 'खुदा कहीं नहीं है।'

'तब हम कहाँ से आए ?' मैंने पूछा।

'यह हमें क्या मालूम !'

भला यह कैसे संभव है कि खुदा कहीं नहीं है। मैंने उससे पूछा और उसने कहा, 'खुदा बहुत ऊपर है, आकाश में। दिख रहा है।' और हाथ नीचे करके कहा, 'और आदमी नीचे है, पृथ्वी पर, क्यों ? ठीक है ? लेकिन एलेक्सी संसार में अच्छे लोग भी हैं।'

उससे बातें करना अच्छा लगता। क्योंकि वह साफ आदमी था। अगर कोई बात उसके मन में आती जो कहने की न होती तो भी वह अवश्य कहता। वह स्पष्टभाषी था। उसके साथ के कारण मेरी भी साफ कहने की आदत पड़ गई।

उसकी कापी में मैंने कुछ बहुत ऊँची स्तर की कविताएँ लिखी देखीं। कुछ इतनी गंदी भी कि पढ़कर शर्म आती. मैंने उससे पुश्किन का जिक्र किया तो उसने मुझे पुश्किन की भी कविताएँ सुना दीं। फिर कहा, 'लेकिन और भी दूसरी दूसरे क़िस्म की कविताएँ हैं जो गहरा प्रभाव करती हैं। जैसे बेनेडिकतोव की वह लाइन,

—ओह, हसीन औरत के यौवन का जादू !'

इसके अलावा उसकी और भी बहुत प्रिय लाइनें थीं जिन्हें वह अक्सर गाता। वह इससे भी भयंकर थीं।

'समझे !' उसने पूछा।

और यह कहने में मैं लजा गया कि जो कुछ उसे सुख दे रहा है उसे समझने में मैं असमर्थ हूँ !

चौदह

मेरा काम काफी आसान था। मैं तभी उठ जाता जब अन्य लोग सोते ही रहते और उठकर नाश्ता तैयार कर देता। जब वे चा पीते रहते तभी पाल और मैं कारखाने में झाड़ू बहारू करता।

शाम को मैं छुट्टी मनाता। कारीगरों को जहाज के अनुभव और किताबों की कहानियां सुनाता। उनके लिए मैं कथा-वाचक हो गया था। मेरा दावा था कि वे लकड़पन से ही इस कारखाने में थे इसलिए उनकी अपेक्षा मैंने दुनिया अधिक देखी थी। उनमें केवल फिखारेव ने ही मास्को देखा था जिसके बारे में वह कहता, 'वहाँ कोई रोता नहीं। वहाँ सभी अपने बारे में निश्चिंत हैं।'

बाकी लोग शूया या व्लाडीमीर के आगे न गए थे। वे समझते थे कि पर्म बहुत दूर साइबेरिया में है। इसी प्रकार की कई गलत धारणाएँ वे अपने अज्ञानवश बनाए हुए थे। वे मेरी आँखों देखी बातों पर भी आश्चर्य प्रकट करते।

उन्हें देखकर मैं यह सोचने लगा कि पुस्तकों में जो लिखा है वह जीवन से कितना भिन्न है। किताबों में, स्माउरी, जेक, फिखारेव व थोबिन नातालिया का जिक्र भी न था।

डेवीडोप अपने संदूक से गोलिटसिंकी की कहानियों का फटा संग्रह ले आता जो मैं पढ़कर उसे सुनाता। मैं और जगहों से

भी किताबें ले आता और लगभग प्रति रात्रि को पाठचक्र चलता। वे शामें कितनी अच्छी तरह बीतीं। सभी ध्यान मुग्ध होकर सुनते।

नई पुस्तकें पाना फिर भी कठिन ही था। आग बुझाने वाले एक अफसर से मैं लरमनतोभ की एक पुस्तक ले आया। एक दिन मैं धीरे-धीरे पढ़ रहा था। लेरोनोविच ने कहा, 'भाइयों, खामोश।' और अपनी कुर्सी सितानोव के पास खींच लाया। मैं कोई कविता पढ़ रहा था। सभी धीरे-धीरे मेरे पास यों खिंचने लगे मानों मैं कोई चुम्बक होऊँ। जब पहला अध्याय समाप्त हुआ तो मैंने पाया कि सभी मेरे चारों ओर जुट गए हैं, एक दूसरे के कंधे पर हाथ डाले और सभी चेहरे मुस्कुराते हुए या विचारों में खोए हुए। भिखारेव तो इतना भाव-विभोर था कि मेरा सिर उसने किताब में गाड़ दिया और कहा, 'और आगे पढ़ो।'

जब पूरी किताब पढ़ चुका तो उसने किताब ले ली और उसका शीर्षक देखकर कहा, 'कल फिर पढ़ी जायगी—इसे मैं अपने पास सुरक्षित रखूँगा।'

इस प्रकार लरमनतोभ को ताले में बन्दकर वह अपनी मेज पर वापस आ गया। कारखाने का कार्य पुनः पूर्ववत चलने लगा। सीतानोव खिड़की पर चला गया। रात को कार्य समाप्त कर जब हम लोग बाहर आए तो चांदनी में ऊपर देख सीतानोव ने कहा, 'यह तारे यों लगते हैं जैसे कारवाँ हो।' हम लोग खाना खाने गए। दरवाजे पर ही भिखारेव ने कहा, 'वहाँ किताब का जिक्र न करना। यह अवश्य ही कोई जब्त किताब होगी।' मुझे खुशी हुई कि अवश्य ही इसी पुस्तक के लिए बहुत पहले पादरी ने कहा होगा।

खाने की मेज पर आज बात बहुत कम हुई जैसे सभी पहले से किसी बात से भरे बैठे हों। जब सोने जाने को हम कपड़े बदलने लगे तब भिखारेव ने कहा, 'हम लोगों को पुनः शुरू करना चाहिए।' सभी अपने-अपने बिछौनों से उठ कर मेरे चारों ओर पलथी मार कर बैठ गए। जब इस बार भी मैंने समाप्त किया तो भिखारेव ने टेबिल पर उंगली पटक कर कहा, 'कितनी सजीव तस्वीर!'

सितानोव ने कहा, 'मैं इसे अपनी कापी पर नकल कर लूँगा।'

भिखारेव ने कपड़े बदलते हुए सितानोव से कहा, 'चल न जरा पी जाए।'

'कहाँ शराब खाने!' सितानोव ने पूछा।

जब वे चले गए तो मैं पाल के पास आया—वह सिसक रहा था।

'क्या बात है?'

'वे ऐसे चरित्र हैं कि मैं बहुत अधिक घनिष्टता अनुभव करता हूँ।'

पाल और हम, दोनों मित्र थे। उसे निकाल दिया गया था। वह मास्को चला गया था। तीन साल बाद सुना उसे टाइफाइड ने नष्ट कर डाला। मुझे उसके लिए दुःख हुआ।

वह काफी बड़ा हो गया था। वह चिड़ियों, कुत्तों और बिल्लियों की खूब अच्छी शक्लें बना लेता था।

कभी-कभी पाल और हम अपने चेहरों पर तरह तरह के रंग पोत लेते और रंग-बिरंगे कपड़े भी पहन लेते। और तरह-तरह के मनोरंजक अभिनय करते।

पन्द्रह

खेतों पर से बर्फ पिघलने लगी थी। जाड़े के बादल आकाश से गायब हो गए थे। मेरे जन्म दिन पर कारीगरों ने मुझे एलेक्सी की मूर्ती बनाकर दी। उस अवसर पर झिखारेव ने जो भाषण दिया वह मुझे याद है।—'तू अभी है ही क्या, एक छोकड़ा, तेरह वर्ष का अनाथ। और मैं तेरी उम्र की चौगुनी उम्र का हूँ।' और इसी तरह परिहास से पूर्ण बहुत सी बातें कीं। आखिरकार केपेन्डुखीन ने कहा ही तो था, 'बस करो! देखो शर्म से उसके कान तक नीले हो गए हैं।

जो भी हो, सभी मुझपर सहानुभूति रखते थे। उस दिन की भोर में भी मैं रोज की तरह दूकान गया। दोपहर को मैनेजर ने आज्ञा दिया, 'घर जाओ, छत पर की बर्फ साफ करो।'

शायद उसे मालूम न था कि वह मेरा जन्म दिन था। जब कारीगर लोग मुझे उपहार दे चुके तो काम के समय पहनने वाले कपड़े पहन कर मैं बर्फ साफ करने पहुंच गया। बर्फ बहुत अधिक थी इसलिए मैं फावड़ा लेकर जुट गया। जब मैनेजर भीतर आ रहा था तभी उसने देखा कि परनाला आकर टूट गया। उसने उसी टूटे भाग से मुझे धमकाया। फिर उसे चला कर मुझे आहत किया। मैंने भी फौरन ही बर्फ का एक टुकड़ा उस पर चला दिया। कुढ़ कर वह चला गया। मैं भी कारखाने

में आया कि उसकी भावी पत्नी—एक लड़की—ने आकर कहा, 'अलेक्सी, तुम्हें ऊपर बुलाया जा रहा है।'

'मैं नहीं जाता।' मैंने कहा।

'नहीं जाते ?' लेरिओनोविच ने पूछा, 'क्या मतलब ?'

मैंने उसे घटना बता दी। वह मेरे साथ ऊपर गया। सारा कारखाना मैनेजर के गरजने से गूँज रहा था। मैं जान गया कि मैनेजर से मेरी अधिक चलने को नहीं है। मैंने उससे कहा, 'मुझे पकड़ने के लिए फर्श पर तुम बर्फ बिछाते हो।'

'क्या कहा, गिर जाते होंगे। जानकर नहीं गिराता।'

कारखाने में मेरी पढ़ाई पर सख्त रोक लगा दी गई। 'तू क्यों इतना सिर खपाता है ? आवारा !'

वह सदा ही इस फेर में रहता कि मुझे पैसों की चोरी में फँसा दे परन्तु मैं उसकी चाल से पूरी तरह सतर्क था। एक दिन जब मैं चा के लिए गरम पानी ला रहा था तब मैंने सुना कि दूसरे कमरे में वह एक नए नौकर को समझा रहा था कि वह दूकान के नए रंग के लिए हमें चोरी लगाए। मैं जान गया कि यह लोग पूरी तरह मेरे पीछे पड़े हैं।

वह नौकर दरअसल में नया नहीं था बल्कि बहुत होशियार और पुराना आदमी था परन्तु उसमें पीने की बुरी लत बहुत अधिक थी। वह निकाल दिया गया था परन्तु अब फिर उसे काम दे दिया गया था।

एक दिन उसने मुझे आहत किया। पहले तो मुझे देख कर मुस्कुराता रहा बाद में उसने मेरी टोपी उतार ली और मेरे बालों को नोचा। मैंने उसके चंगुल से छूटने की कोशिश की परन्तु वह मुझे दूकान में घसीट ले गया और चाहा कि मुझे किसी मूर्ति से भिड़ा दे ताकि कोई बड़ा नुकसान हो जाय

और मैं फँसू। परन्तु मैंने उसे ही हरा दिया। वह जमीन पर बैठ कर रोने लगा।

दूसरे दिन जब वह बैठा अपने नाक पर के घाव को धो रहा था जो कल ही लगा था, तब उसने मुझसे कहा, 'तुम क्या समझते हो कि मैं तुम पर कल हमला करना चाहता था। मैं इतना बड़ा मूर्ख नहीं हूं। मुझमें इतनी शक्ति भी तो नहीं। वह तो मालिक की आज्ञा से किया था।'

मैंने उस पर विश्वास किया और उसपर मुझे तरस भी आया। मैंने पूछा, 'अगर वह तुमसे किसी को जहर देने को कहे तब भी तुम जहर दे दोगे ?'

'वह कह तो सकता है।'

इन सब झगड़ों की जड़ यह थी की मैनेजर की भावी पत्नी मुझसे बहुत जलती थी और सदा ही मेरी शिकायत करती रहती थी। क्योंकि सभी लोग उसे छेड़ा करते और वह विरोध न कर पाती और मैं यह सब देखा करता। कोई भी उसकी जेबों में एक दो मिठाई डाल कर थोड़ी देर उसे प्यार कर लेता था।

इस प्रकार की लड़की के सम्पर्क में आना मेरे लिए पहली घटना थी। एक दिन जब पाल और मैं ही कमरे में अकेले था तो उसने पूछा 'तुम लोगों को चूमना आता है या मैं सिखा दूँ।'

पाल ने कहा, 'मुझे खूब अच्छी तरह आता है।'

मैंने कहा, 'अपना चुम्बन अपने भावी पति के लिए ही सुरक्षित रखो।' इसपर उसने बहुत अधिक अपमानित अनुभव किया और कहा, 'तू जानवर है! एक युवती यदि तेरे प्रति दयालु हो तो इस प्रकार व्यवहार नहीं करना चाहिए। याद रख मैं तुझे बता दूँगी।'

पाल ने मेरा साथ दिया, कहा, 'यदि तुम्हारे भावी पति को तुम्हारे इस बात का पता लग जाए तो ?'

उसने क्रोध में उत्तर दिया, 'मुझे उसका डर नहीं। मेरा खानदान उससे ऊँचा है और कोई लड़की शादी के बाद ही पति से डरती है।'

उस दिन से वह पाल का पीछा करने लगी और मुझसे तो जलने ही लगी। मैंने निश्चय कर लिया कि इस बार जब नानी शहर आए तो मैं उसके साथ ही चला जाऊँगा। यह जाड़ा उसने बलखाया में बिताया था वहाँ वह फीते बनाने की लड़कियों को शिक्षा देती थी। नाना फिर कुनाविन गली में चला आया था पर मैं कभी उससे मिला नहीं था। वह भी जब कभी मेरे रास्ते से निकलता तो कभी भी मुझसे मिलने को क्षण भर भी न रुका। एक बार वह मुझे गली में मिल गया। मैंने नमस्कार किया तो उसने आँखों पर छाँह करके देखा फिर पहचान कर कहा, 'अरे तू। तू तो अब पूरी तरह कारीगर हो गया है। यह बहुत अच्छा है। आ चल!' कह कर मेरे कंधे पर हाथ रखे वह चलता रहा।

मैंने देखा कि नानी को बहुत काम करना पड़ता। वह केवल अपने और नाना के पेट पालने के लिए न करती बल्कि मामा माइक के बच्चों को भी पालती। उनमें शाश्का भी था। वह अब बहुत सुन्दर युवक हो गया था परन्तु किताबों का कीड़ा। वह रंगराजी की दूकानों पर काम करता था। उसकी एक बहन भी नानी के पास रहती जिसकी एक शराबी से शादी हुई थी पर उसने पीट कर उसे घर से निकाल दिया था।

मैं जब-जब नानी से मिलता, उसके व्यक्तित्व के प्रति अधिक श्रद्धालु हो जाता।

मुझे एक बात बड़ी अजीब लगती और बहुत अधिक इस विषय पर सोचा करता कि लोग शराब इतनी बुरी तरह क्यों पीते हैं और शराब पीकर औरतों से इस प्रकार का व्यवहार क्यों करते हैं जो अस्वाभाविक मालूम होता है। एक तरह से औरत और शराब ही क्या किसी को सुखी बना सकती है—यही मैं सोचा करता।

मुझे इस बात से बहुत ही कष्ट हुआ कि इतने अच्छे स्वभाव की नातालिया कोजलोवस्की भी दुश्चरित्र कहकर निकाल दी गई। मैंने सोचा कि नानी और रानी मारगोट के विषय में क्या होगा। रानी मारगोट तो सचमुच मेरे सपनों की रानी बन चुकी थी।

दरअसल में औरतें मेरे दिमाग पर छाई हुईं थीं। मेरे जी में सदा यह इच्छा रहती बल्कि हृदय में एक जलन रहती कि मेरा किसी स्त्री से संपर्क स्थापित हो जो अच्छे स्वभाव की हो और जिससे मैं निःसंकोच अपने मन की सभी बातें कह सकता।

पाल ने बड़ी सड़क के एक मकान में काम करने वाली नौकरानी से संबंध बना लिया था। वह कहता, 'कितनी अजीब बात है। पहले जिस स्त्री पर मैं बर्फ के टुकड़े फेंका करता था उसी के साथ अब बेंच पर बैठकर प्यार करता हूँ और इतना प्यार करता हूँ जितना दुनिया में किसी को नहीं किया।'

'तुम लोग क्या बात करते हो ?'

'सब कुछ ! वह मुझे अपने बारे में बताती है और मैं उसे अपने बारे में बताता हूँ। फिर हम लोग चूमते हैं। वह बहुत अच्छी है। और यही तो मुसीबत है कि सचमुच वह बहुत ही अच्छी है।'

मैं अब तक खूब धूम्रपान करने लगा था। अब तो तमाकू न पीता तो बेचैन हो जाता था। वोदका के प्रति अधिक प्रेम नहीं हुआ क्योंकि उसकी गन्ध व स्वाद मुझे अधिक पसन्द न थी। बल्कि पाल पीता और कहता, 'अब घर जाऊँगा!' यद्यपि मैं जानता था कि वह अनाथ है, उसके कोई भाई या बहन नहीं है। उसके माता पिता तो बहुत पहले मर गए थे और आठ वर्षों से वह इसी प्रकार जीवन बिता रहा था।

वसन्त आते-आते मैंने निश्चय किया कि जहाज पर नौकरी की जाय और यदि जहाज अस्त्राखान में रुके तो फारस भाग जाऊँ। फारस ही क्यों चुना यह मुझे आज याद नहीं।

मैं अवश्य ही कहीं भाग जाता यदि यह घटना न घटती कि ईस्टर के दिन जब सभी कारीगर जा चुके थे मैं अकेला नदी के किनारे बैठा था कि मेरा पुराना मालिक—मेरे नानी का भतीजा—आ गया। वह भूरा कोट पहने था—दोनों हाथ जेबों में थे और ओठों में सिगरेट दबी थी। उसने कहा, 'कहो, पेश्कोव!'

जब हम दोनों ने ईस्टर का प्यार एक दूसरे को दिया तो उसने हाल-चाल पूछा। मैंने अपने फारस जाने की योजना बता दी। 'लेकिन यह विचार दिमाग से निकाल दो।' उसने राय दी। 'तुम फारस में भला क्या पाओगे? मैं जानता हूँ कि इस उम्र में दिमाग में कितने फितूर आते हैं।'

उसकी बातें इस समय अच्छी लग रही थीं। उसने अपने जेब से चांदी का सिगरेट का डिब्बा निकाल कर कहा, 'लो सिगरेट पिओ।'

'बल्कि मेरे साथ आकर काम करो।' उसने प्रस्ताव रखा, इस वर्ष मेले की नई इमारतों के लिए मैंने ठेका लिया है। तुम्हें वहाँ का 'ओवरसियर' बनाऊँगा। तुम्हें सभी वस्तुओं

का हिसाब रखना होगा ताकि लोग सामान खराब न करें। मैं तुम्हें प्रति माह पांच रूबल दूंगा और पांच कोपेन खाने को। औरतें तुम्हें तंग न कर सकेंगी। तुम सुबह जाओगे और रात को आओगे। उनकी ओर ध्यान ही न देना। और उन्हें भी इस बात का पता न लगने देना। और इतवार को फोनीन स्ट्रीट चले जाना। ठीक रहेगा न !"

हम लोग पुराने मित्रों की तरह अलग हुए। जब कारखाने वालों को यह पता लगा कि मैं जा रहा हूँ तो सभी दुखी हुए। पाल सबसे अधिक दुखी था, 'सबको छोड़कर कहाँ जाओगे ?'

फिर सबों ने रोकर बिदा किया। सूखी आँखों से मूर्तियों ने भी बिदा दिया।

भिखारेव ने मेरी किताबें न लौटाईं। कम से कम लरमनतोभ को मैं ले ही जाना चाहता था। तभी भिखारेव ने जेब में रुपये डाल दिए।

मैं सबों के आंसुओं के बीच चल पड़ा।

सोलह

मेले के मैदान में बाढ़ का पानी भरा था और नाव को मैं खे रहा था जिस पर मालिक बैठा था ।

'बाढ़ बढ़ती ही जा रही है ! सब काम रुक रहा है ।' सिगार का धुआँ फेंकते हुए उसने कहा । उसने मुझे काम के सभी स्थान दिखा दिए । उसका चेहरा मैं गौर से देख रहा था । उसकी दाढ़ी अच्छी साफ बनी थी और मूँछें कतरी हुई थीं तथा ओठों के बीच सिगार खुँसा था । वह चमड़े की जाकिट पहने और कंधे पर एक झोला लटकाए था । वह अत्यधिक बेचैन सा था । रह-रह कर अपनी चमड़े की टोपी वह आंखों तक खींच लेता फिर सिर पर चढ़ा लेता । वह अपनी उम्र से कम ही लग रहा था । कोई भी उसे देख कर यह अनुमान कभी न लगा सकता कि उस पर इतनी अधिक जिम्मेदारियों का बोझ होगा ।

मैं तो आश्चर्य चकित था । कभी-कभी बादलों को चीर कर सूरज की किरणें पानी पर पीले धब्बे बना जातीं । बड़े-बड़े मकान ऐसे लगते जैसे वे तैर रहे हों और अभी ओका के रास्ते वोल्गा में बहने लगेंगे । नाव के चारों ओर टूटी टोकरियाँ, टूटे फरनीचर और अन्य कूड़ा इकट्ठा हो गया था । कुछ रस्सियाँ इस तरह पानी की सतह पर तैर रही थीं जैसे मरे हुए सांप हों । एक छत पर से एक स्त्री पानी की ओर ताक रही थी ।

एक जगह मालिक ने कहा, 'यहाँ बाजार का चौकीदार रहता है। वह खिड़की से निकल कर नाव पर चोरों को खोजता फिरता है और जब कोई नहीं होता तो खुद भी चोरी करता है।'

एक अजीब वातावरण हमारे चारों ओर था। हर कुछ, खामोश, शून्य, अस्वाभाविक जैसे सपने की दुनिया। वोल्गा और ओका का संगम विस्तृत हो गया था।

हमारी नाव वृक्षों की डालों में फंस गई। मालिक घबरा गया था। मैं इस स्थान से पूरी तरह परिचित था। सिगार मुंह से निकाल कर उसने थूका। उसने कहा, 'पेश्कोवा जीवन से ऊब गया हूं। बिलकुल ऊब गया हूँ। यहाँ कोई ऐसा नहीं जो समझदार हो। तुम अपनी प्रतिभा का विकास करना चाहते हो, लेकिन किसके लिए? इन बढ़ई, ईंटें पाथने वालों या धोबियों के लिए?'

वह दूर पहाड़ी पर बनी एक मसजिद की ओर देखकर इस तरह बोला जैसे किसी भूली बात को याद कर रहा हो, मेरी बियर और सिगार पीने की आदत पड़ी जब मैं एक जरमन के यहाँ काम कर रहा था। वे बहुत अच्छी जाति के लोग हैं। बियर बहुत अच्छा पेय है परन्तु सिगार उतना अच्छा नहीं। अगर एक पी लो तो बीबी कहेगी, 'यह क्या बदबू है? क्या किसी घुड़साल से आ रहे हो, जो इतनी बदबू आरही है।' मैं बताऊँ मेरे भाई, कि हम जितना जिएंगे धूर्त बनेंगे। लेकिन सदा सच्चे बने रहो……।'

सामने के मकान में कुछ चीनी रहते थे जिनके दीवालों पर चीनी चित्र बने थे। मालिक ने अपने बंदूक से एक चित्र पर निशाना साधा। परन्तु इससे कोई नुकसान नहीं हुआ। न

निशाना ठीक लगा, उसने कहा, 'खाली गया।' उसे यह स्वीकार करने में तनिक भी संकोच न लगा। उसने दूसरी गोली भरी और मुझसे पूछा, 'लड़कियों के साथ तो खूब चल रही है न? क्या तुम उनका पीछा नहीं करते? मैं तेरह वर्ष की उम्र में ही प्रेम में फंस गया था।' फिर जैसे वह मुझे सपने की बातें बता रहा हो। उसने अपने प्रेम की कहानी बताई। जिस इन्जीनियर के यहाँ वह काम सीखता था उसके घर की नौकरानी की छोकड़ी।

'मैं सो न सका।' मेरा मालिक कहता गया, 'कभी-कभी मैं बिछौने से बाहर आ कर दरवाजे पर कांपता खड़ा रहता, कुत्ते का तरह। वहाँ कितना ठंडा था! मेरा मालिक भी उसके पास रात को आता था लेकिन पकड़े जाने की मुझे तनिक भी चिन्ता न थी। जब उसे पता लगता तो वह दुःखी होती और मुझे अन्दर बुला लेती, 'बेवकूफ! भीतर आ जाओ।'

इस प्रकार प्रथम प्रेम की मैंने कई कहानियाँ सुनीं। सबों में मुझे एक अजीब प्रकार की मादकता का अनुभव हुआ। और मेरी धारणा बन गई कि प्रथम प्रेम ही सर्वश्रेष्ठ प्रेम होता होगा। तभी हँसकर मालिक ने कहा, 'लेकिन क्या यह कहानियाँ पत्नी से बताई जा सकती हैं? नहीं, इसमें नुकसान ही क्या है? लेकिन नहीं बताई जाती। यह ऐसी कहानी है कि.........'।

वह जैसे अपने को ही सब सुना रहा था मुझे नहीं। जब वह चुप हो जाता तो मैं सोचने लगता। उसने फिर कहा,।

'सब से बड़ी बात है, जल्दी शादी न करना।' उसने सलाह दी, 'शादी के बाद जीवन में जमना पड़ता है। अभी तो तुम जहाँ भी जिस तरह चाहो रह सकते हो। तुम फारस में मुसलमान बनकर रहो या तो मास्को में रहो। अभी तुम जीवन

को अपने ढांचे में ढाल सकते हो। लेकिन भाई, जब शादी हो जाएगी तब तुम्हें विवश होना पड़ेगा। पत्नी को काबू में नहीं रखा जा सकता। न तो पुराने जूते की तरह छोड़ा ही जा सकता है।' कहते-कहते उसके चेहरे का भाव बदल गया। उसने कहा, 'मैं कुनाविन गली जाऊँगा। मैं वहाँ रात भर रहूँगा। तुम घर जाकर बता देना कि मुझे ठीकेदारों के साथ रहना पड़ा है।'

वह गली में उतर गया और मैं वापस आया। स्त्रावेल्का में मैं रुक गया। नाव बांध दी और दोनों नदियों के संगम को देखता रहा। यहां सब दृश्य बहुत प्यारा था। लहरें भी तेज थीं। चारों ओर से मल्लाहों की पुकारों का शोर था। थोड़ी देर के बाद मैं वापस आया। रास्ते में कुनाविन में रुका। वहां से वोल्गा का दृश्य दिखाई पड़ता था।

घर पर मेरे पास काफी किताबें थीं। रानी मारगोट का घर अब एक परिवार सरीखा हो गया था उसमें पांच जवान औरतें थीं। सभी एक दूसरी से खूबसूरत, प्यारी। और दो स्कूली लड़के थे जिनसे मैं किताबें लेता था। मुझे तुर्गनेव बहुत पसन्द आया। उसकी सूक्ष्म दृष्टि और सीधी बातें कहने का सीधा ढंग बहुत प्रभावोत्पादक था। मैंने पोमियालोस्की की 'दि स्टाक मारकेट' पढ़ा और मुझे मूर्तियों के कारखाने की सच्ची तस्वीर दिखाई पड़ी। रूसी पुस्तकें बहुत अच्छी लगीं। 'मरी आत्माएँ', 'मुर्दों का घर', आदि शीर्षक यद्यपि मुझे आकर्षित करते थे परन्तु मन न भरता था। डिकेन्स और स्काट ने बहुत प्रभावित किया। कई बार इनकी रचनाएँ पढ़ीं।

रात को छत पर जमघट होती। उनमें एक भाई, उसकी युवती बहनें और व्याचसलाव व सोमास्को भी होते। कभी कभी एक बहुत बड़े अफसर की लड़की मिस प्टिवजीन भी

हमारा साथ देती। साहित्यिक चर्चा होती जिसमें मैं रस लेता। क्योंकि उन सबों में मैंने ही सब से अधिक पुस्तकें अब तक पढ़ा था। इसलिए कि अब तक के मेरे सभी साथी मुझसे बड़ी उम्र के थे अतः मैं इन सबों से अधिक होशियार भी था। मैं जब वापस आता तब भी उन्हीं के जीवन के बारे में सोचता— शायद यह जीवन कुछ मंहगा था। ये लोग अधिक तर युवती स्त्रियों और प्रेम की बातें करते और अपने-अपने प्रेमिकाओं के लिए कविताएँ बनाते जिसमें मैं बहुत सहायक होता। थोड़े दिनों में मैंने अचानक पाया कि मेरी व मिस प्टिटजीन की घनिष्टता बहुत बढ़ गई है।

उन लोगों की मंडली में पीछे न रहूं इसलिए मिस प्टिटजीन के लिए मैंने भी कविता बनाई। मुझे अधिक तो याद नहीं पर इसका अंत अच्छा न था। एक बार एक तालाब में उसे सैर कराने ले गया। अचानक वह गिर पड़ी और डूबने लगी, मैं फौरन ही कूदा और उसे बचा लिया। मुझ पर घूंसा तान कर उसने कहा, 'तुमने जान कर मुझे डुबाया था।' मेरा प्यार बेकार गया और उस दिन से वह मेरी दुश्मन बन गई।

शहर का जीवन बहुत अच्छा न लगा। मेरे मालिक ने अपने और अपने भाई की शक्ति से अधिक कार्य भार उठा लिया था इसलिए उसने मेरे सौतेले पिता को साथ लिया। एक दिन खाने के कमरे में मालिक के बगल में उसे बैठा देखकर मैं आश्चर्य में डूब गया। उसने मेरी ओर हाथ बढ़ाकर कहा, 'हलो।'

मुझे पीछे की सारी घटनाएँ याद हो आईं। मैंने उसकी उँगलियों पर अपना हाथ धर दिया। खांस कर उसने कहा, 'तो हम फिर मिल ही गए।' मैं ऊब कर बाहर चला आया।

हम और वह दोनों एक दूसरे से खिंचे रहते। अक्सर वह शान के स्वर में कहता, 'जब बाजार जाना तो, एक पौंड तमाखू मेरे लिए लेते आना, सौ सिगरेटों वाला एक डिब्बा।' मैंने जब भी इसके लिए रुपये पाए तो उनमें एक अजीब तरह की गर्माहट होती थी। अक्सर वह अपनी नुकीली दाढ़ी सीधी करके गहराई से बोलता, 'मैं यों तो बिल्कुल ही अच्छा नहीं होऊँगा। लेकिन अगर काफी मात्रा में गोश्त खाने को मिले तो मैं अच्छा हो सकता हूं।'

वह बहुत अधिक खाता था। उसके मुंह से सिगरेट कभी दूर न होती, केवल खाने के समय छूटती। उसके लिए मैं बहुत सी चीजें ला देता जिस पर बुढ़िया कहती, 'किस मुर्दे का इलाज कर रहे हो। वह अच्छा न होगा।'

मालिक की पत्नी भी उसे तरह-तरह की दवाइयां बताती। फिर उसके पीछे कहती, 'ऐसा भी क्या आदमी! हम लोग खाने की मेज को अच्छी तरह साफ किया करेंगे।'

'शांत रहो।' मालिक कहता, 'चिन्ता काहे की है! वह शीघ्र ही कब्र के नीचे होगा।'

उसके प्रति लोगों के व्यवहार ने मुझे विवश किया कि मैं अपने सौतेले पिता के प्रति दया दिखाऊँ। अपने जीवन के प्रारम्भ में मिले एक 'भलेमानस' से वह बहुत मिलता जुलता था।

मेरी मालकिन उससे अत्यधिक चिढ़ती। जब भी वह खाना खाने के बाद पानी से भीतर गला साफ करता।

रात को बुढ़िया खुदा से प्रार्थना करती, 'एक यह नई मुसीबत आ गई है। विक्टर का मामला फिर टल गया।'

एक बार मालिक ने अपने भाई से कहा, 'तुम अब फ्रेंच सीख रहे हो। अब शायद किसी स्त्री को भी लाओगे ?'

मेरा सौतेला बाप हँसा। पहली बार उसे हँसने देखा। तभी मालकिन ने टेबुल पर चम्मच पटक दिया, 'मेरे सामने ही इस तरह की बदतमीजी !'

अक्सर रात को वह उठ कर मेरी खाट के पास आता और अधिकतर मुझे खिड़की पर बैठ कर पढ़ता पाता। वह सिगरेट का धुआँ फेंक कर पूछता, 'पढ़ रहे हो ? कौन सी किताब है ?' फिर उसका नाम पढ़ कर कहता, 'मैं समझता हूँ कि मैं पढ़ चुका हूं। लो सिगरेट पिओगे ?'

हम साथ बैठ कर सिगरेट पीते। फिर खिड़की के बाहर देखकर कहता, 'कितने दुख की बात है कि तुम कालिज में नहीं पढ़ रहे। तुममें बहुत योग्यता है।'

'मैं पढ़ रहा हूँ सो भी तो अध्ययन ही है।'

'नहीं यह काफी नहीं, तुम्हें स्कूल में ढंग की पढ़ाई करनी चाहिए।'

एक बार उसने कहा, 'तुम यहाँ से चले जाओ तो अच्छा हो। मैं तुम्हारा यहां ठहरना किसी तरह हितकर नहीं समझता।'

'मुझे काम में मजा आता है।'

'इसमें मजे की क्या बात है ?'

'इन लोगों के साथ काम करना बहुत मजेदार है।'

'ठीक कहते हो।' लेकिन बाद में एक बार कहा 'ये तेरे, मालिक लोग कितने धूर्त हैं !'

उसने कभी मेरी मां की चर्चा नहीं चलाई। न कभी उसका नाम लिया इससे उसके प्रति मेरी घृणा भड़क न सकी। मुझे याद तो नहीं कि यह विषय कैसे आ गया परन्तु एक दिन मैंने उससे खुदा की बात चलाई। उसने कहा, 'मैं नहीं जानता। खुदा पर मुझे विश्वास नहीं।'

इससे मुझे सिलानोव याद आ गया। उसके विषय में मैंने चर्चा की। मेरे सौतेले पिता को देखकर किसी व्यक्ति के घुल-घुल कर मरने की सहज कल्पना की जा सकती थी। एक बरसाती दिन में उसने कहा, मुझे अत्यधिक कमजोरी लग रही है। शायद मुझे शीघ्र ही खाट पकड़नी पड़ेगी।

कई दिनों तक मैं काम में बुरी तरह फंसा रहा। फिर घर गया तो बुढ़िया ने एक बड़ा सफेद, लिफाफा देकर कहा, 'मैं देना भूल गई थी। कल आया था। एक स्त्री लेकर आई थी।'

उसमें एक कागज का टुकड़ा था। ऊसपर किसी अस्पताल का नाम था। और लिखा था, 'जब तुम्हें समय मिले मुझसे आकर मिलना। मैं मारटीनोवर की अस्पताल में हूं—ई० एम०।'

दूसरे दिन सुबह ही मैं अस्पताल गया। एक बड़ी खाट पर मेरा सौतेला बाप लेटा था और उसी पर मैं बैठ गया। उसने एक टक मुझे देखना शुरू किया। मैंने देखा कि खाट के सिरहाने स्टूल पर एक लड़की बैठी थी उसके हाथ उसकी तकिए पर थे। वह लड़की काफी दुबली-पतली थी। उसके लम्बे गोल चेहरे पर आँसू लुढ़क रहे थे। उसने रोनी आवाज

मैं कहा, 'यदि एक पादरी आ जाता। लेकिन वह नहीं चाहते।' कहते हुए उसने तकिया पर से हाथ उठा कर अपने कलेजे पर रख लिया मानो प्रार्थना की मुद्रा में हो।

मेरे सौतेले बाप ने बहुत कष्ट से आँखें खोलीं और छत की ओर ताका। फिर कहा, 'तुम आगए! मैं अच्छा न होऊँगा।'

इतना कहने में ही वह इतना थक गया कि उसने आँखें बंद कर लीं। मैंने उसकी लम्बे नाखूनों वाली नीली उँगलियाँ छुईं। लड़की ने फिर कहा, 'इजेने, हमारा परिचय करा दो।'

'तुम लोग परिचित हो लो।' उसने कहा, 'यह लड़की...।'

फिर वह चुप हो गया। उसका मुँह फैल गया और एक ऐसी आवाज निकली जैसे कौवा बोलता है। लड़की झपटी, कम्बल पर झुकी और तकिये में मुँह छिपा लिया।

बहुत शीघ्र मौत हुई और उसका चेहरा फिर पहले जैसा ठीक हो गया। लड़की की बाँह पकड़ कर हम दोनों अस्पताल से बाहर आए। वह तो पंगु की तरह चल रही थी, रोती हुई। एकाएक वह रुकी, मुझसे इस प्रकार चिपट गई जैसे डरी हो और बोली, 'मैं अब एक वर्ष भी नहीं जी सकूँगी। ऐ खुदा, यह सब क्या है!'

तब अपना हाथ बाहर निकाल कर उसने कहा, 'अच्छा नमस्कार! कल अन्तिम क्रिया होगी।'

'मैं तुम्हारे साथ घर चलूँ?'

'क्यों, यह रात तो नहीं है !'

खड़ा मैं उसे दूर तक जाते हुए देखता रहा। वह बहुत ही धीरे धीरे जा रही थी जैसे कोई जल्दी न हो अगस्त का यह महीना था। पत्तियाँ गिरना शुरु हो गई थीं। मैं अन्तिम क्रिया में शामिल न हो सका। और वही उस लड़की से मेरी अन्तिम भेंट भी थी।

सत्रह

मेले के मैदान में मेरा समय प्रातः ६ बजे से शुरू हो जाता। काम करने वाले बहुत दिलचस्प लोग थे। ओसिप, भूरे बालों वाला व्यक्ति बढ़ई-सरदार था, येफिन, पीटर, ग्रेगरी शिशलीन, आदि।

मैं पहले ही से उनसे बहुत घुलमिल गया था। प्रत्येक रविवार को ये लोग रसोई घर में इकट्ठे होते। मैं शिशलीन के पास गया कि इस गोल के शामिल हो जाऊँ। परन्तु उसने इन्कार कर दिया, 'अभी नहीं। अभी बहुत काम है। दूसरे वर्ष देखा जायगा।'

रविवार को सुबह गोलमेज के चारों ओर बेंच पर बैठे ये लोग जब मालिक का इन्तजार करते रहते तो बड़ी दिलचस्प बातें करते। मालिक आता, सबों से हाथ मिलाकर ऊँची जगह पर बैठता। फिर तो काफी देर तक हँसी मजाक की बातें होती रहती।

जो काम मुझे दिया गया था वह केवल यह था कि मैं इन लोगों पर सदा नजर रखूँ कि ये कोई सामान गड़बड़ न करें। मेरे मालिक के कार्य के अलावा भी वे कहीं न कहीं और भी कार्य करते थे अतः चीजों का गायब होना स्वाभाविक था। मेरा सबों ने उचित स्वागत किया। शिशलीन ने कहा, 'याद रखना कि तुमने मुझसे दल में आने की इच्छा प्रकट किया था। अब तुम मेरे ओवरसियर हो।'

ओसिप ने कहा, 'अपनी नजर पानी पर रखो, खुदा पर भरोसा रखो।'

अपना कार्य मुझे आसान न लगा। ये सभी अपने कार्य में काफी कुशल थे परन्तु चोरों की तरह मुझे उन पर नजर रखनी पड़ती थी। येफिन हर औरत को अजीब तरह घूरता। जब कुनाविन स्ट्रीट की स्त्रियाँ आतीं तो येफिन छत से नीचे आजाता और किसी कोने में खड़ा होकर उन्हें घूरता रहता। वह कहता, 'खुदा ने मेरे लिए कैसी अच्छी तितली भेज दिया है।'

यदि कोई स्त्री कह देती, 'यह आदमी बुरा तो नहीं।' तो वह बहुत खुश होता।

अक्सर उसकी इस प्रकार की हरकतों से ऊब कर ओसिप पूछता, 'तुम्हारी क्या उम्र है?'

'चौवालिस! पर मैं शरीर से इससे युवा हूँ—कोई भी स्त्री मुझे बूढ़ा नहीं कह सकती।'

इस पर पीटर भाषण की मुद्रा में कहता, 'तुम अब अपने पचासवें की ओर बढ़ रहे हो। अभी से होशियार न रहोगे तो इसका अंत बुरा होगा।'

ग्रेगरी कहता, 'तुम्हें अपने आप पर शर्म आनी चाहिए।'

ग्रेगरी के एक पत्नी भी थी जो देहात में रहती थी। ग्रेगरी की नजर भी उन स्त्रियों पर लगी थी। शिशलीन अपने दल का नेता था, एक बार मालिक की आज्ञा उसे सुनाते हुए मैंने कहा, 'तुम्हारा आदमी बहुत सुस्त है।'

सुनकर उसने ऐसा भाव बनाया कि मैं जान गया कि मुझे यह कहना न चाहिए था।

मालिक मुझे खाने को जो पांच कोपेक देता था वह पूरा न होता और मुझे अकसर भूखा रह जाना पड़ता। कभी-कभी तो कारीगर लोग मुझे अपने साथ ले जाते और खिला पिला देते। उनके इस प्रकार की दावतों को मैंने कभी भी इन्कार नहीं किया था।

येफिन ने बहुतों से कर्ज ले रखा था, उसे डर था कि कहीं रुपया पाने वाले किसी दिन उसे पीट न दें। वह बड़ी शान्ति से कहता, 'वे यह क्यों नहीं समझते कि यदि मेरे पास रुपया होगा तो फौरन ही उन्हें दे दूंगा।'

'ओह, गरीबी का कड़ुवा स्वाद भी क्या है।' ओसिप कहता। येफिन को चुप देखकर पूछता, 'खामोश क्यों हो?'

'मैं सोच रहा था, कि किस तरह मैं एक बहुत शरीफ स्त्री से शादी करूँ। यदि रुपया होता तो कर्नल की लड़की ही ठीक थी। खुदा ही जानता है कि मैंने उसे कितना प्यार किया है। क्योंकि भाइयों, एक बार एक कर्नल के घर की छत मैं बना...'

'हाँ हाँ हम लोगों को उसकी विधवा लड़की के बारे में मालूम है।' पीटर को बीच में ही टोका।

लेकिन येफिन कहता ही गया, 'कभी-कभी बिल्कुल सफेद कपड़े पहन कर वह बगीचे में आती। मैं उसे छत पर से देखता रह जाता। वाह, अगर किसी को ऐसी स्त्री मिल जाए!'

'मिल तो जाए! खाने-पीने का क्या होगा?' पीटर ने पूछा।

ऐसे प्रश्नों से येफिन कभी चिन्तित न होता, 'हमें अधिक खाना भी तो नहीं चाहता, फिर वह इतनी धनी भी तो है।'

'तो तू यह ऊँचे पैमाने की जिन्दगी कब से शुरू कर रहे हो?' हँसकर ओसिप ने पूछा।

लेकिन सदा ही स्त्रियों की बातें करता था। वह मिहनती भी था इससे वह जब काम समाप्त कर लेता तो स्त्रियों की ओर ही ताकने लगता।

ओसिप से किसी भी विषय पर बातें हो सकती थीं। ग्रेगरी की बातों में खुदा बहुत रहता, वह विश्वास के स्वरों में कहता।

'कुछ लोग खुदा पर विश्वास नहीं रखते। यह जानते हो ना।' मैंने पूछा।

'तुम्हारा मतलब क्या है ?' उसने उत्तर में प्रश्न किया।

'वे भगवान के अस्तित्व पर विश्वास नहीं रखते।'

'अच्छा ! लेकिन वे यह नहीं जानते कि खुदा के बिना वे भी कुछ नहीं हैं।'

ग्रेगरी बड़ा शराबी भी न था। दो गिलास में वह भर जाता था।

मैं एक किताब मेले के मैदान में ले गया। नाम था, 'बढ़ई-समाज'। इसके लिए सबों ने दिलचस्पी दिखाई। 'हम लोग मिल कर रात को सामूहिक पाठ करेंगे।'

अट्ठारह

ओसिप को देखकर मुझे सदा जेक की याद आती क्योंकि सचमुच वह उससे बहुत मिलता-जुलता था। और ओसिप के चेहरे पर नाना व स्मावरी के चेहरों की भी कभी-कभी झलक मिल जाती थी। मेरे मस्तिष्क पर जिन चेहरों की छाप पड़ी थी उनमें यह व्यक्ति सब से अधिक गहरा निशान बना चुका था। उसके जिस वस्तु ने मुझे अधिक प्रभावित किया वह था उसका दोहरा व्यक्तित्व। एक तो कारीगर के रूप में, दूसरा एक मस्त और अल्हड़ व्यक्ति के रूप में। वह मुझे अत्यधिक चतुर व्यक्ति लगता था इसलिए मैं अधिक से अधिक समय उसके साथ बिता कर उसे बहुत गहराई से समझने की कोशिश कर रहा था। परन्तु मैं अपने इस कार्य में बहुत सफल नहीं हो पा रहा था। उसे देख कर लगता जैसे वह अभी कम से कम सौ वर्ष तक इसी तरह बिना किसी परिवर्तन के बना रहेगा।

जून के प्रारम्भ में एक दिन एक दाढ़ी वाले, नंगे सिर वाले बग्घी के कोचवान ने बहुत अधिक शराब पी लिया था। उसका ओंठ कटा था और उसकी बग्घी में शराब में धुत्त अंगारी शिशा-शीन एक लाल दिखने वाली लड़की की बाहों में पड़ा था। वह लड़की बड़बड़ा रही थी—'क्या बकवास है! मेला अभी शुरू नहीं है? यह कमबख्त मुझे मेला दिखाने लाया था!'

उस स्त्री ने उसे तनिक सी धक्का दिया और वह धरती पर आ रहा। सभी ठठा कर हंस पड़े। उसी समय बग्गीवाले ने कहा, 'ओफ! अब तो घोड़े आराम करना चाहते हैं!'

ग्रेगरी के नीचे काम करने वाले लोग अपने प्रधान की दशा पर हँसते न थकते थे। केवल टाम नहीं हँस रहा था। वह मेरे बगल में खड़ा धीरे-धीरे कह रहा था, 'क्या बात है! उसकी स्त्री सचमुच अद्भुत सुन्दरी है।'

बग्घी वाला लगातार चलने की जिद कर रहा था। वह स्त्री उतरी। ग्रेगरी की टांग पकड़ कर खींचा, चढ़ाया और कहा 'गाड़ी बढ़ाओ!'

थोड़ा हँस कर सभी अपने-अपने कार्य में लग गए। मैं ग्रेगरी और उसकी स्त्री के विषय में सोचकर चक्कर में पड़ गया।

मुझे आश्चर्य था कि ग्रेगरी किस प्रकार प्रधान बन गया और टाम तुकशोब उसका सहयोगी। अच्छे कपड़े पहनने पर टाम किसी बड़े परिवार का लड़का मालूम पड़ता। कुछ पढ़ा लिखा भी था। वह ग्रेगरी का हिसाब-किताब रखता था।

जब मैंने उससे पूछा कि वह स्वयं ही ठेकेदारी क्यों नहीं करता तो उसने उत्तर दिया, 'मैं इस चक्कर में क्यों पड़ूँ मैं तो किसी धनी विधवा के फेर में हूं जिससे विवाह करके धनी बनूँ।'

जब मेला शुरू हुआ तो उसने एक होटल में बेयरा का काम कर लिया जिससे सभी को आश्चर्य हुआ। अक्सर उसके साथी काम करने वाले होटल में इसीलिये जाते कि अपने साथी के दर्शन पा जाएँ। होटल में ग्राहकों की भी

तरह मित्रों से आकर वह पूछता, 'आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?'

'क्या तुम्हें हमारी याद नहीं ?'

'कहाँ तक किसे याद रखा जाए ?'

तीन साल के बाद हमने जब उसे स्तालिनग्राड में देखा तब भी वह बेयरा ही था। लेकिन उसके कुछ दिनों बाद ही अखबार में पढ़ा कि टाम चोरी में पकड़ा गया है।

इसी तरह ईंटों के सौदागर पीटर और उसके सहयोगी अर्दी-लोन के लिये मुझे आश्चर्य था। पीटर क्योंकर उसका मालिक हो सका ? एक दिन एकाएक वह गायब हो गया। वह विधुर था। इसलिए डर कर फिर खोजने निकला। बाद में ओसिप भी गया और मैं भी साथ गया। रास्ते में ओसिप ने कहा, 'एलेक्स। इससे तुम शिक्षा लो।'

हमारी मंजिल जहाँ समाप्त हुई वह कुनाविन का एक अंधेरा कोना था जहाँ हम लोग एक बुढ़िया से मिले। थोड़ी देर की फुसफुसाहट के पश्चात हमलोगों को वह एक अंधेरे और छोटे से कमरे में ले गई जहां अस्तबल की दुर्गन्ध आ रही थी। वहाँ एक खाट पर एक स्त्री सो रही थी जिसके सोने में भी एक अजीब भाव प्रदर्शन का आभास मिलता था। बुढ़िया ने उसे हिला कर जगाया, उठो उठो।'

'अरे वाह, क्या बात है ? कौन है ? क्यों उठूँ ?'

'जासूस !' ओसिप ने कहा और थूक कर फिर शुरू किया, 'जासूस इनके लिए शैतान से भी बढ़ कर हैं।'

तभी बुढ़िया ने दीवाल पर टंगे एक शीशे को हटा दिया

और दीवाल पर चिपके कागज को मोड़ा और कहा, 'देखो क्या यही आदमी है।'

जहाँ कागज मोड़ा गया था वहाँ दीवाल में एक छेद था। उससे देखकर ओसिप ने कहा, 'हाँ वही है। उस औरत को निकालो।'

मैंने भी उसी छेद से देखा। खिड़की बंद थी। एक तातार स्त्री नंगी बैठी अपनी चोली की मरम्मत कर रही थी। उसके पीछे खाट बिछी थी जिसके तकिए पर हम लोग अर्दालोन का सिर और उसकी दाढ़ी देख रहे थे।

एक झटके से स्त्री ने चोली पहन ली और खाट की ओर बढ़ी कि अचानक वह हमारे कमरे में आ गई।

ओसिप ने उसे गौर से देखा और डांटा, 'हूँ, चुड़ैल!'

उस तातार स्त्री के साथ हम लोग उस कमरे में गए। खाट पर ओसिप बैठ गया, 'कहो!'

'मुझे यहां जबरदस्ती बन्द किया गया है।' अर्दालोन ने कहा।

'सो कैसे?'

उत्तर में अर्दालोन ने मेज पर रखी वोद्का की एक खुली बोतल उठा ली और पीने लगा। फिर अर्दालोन ने कहा, 'वह बेचारी तातार स्त्री। जैसा कि येफीन कहता था......।'

तभी दीवार के पीछे से स्त्री चीख उठी। सभी का ध्यान उस ओर चला गया। ओसिप ने कहा, 'मैंने उसे भी देखा है।'

मुझसे अर्दालोन ने कहा, 'अच्छा भाई, तुमने भी तो देख लिया न कि मैं कैसा आदमी हूँ।'

मैं तो किसी भयंकर द्वंद्व की कल्पना किए था पर यहां तो

देखा कि दोनों कंधे से कंधे मिलाए बैठे हैं और हँस-हँस कर बातें कर रहे हैं। स्त्री दीवाल के ऊपर से अजीब-अजीब आवाजें पैदा कर रही थी परन्तु सबों ने उसकी उपेक्षा ही की।

ओसिप ने पूछा, 'सब पैसे खतम ?'

'नहीं, कुछ पीतर ने ले लिए थे।'

'तो अभी तुम्हारा भागने का इरादा नहीं है ?'

'क्यों ?'

'तो तुम्हारा दिमाग फिर गया है।'

तभी वह तातार स्त्री एक झटके में भीतर आई और अपना कपड़ा लत्ता लेकर चली गई। ओसिप ने कहा, 'युवती है।'

अर्दालोन ने कहा, 'येफिम गलत नहीं था ! उनके दिमाग में हर समय तातार स्त्रियाँ ही चक्कर काटती हैं। लेकिन तातार स्त्री बहुत सुख देती हैं। वे देह में आग लगा देती हैं।'

'अच्छा होशियार रहना नहीं तो उससे छुटकारा न पा सकोगे।' ओसिप ने आगाह किया और नमस्कार कर के उठा।

वापस आते समय मैंने ओसिप से पूछा, 'वहां क्यों गए थे ?'

'सिर्फ देखने के लिए। मैं उन्हें बरसों से जानता हूं। वह कोई पहला व्यक्ति नहीं जो इसके चंगुल में फँसा है।' फिर क्षण भर चुप रह कर कहा, 'यह सब वोदका का नशा है, लेकिन इसके बिना जीवन कितना सूना भी तो होता है।'

'वोदका के बिना।'

'हाँ, पीकर देखो, जैसे दूसरी दुनिया में पहुँच जाओगे।'

अर्दालान कई दिन के बाद काम पर वापस आया। लेकिन बहुत कम दिनों के लिए। वसन्त में मैंने उसे बन्दरगाह के मजदूरों के बीच देखा। हम दोनों ने मित्रों की तरह

नमस्कार किए। दोनों ने साथ ही साथ चाय भी पिया। उसने कहा, 'याद रखो, मेरा हाथ कितना अच्छा था। मैं बहुत कमा सकता था।'

'लेकिन क्यों नहीं कमाया ?'

'नहीं, मैं ऐसे काम पर थूकता हूँ।'

मैंने देखा कि साल भर पहले यह अन्द्रीलोन कितना शांत व्यक्ति था और अब कितना धूर्त हो गया है। वह जैसे हर से लड़ने को तैयार था, उसने कहा, 'मैं यहाँ सब का नेता हूं।'

ओसिप को पता लग गया था कि मैं उससे मिलता हूं। उसने एक दिन पिता की तरह स्नेह पूर्ण डांट बताई, 'बेटे होशियार ही रहना।'

मैंने उसे समझाना चाहा कि मुझे केवल उनके मस्ती के जीवन के प्रति ही आकर्षण है। वह हँस पड़ा, 'हवा की चिड़ियाँ।'

उसके अलावा एक दिन मालिक ने भी मुझे आगाह किया।

फिर तो धीरे-धीरे मैंने उधर जाना छोड़ दिया। एक बार मैं वहीं छत पर अन्द्रीलोन और रोबनोक के साथ बैठा हँसी मजाक में मजा ले रहा था कि अचानक एक स्त्री आई। सामने एक कपड़ा फेंक कर उसने कहा, 'दोस्तों ! यह पेटीकोट कोई खरीदेगा ?'

अचानक चारों ओर से स्त्रियाँ दौड़ आईं और बेचनेवाली को घेर लिया। मैंने फौरन पहचान लिया कि यह थोबिन नाता-लिया थी। उसने सौदा बेचा और नीचे उतरी। जब तक मैं नीचे जाऊँ वह गायब हो गई थी। परन्तु अन्त में मैंने खोज ही लिया, 'कहो कैसी हो ?'

'अरे वाह, तुम यहाँ कैसे ?' मुझे देख कर वह बिल्कुल

घबड़ा गई थी । मैंने उसे बताया कि मैं यहाँ रहता नहीं यों ही आया था ।

'वाह यह भी भला कोई आने का स्थान है ? तो तुम अब औरतों के चक्कर में हो ।'

मुझे एक होटल के दरवाजे पर ले जाकर उसने कहा, 'आकर एक गिलास चा पिओ ।'

मेरे प्याले में चा उंडेलते हुए उसने कहा, 'मैंने अभी ही नाश्ता किया है । और कल रात को मैंने बहुत शराब पी थी पर यह न बताऊँगी कि किसके साथ पी थी ।'

मुझे उस पर तनिक दुख ही हुआ । मैं उसकी बेटी के विषय में जानने को बहुत उत्सुक था । जब उसने थोड़ी चाय और शराब पी तब उसमें उस गली की साधारण स्त्री की स्वाभाविकता स्पष्ट दिखाई पड़ी । लेकिन ज्योंही मैंने उसकी बेटी के लिए प्रश्न किया कि वह एकाएक गम्भीर हो गई ।

'तुम क्यों इतने उत्सुक हो ? मेरे बेटे, उस पर हाथ न लगा सकोगे । उसे अपने दिमाग से निकाल दो ।' और थोड़ी देर में जब उसने और अधिक पी लिया तो बोली, 'मेरी बेटी और मुझमें कोई संबंध नहीं है । मैं तो केवल एक धोबिन हूँ—वैसी पढ़ी लिखी लड़की की माँ नहीं बन सकती । वह अध्यापिका बन कर चली गई है जहाँ वह एक धनी मित्र के साथ रहती है जो——' एक क्षण रुक कर फिर बोली, 'और तुम गली की स्त्रियों के पीछे—'

थोड़ी देर तक मुझे शून्य दृष्टि से देखकर उसने कहा, 'अब तुम यहाँ न आना । मैं प्रार्थना करती हूं ।'

उसके आँखों से अचानक आँसू बहने लगे जिनसे मैं भी द्रवित हो उठा । उसके आँसू चा के प्याले में चू पड़े । प्याले

खिसका कर उसने आँखें पोंछ लीं और मैं उसे अधिक सहन न कर सका। उठ कर कहा, 'नमस्कार।'

'क्या ? जा रहे हो ?' उसने शून्य में ही जैसे कह दिया।

मैंने वापस आकर अर्दालोन को खोजा ताकि मैं उससे नाता-लिया के विषय में बातें कर सकूँ। परन्तु वे दोनों ही न मिले—न अर्दालोन न रोबेनोक। बाहर आकर मैंने नातालिया को देखा जो रो-रोकर रुमाल गीलाकर रही थी और वह अपने बाल भी हाथ से संवार रही थी। उसके पीछे ही अर्दालोन और रोबेनोक आ रहे थे। वे चीखे, 'आओ तुम भी शामिल होकर इसका मजा लो।'

गुस्से में नातालिया घूमी। उसके बड़े-बड़े स्तन हिले, आँखें आग बरसाने लगीं। वह चीख उठी, 'आओ मुझे मारोगे ?'

मैंने अर्दालोन को कस कर जकड़ लिया। उसने मुझे आश्चर्य से देखा। मैंने डाँटा, 'तुम्हें क्या हो गया है ? उसे छूना मत !'

वह ठठाकर हँस पड़ा, 'तो वह तेरी प्रेयसी है ? वाह नातालिया !'

रोबनोक भी हँसी में साथ दे रहा था। मैंने उसे धक्का दिया। डर कर वह भाग गया। उसके बाद मैं उधर फिर कभी न गया। एक बार अर्दालोन मुझे मिला और मैंने उसे बताया कि नातालिया को उनके सताने के कारण मैं कितना दुखी हूँ तो उसने हँस कर कहा, 'तो तुमने सब को गम्भीरता पूर्वक लिया। हम लोग तो केवल मजाक कर रहे थे।'

'तुम्हें मजाक करने का क्या हक था ?'

मेरा कंधा उसने हिलाया। फिर कहा, 'मैं समझता हूं।'

उसने भी कहा था। इसीलिए उस दिन भी क्रोध आने पर भी मैंने उसे नमस्कार किया।

उन्नीस

जाड़े के कारण मेले में कोई कार्य न था अतः मेरी शामें बिल्कुल खाली रहती थीं। फिर मैं मालिक के परिवार को 'मास्को गजट' पढ़कर सुनाया करता लेकिन रात का काफी समय मैं अपने पसन्द की किताबें पढ़ने में बिताता।

एक दिन जब घर की स्त्रियाँ गिरजा गई थीं और बीमार होकर मालिक पड़ा था तो उसने प्रश्न किया, 'क्या यह सच है कि तू कविताएँ बनाता है, तो एक पढ़ कर मुझे भी सुना।'

मैं इन्कार न कर सका और कुछ कविताएँ सुनाईं जो उसे प्रभावित न कर सकीं। परन्तु उसने कहा, 'कोशिश करो। शायद तुम पुश्किन जैसा लिखने लगो। क्या इसे पढ़ा है?'

रविवार को दोपहर के खाने के बाद से नौ बजे तक मैं बेकार रहता था। मैं इधर-उधर घूमा करता। यामस्की स्ट्रीट के एक होटल का मालिक संगीतप्रिय व्यक्ति था। वह गवैयों को बुलाता था और उन्हें, वोदका, बियर और चाय पिलाता था।

गाने वाले ऊँची जगह पर बैठते। उनमें सबसे अच्छा क्लेशोव गाता था। उसकी सुरीली आवाज और उसका छोटा

शरीर अनुपात से ठीक ही था । व्लाडमी लीजा नामक एक स्त्री भी दूर बैठकर उसका संगीत सुनती ।

एक बार जब गाना गाकर वह चला गया तब होटलवालों ने उसे छेड़ना शुरू किया, 'क्लेशोव के साथ एक मजाक रहे तो कितना अच्छा हो ।'

लेकिन उसने इन्कार कर दिया । होटल वाला हमेशा ही क्लेशोव को खूब पिला देता था । लेकिन दो तीन गीत गाकर वह ऊनी चादर लपेट लेता और टोपी पहन कर चल देता । वह संभवत: उसे बुरा लगता और उसके जाने के बाद वह दूसरे गवैये को बुलाकर गाना सुनता । दूसरे सुनने वाले कहते, 'नहीं वह इससे अच्छा गाता है ।'

मैं बराबर क्लेशोव के गुण गाया करता । एक दिन मालिक ने कहा, 'मैं भी सुनूंगा ।'

एक रात को मैंने प्रबंध किया । गानों का प्रभाव यह हुआ कि मेरा मालिक रोने लगा । मैंने घर जाते समय भी क्लेशोव का साथ दिया । रास्ते में उसने कहा, 'पेश्कोव, हम लोग होटल में खाना खाएँगे ।' हम लोग होटल में गए और जब बैठ गए तो उसने कहा,

'हमारा जीवन भी क्या है ? किसी से दिल की दो बातें नहीं की जाती । पत्नी तो केवल बच्चों की मां होती है । पत्नी का प्यार केवल तब तक रहता है जब तक बच्चा न हो ।'

उसकी बातें मेरे कानों में कई दिनों तक गूँजती रहीं । एक दिन मालिक ने कहा, 'मुझे एक साथी मिल गया है । एक स्त्री, विधवा उसका पति आस्ट्रेलिया को बन्दी बना दिया गया है । मैंने उसे अपने लिए, लगभग जानवी समझा । पर उसने कहा कि मुझे प्यार तो करती है ! लेकिन उसके पति ने उसके लिए

ही पाप किए और सजा पाई। वह अपने को उससे अलग नहीं समझती। वह नहीं चाहती कि मैं उससे अधिक मिलूँ।'

वह रुका और मैं भाँप गया कि वह शराब पिए है। वह कह रहा था, 'छः बार मैं उसके पास गया पर वह न मिली। अब तो शायद कहीं चली गई है।'

बीस

तीन वर्षों तक मैं वहाँ ओवरसियर की तरह रहा जब मैं काम करता होता तो चोरी से बढ़ई ताला आदि चोरी कर लेते मालिक को शक हुआ कि मैं भी चोरों में हूं।

मैं वहाँ से ऊब गया था। तुर्गनेव के उपन्यास मुझे अब बहुत भाते थे। मेले से लौटते समय शाम को पहाड़ी पर से खड़े होकर काफी देर तक मैं वोल्गा की छबि देखा करता।

एक बार जब मैं इसी धुन में क्रेमलिन पहाड़ी के नीचे एक पार्क की बेंच पर बैठा था तब मेरा, मामा जैक आकर बैठ गया। मैंने उसे आते न देखा था। न एकाएक देखकर पहचान ही सका। मुझे नानी से पता लग गया था कि जैक अब काम काज न करके सबों से बिना कारण ही लड़ता फिरता है। वह आज देखने में बहुत अस्वस्थ लगा। बहुत देर मैं उससे बातें न कर सका। मैं बार-बार सोच रहा था कि पूछूँ कि उसने किस प्रकार सिगान को क्रास से नीचे दबा कर मार डाला था। पर मैं पूछ न सका। मुझे पता लगा कि वह अब जेलखाने का एक सिपाही (वार्डर) बन गया है। बड़ी देर तक कैदियों की बातें होती रहीं।

जब हम लोग विदा हुए तो काफी रात बीत गई थी। मैं शहर के बाहर खेतों को पार करने लगा—आधीरात हो चुकी थी। धीरे-धीरे मैं वोल्गा के किनारे आ पहुँचा। वहीं बैठ कर मैं सोचने लगा कि कब वह समय आवेगा जब इन्सान दूसरे के लिए जीना सीखेगा।